ধনু লগ্নফল

अनुक्रमणिका

1. पुस्तक परिचय 7
2. लेखक परिचय 10
3. ज्योतिषशास्त्र की उपादेयता एवं महत्त्व 11
4. लग्न प्रशंसा 18
5. लग्न का महत्त्व 19
6. जनश्रुतियों में प्रचलित प्रत्येक लग्न की चारित्रिक विशेषताएं 20
7. लग्न किसे कहते हैं? लग्न क्या है? और लग्न का क्या महत्त्व है 22
8. धनुलग्न एक परिचय 27
9. लघु पाराशरी सिद्धान्त के अनुसार धनुलग्न का ज्योतिषीय विश्लेषण 29
10. धनुलग्न की प्रमुख विशेषताएं एक नजर में 32
11. धनुलग्न के स्वामी गुरु का वैदिक स्वरूप 34
12. धनुलग्न के स्वामी गुरु का पौराणिक स्वरूप 36
13. धनुलग्न के स्वामी गुरु की खगोलीय स्वरूप 38
14. धनुलग्न की चारित्रिक विशेषताएं 40
15. जन्माक्षर (जन्मपत्रिका) भरने के लिए विशेष चार्ट 49
16. विभिन्न नक्षत्रों का ग्रहों के साथ संबंध 53
17. नक्षत्र चरण, नक्षत्र स्वामी एवं नक्षत्र चरण स्वामी 55
18. धनुलग्न पर अंशात्मक फलादेश 61
19. धनुलग्न में आयुष्य योग 83
20. धनुलग्न और रोग 86
21. धनुलग्न में धन योग 89
22. धनुलग्न में विवाह योग 95
23. धनुलग्न में संतान योग 98
24. धनुलग्न में राज योग 101

25. धनुलग्न में सूर्य की स्थिति 104
26. धनुलग्न में चंद्रमा की स्थिति 120
27. धनुलग्न में मंगल की स्थिति 137
28. धनुलग्न में बुध की स्थिति 151
29. धनुलग्न में गुरु की स्थिति 166
30. धनुलग्न में शुक्र की स्थिति 182
31. धनुलग्न में शनि की स्थिति 195
32. धनुलग्न में राहु की स्थिति 210
33. धनुलग्न में केतु की स्थिति 223
34. गुरुवार व्रत कथा 234
35. बृहस्पति स्तोत्रम् 242
36. धनुलग्न में रत्न धारण का वैज्ञानिक विवेचन 245
37. गुरु की शांति के विविध उपाय 247
38. प्रबुद्ध पाठकों के लिए अनमोल सुझाव 250
39. दृष्टांत कुण्डलियां 254

पुस्तक परिचय

गणित एवं फलित ज्योतिषशास्त्र के दोनों ही पक्षों में **'लग्न'** का बड़ा महत्त्व है। ज्योतिष में लग्न को **'वीर्य'** एवं बीज कहा गया है। इसी पर फलित ज्योतिष का सारा भवन, विशाल वटवृक्ष खड़ा है। ज्योतिष में गणित की समस्या तो कम्प्यूटर ने समाप्त कर दी परन्तु फलादेश की विकटता ज्यों की त्यों मौजूद है। बिना सही फलादेश के ज्योतिष की स्थिति निर्गन्ध पुष्प के समान है। कई बाद विद्वान् व्यक्ति भी, व्यावसायिक पण्डित भी, जन्मकुण्डली पर शास्त्रीय फलादेश करने से घबराते है, कतराते हैं। अतः इस कमी को दूर करने के लिए प्रस्तुत पुस्तकों का लेखन प्रत्येक लग्न के हिसाब से अलग-अलग पुस्तकें लिख कर किया जा रहा है। ताकि फलित ज्योतिष क्षेत्र में एक नया मार्ग प्रशस्त हो सके।

इस पुस्तक को लिखने का प्रयोजन फलादेश की दुनिया में एक बृहद् शोध कार्य है। प्रत्येक लग्न में एक-एक ग्रह को भिन्न-भिन्न भावों में घुमाया गया है। यह अकेले ग्रह के भिन्न-भिन्न भावों में घूमने से, विभिन्न प्रकार के योगों की सृष्टि होती है। जिसकी प्रमाणिक चर्चा पहली बार आप इस पुस्तक में देख पायेंगे। लग्न बारह हैं, ग्रह नौ हैं, फलतः 12 × 9 = 108 प्रकार की ग्रह-स्थितियां एक लग्न में बनीं। बारह लग्नों में 108 × 12 = 1296 प्रकार की ग्रह-स्थितियां बनीं। प्रत्येक ग्रहों की दृष्टियों को तीर द्वारा चित्रित कर, उनके फलादेशों पर भी व्यापक प्रकाश इन पुस्तकों में डाला गया है। निश्चय ही यह बृहद् स्तरीय शोधकार्य है। जिसका ज्योतिष की दुनिया में नितान्त अभाव था।

एक और बड़ा कार्य जो ज्योतिष की दुनिया में आज दिन तक नहीं हुआ वह है—**'संयुक्त दो ग्रहों की युति पर फलादेश।'** वैसे तो साधारण वाक्य दो ग्रह, तीन ग्रह, चतुष्ग्रह, पंचग्रह युति पर मिलते हैं पर ये युतियां कौन-सी राशि में हैं? किस लग्न में हैं? और कहां? किस भाव (घर) में हैं? इस पर कोई विचार कहीं भी नहीं किया गया!!! फलतः ज्योतिष का फलादेश कच्चा-का-कच्चा ही रह गया। इस

पुस्तक की सबसे प्रमुख यह विशेषता है कि प्रत्येक लग्न में चलायमान ग्रह की अन्य दूसरे ग्रह से युति होने पर, उसका भी विचार किया गया है। इस प्रकार से 108 ग्रह स्थितियों को पुनः नौ ग्रहों की भिन्न-भिन्न युति से जोड़ा जाये तो एक लग्न में 972 प्रकार की द्वि-ग्रह स्थितियां बनेंगी तथा बारह लग्नों में कुल 972 × 12 = 11664 प्रकार की द्वि-ग्रह युतियां बनेंगी। **ग्यारह हजार छः सौ चौसठ प्रकार की द्वि-ग्रह युतियों पर फलादेश, ज्योतिष की दुनिया में पहली बार लिखा गया है। इसलिए फलादेश की दुनिया में ये पुस्तकें मील का पत्थर साबित होंगी। यही कारण है। इन किताबों का जोरदार स्वागत सर्वत्र हो रहा है।**

एक छोटा-सा उदाहरण हम **'गजकेसरी योग'**, **'बुधादित्य योग'** अथवा **'चंद्रमंगल लक्ष्मी योग'** का ले सकते हैं। क्या गुरु+चन्द्र की युति से बना 'गजकेसरी योग' सदैव एक सा ही फल देगा? ज्योतिष की संख्यात्मक गणित एवं फलित से जुड़ी दोनों ही विधियां इसका नकारात्मक उत्तर देंगी!!! 'गजकेसरी योग' का फल किसी भी हालत में सदैव एक सा नहीं होगा? 'गजकेसरी योग' की बारह लग्नों में बारह प्रकार की स्थितियां, अर्थात् कुल 144 प्रकार की स्थितियां बनेंगी। अकेला 'गजकेसरी योग' 144 प्रकार का होगा और सबके फलादेश भी अलग-अलग प्रकार के होंगे। 'गजकेसरी योग' की सर्वोत्तम स्थिति **'मीनलग्न'** या **'कर्कलग्न'** के प्रथम स्थान में होती है। इसकी निकृष्टतम स्थिति **'तुलालग्न'**, 'मकर' या **'कुम्भलग्न'** में देखी जा सकती है। यदि मकरलग्न में 'गजकेसरी योग' छठे स्थान या आठवें स्थान में है तो जातक की पत्नी दूसरों के साथ भाग जायेगी। जातक का पराक्रम भंग होगा क्योंकि पराक्रमेश व खर्चेश होकर गुरु छठे, आठवें एवं सप्तमेश होकर चंद्रमा छठे-आठवें होने से गृहस्थ सुख भंग हो जायेगा। अतः यदि प्रबुद्ध पाठक ने फलादेश के इस सूक्ष्म भेद को नहीं जाना तो मुझे खेद है कि फलादेश की सत्यता, सार्थकता व उपादेयता को नहीं पहचाना। मैंने पराशर लाईट प्रोग्राम (ज्योतिष साफ्टवेयर) में इसी प्रकार के सभी योगों का समावेश किया है। जिसका अब तक ज्योतिष की दुनिया में नितान्त अभाव था।

'मेषलग्न' एवं **'कर्कलग्न'** की पुस्तकें अक्टूबर में, तथा **'वृषलग्न'** एवं **'तुलालग्न'** नवम्बर 2003 में प्रकाशित होकर सर्वत्र वितरित हो चुकी हैं। जिसका ज्योतिष की दुनिया में जोरदार स्वागत हुआ। अब यह **'धनुलग्न'** की पुस्तक को पाठकों के हाथों में सौंपते हुए अत्यन्त हर्ष का अनुभव हो रहा है। धनुलग्न में स्वामी विवेकानन्द, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, दलाईलामा, बेनजीर भुट्टो, किसान नेता अजीत सिंह, पूर्व चुनाव आयुक्त टी.एन. शेषन, महर्षि महेश योगी, रोम सम्राट नीरो, पूर्व

राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद, महारानी एलिजाबेथ, डॉ. केशवराव बलिराम हेडगवार, धीरूभाई अम्बानी, श्री रतन टाटा, अभिनेत्री रेखा, माधुरी दीक्षित जैसे व्यक्तित्व इस लग्न में हुए। धनुलग्न की इस हिन्दी पुस्तक का अंग्रेजी व गुजराती संस्करण भी शीघ्र प्रकाशित होगा। धनुलग्न की स्त्री जातक पर हम अलग से पुस्तक लिखकर अलग प्रकार के फलादेश देने का प्रयास कर रहे हैं।

इस पुस्तक की सबसे बड़ी विशेषता अंशात्मक फलादेश है। लग्न की Zero Degree से लेकर तीस (30) अंशों तक के भिन्न-भिन्न फलादेश की नई तकनीक का प्रयोग विश्व में पहली बार हुआ है। यह प्रयोग 18 विभिन्न आयामों में प्रस्तुत किया गया है। जरूरी नहीं है कि यह फलादेश सत्य हो फिर भी हमने शास्त्रीय धरातल के आधार पर कुछ नया करने का एक विनम्र प्रयास किया है। जिस पर अविरल अनुसंधान की आवश्यकता है।

इस प्रकार के प्रयास से आम आदमी अपनी जन्मपत्री स्वयं पढ़कर एवं अपने इष्ट मित्रों की जन्मकुण्डली पर शास्त्रीय फलादेश कर सकता है। प्रत्येक दिन-रात में आकाश में बारह लग्नों का उदय होता है। एक लग्न लगभग दो घंटे का होता है। जन्म लग्न (जन्म समय) को लेकर जन्मपत्रिका के शास्त्रीय फलादेश को जानने व समझने की दिशा में उठाया गया, यह पहला कदम है। आशा है, ज्योतिष की दुनिया में इसका जोरदार स्वागत होगा। प्रबुद्ध पाठकों के लगातार आग्रह पर गणित व फलित ज्योतिष पर एक सारगर्भित सॉफ्टवेयर का प्रोग्राम **'सृष्टि'** के नाम से भी बना रहे हैं जो अब तक के प्रचारित सभी सॉफ्टवेयर में अनुपम व अद्वितीय होगा। यदि प्रबुद्ध पाठकों का स्नेह अविरल सम्बल इसी प्रकार मिलता रहा, तो शीघ्र ही फलित ज्योतिष में नई क्रान्ति इस सॉफ्टवेयर के माध्यम से सम्पूर्ण संसार में आयेगी। पुस्तक के अन्त में दी गई **'दृष्टान्त लग्न कुण्डलियों'** से इस पुस्तक का व्यावहारिक महत्त्व कई गुना बढ़ गया है। यह एक अकाट्य सत्य है कि अपने जन्म लग्न पर फलादेश करने में प्रत्येक ज्योतिष प्रेमी 'मास्टर' होता है। आपने इस पुस्तक के माध्यम से क्या पाया और आपके अनुभव के खजाने में और क्या अवशेष ज्ञान बचा है? इसको पुस्तक के अन्तिम दो खाली पृष्ठों में लिखें। अनुभवों को लिपिबद्ध करें और हमें भी अपने अनुभवों से परिचित कराएं। हमें आपके पत्रों की प्रतीक्षा रहेगी परन्तु टिकट लगा, पता टाइप किया हुआ, जवाबी लिफाफा, पत्रोत्तर पाने की दिशा में आपका पहला सार्थक कदम होगा।

डॉ. भोजराज द्विवेदी

4.12.2003

लेखक परिचय

अंतराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वास्तुशास्त्री एवं ज्योतिषाचार्य डॉ. भोजराज द्विवेदी कालजयी समय के अनमोल हस्ताक्षर हैं। इन्टरनेशनल वास्तु एसोसिएशन के संस्थापक डॉ. भोजराज द्विवेदी की यशस्वी लेखनी से रचित ज्योतिष, वास्तुशास्त्र, हस्तरेखा, अंकविद्या, आकृति विज्ञान, यंत्र-तंत्र-मंत्र विज्ञान, कर्मकाण्ड व पौरोहित्य पर लगभग 258 से अधिक पुस्तकें देश-विदेश की अनेक भाषाओं में पढ़ी जाती हैं। फलित ज्योतिष के क्षेत्र में अज्ञातदर्शन (पाक्षिक) एवं श्रीचण्डमार्तण्ड (वार्षिक) के माध्यम से इनकी 3000 से अधिक राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्व की भविष्यवाणियां पूर्व प्रकाशित होकर समय चक्र के साथ-साथ चलकर सत्य प्रमाणित हो चुकी हैं।

4 सितम्बर 1949 को **"कर्कलग्न"** के अन्तर्गत जन्मे डॉ. भोजराज द्विवेदी सन् 1977 से अज्ञातदर्शन (पाक्षिक) एवं श्रीचण्डमार्तण्ड (वार्षिक) का नियमित प्रकाशन व सम्पादन 26 वर्षों से करते चले आ रहे हैं। डॉ. द्विवेदी को अनेक स्वर्ण पदक व सैकड़ों मानद उपाधियां विभिन्न नागरिक अभिनंदनों एवं राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों के माध्यम से प्राप्त हो चुकी हैं। इनकी संस्था के अन्तर्गत भारतीय प्राच्य विद्याओं पर अनेकों अन्तर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय सम्मेलन देश-विदेशों में हो चुके हैं तथा इनके द्वारा ज्योतिषशास्त्र, वास्तुशास्त्र, तंत्र-मंत्र, पौरोहित्य पर अनेक पाठ्यक्रम भी पत्राचार द्वारा चलाए जा रहे हैं। जिनकी शाखाएं देश-विदेश में फैल चुकी हैं तथा इनके द्वारा दीक्षित व शिक्षित हजारों शिष्य इन दिव्य विद्याओं का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं। भारतीय प्राच्य विद्याओं के उत्थान में समर्पित भाव से जो काम डॉ. द्विवेदी कर रहे हैं, वह एक साधारण व्यक्ति द्वारा सम्भव नहीं है वे इक्कीसवीं शताब्दी के तंत्र-मंत्र, वास्तुशास्त्र व ज्योतिष जगत् के तेजस्वी सूर्य हैं तथा कालजयी समय के अनमोल हस्ताक्षर हैं, जो कि *'युग पुरुष'* के रूप में याद किए जाएंगे। इनसे जुड़ना इनकी संस्था का सदस्य बनना आम लोगों के लिए बहुत बड़े गौरव व सम्मान की बात है।

अध्यक्ष, इन्टरनेशनल वास्तु ऐसोसिएशन
130 'ए' रोड, अज्ञातदर्शन काम्पलेक्स, मरुदीप अपार्टमेन्ट, जोधपुर (राज.)
दूरभाष-0291-2637759, मोबाईल-0291-3129105

ज्योतिष शास्त्र की उपादेयता एवं महत्त्व

नारदीयम् में सिद्धांत, संहिता व होरा इन तीन भागों में विभाजित ज्योतिष शास्त्र को वेदभगवान् का निर्मल (पवित्र) नेत्र कहा गया है।[1] पाणिनि काल से ही ज्योतिष की गणना वेद के प्रमुख छः अंगो में की जाने लगी थी।[2]

'वेदांग ज्योतिष' नामक बहुचर्चित व प्राचीन ग्रंथ हमें प्राप्त होता है जिसके रचनाकार ने ज्योतिष को काल विधायक शास्त्र बतलाया है, साथ में कहा है कि जो ज्योतिष शास्त्र को जानता है वह यज्ञ को भी जानता है।[3] छः वेदांगों में से ज्योतिष मयूर की शिखा व नाग की मणि के समान महत्त्व को धारण किए हुए वेदांगों में मूर्धन्य स्थान को प्राप्त है।[4]

कालज्ञान की महत्ता को स्वीकार करते हुए कालज्ञ, त्रिकालज्ञ, त्रिकालविद, त्रिकालदर्शी व सर्वज्ञ शब्दों का प्रयोग ज्योतिषी के लिए किया गया है।[5] स्वयं सायणाचार्य ने **'ऋग्वेदभाष्यभूमिका'** में लिखा है कि ज्योतिष का मुख्य प्रयोजन अनुष्ठेय यज्ञ के उचित काल का संशोधन है।[6] उदाहरणार्थ ''कृतिका नक्षत्र' में अग्नि का आधान करें।[7] कृतिका नक्षत्र में अग्नि का आधान ज्योतिष संबंधी ज्ञान के बिना संभव नहीं। इसी प्रकार से एकाष्टका में दीक्षा को प्राप्त होवे, फाल्गुण पौर्णमास में दीक्षित होवे[8] इत्यादि अनेक श्रुति वचन मिलते हैं।

1. सिद्धांत संहिता होरा रूप स्कन्ध त्रयात्मकम्।
   वेदस्य निर्मलं चक्षुर्ज्योतिः शास्त्रमकल्मषम्।। इति नारदीयम् (शब्दकल्पद्रुम) पृ. 550
2. छंदः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते।
   ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तः श्रोत्रमुच्यते।।- पाणिनी शिक्षा, श्लोक/41
   मुहूर्त चिन्तामणि मोतीलाल बनारसीदास वाराणसी सन् 1972 (पृ. 7)
3. तस्मादिदं कालविधान शास्त्रं, यो ज्योतिषं वेद स वेद यज्ञम् -फ. ज्यो. वि. वृ. समीक्षा, पृ. 4
4. यथा शिखा मयूराणां नागानां मणयो यथा तद्वद्वेदांगशास्त्राणां ज्योतिषं मूर्धनि संस्थितम्
   –इति वेदांग ज्योतिषम् 'शब्दकल्पद्रुम' (पृ. 550)
5. शब्द कल्पद्रुम, पृ. 655
6. वेद व्रतमीमांसक ''ज्योतिषविवेक (पृ. 4) गुरुकुल सिंहपुरा, रोहतक सन् 1976
7. कृतिकास्वग्निमाधीत–तैत्तरीय ब्राह्मण 1/1/2/1
8. एकाष्टकामां दीक्षेरन् फाल्गुनीपूर्णमासे दीक्षेरन्–तैत्तरीय संहिता 6/4/8/1

ज्योतिष के सम्यक् ज्ञान के बिना इन श्रुति वाक्यों का समुचित पालन नहीं किया जा सकता अत: वेद के अध्ययन के साथ-साथ ज्योतिष को वेदांग बतलाकर ऋषियों ने ज्योतिष शास्त्र के अध्ययन पर पर्याप्त बल दिया।

ज्योतिष के ज्ञान की सबसे अधिक आवश्यकता कृषकों को पड़ती है क्योंकि वह जानना चाहता है कि पानी कब बरसेगा, खेतों में बीज कब बोना चाहिए? जमाना कैसा जाएगा? फसलें कैसी होंगी। वगैरा-वगैरा। हिन्दू षोडश-संस्कार एवं यज्ञ-हवन, निश्चित काल, मुहूर्त में ही किए जाते हैं। श्रुति कहती है।

ते असुरा अयज्ञा अदक्षिणा अनक्षत्रा:।
यच्च किंचत् कुर्वत सतां कृत्यामेवाऽकुर्वत॥ 1 ॥[1]

अर्थात् वे यज्ञ जो करणीय हैं, वे कालानुसार (निश्चित मुहूर्त पर) न करने से देव रहित, दक्षिणा रहित, नक्षत्र रहित हो जाते हैं।

ज्योतिष से अत्यन्त स्वार्थिक अर्थ में अच् (अ) प्रत्यय-लगकर ज्योतिष शब्द निष्पन्न हुआ है। अच् प्रत्यय लगने से यह ज्योतिष शब्द पुल्लिंग में प्रयुक्त होता है।

द्युत् + इस् (इसिन्)
ज्युत + इस =ज्योत् + इस्
ज्योतिस्

मेदिनी कोष के अनुसार "ज्योतिष" सकारान्त नपुंसक लिंग में 'नक्षत्र' अर्थ में तथा पुल्लिंग में अग्नि और प्रकाश अर्थ में प्रयुक्त होता है।[2]

'ज्योतस्' में 'इनि' और 'ठक्' प्रत्यय लगा कर ज्योतिषी और ज्योतिषिक: तीन शब्द व्युत्पन्न होते हैं। जो ज्योतिष शास्त्र का नियमित रूप से अध्ययन करे अथवा ज्योतिष शास्त्र का ज्ञाता हो वह ज्योतिषी, ज्योतिषिक, ज्यौतिषिक, ज्योतिष शास्त्रज्ञ तथा दैवज्ञ कहलाता है।[3]

शब्दकल्पद्रुम के अनुसार 'ज्योतिष' ज्योतिर्मय सूर्यादि ग्रहों की गति इत्यादि को लेकर लिखा गया वेदांग शास्त्र विशेष है। अमरकोष की टीका में व्याकरणाचार्य भरत ने ग्रहों की गणना, ग्रहण इत्यादि प्रतिपाद्य विषयों वाले शास्त्र को ज्योतिष कहा है।[4]

---

1. फलित ज्योतिष विवेचनात्मक बृहत्पाराशर समीक्षा पृ. 4
2. ज्योतिषग्नौ दिवाकरे 'पुमान्नपुसंक-दृष्टौ स्यान्नक्षत्र प्रकाशयो: इति मेदिनीकोष-1929, पृ. सं. 536
3. हलायुध कोश हिन्दी समिति लखनऊ सन् 1967 (पृ. सं. 321)
4. शब्द कल्पद्रुम खण्ड-2 मोतीलाल बनारसीदास सन् 1961 पृ. स. 550

हलायुधकोष में ज्योतिष के लिए सांवत्सर, गणक, दैवज्ञ, ज्योतिषिक, ज्यौतिषिक ज्योतिषी, ज्यौतिषी, मौहूर्तिक सांवत्सरिक शब्दों का प्रयोग हुआ है।[1]

वाचस्पत्यम् के अनुसार सूर्यादि ग्रहों की गति को जानने वाले तथा ज्योतिषशास्त्र का विधिपूर्वक अध्ययन करने वाले व्यक्ति को 'ज्योतिर्विद्' कहा गया है।[2]

ज्योतिष की प्राचीनता

ज्योतिष शास्त्र कितना प्राचीन है, इसकी कोई निश्चित तिथि या सीमा स्थापित नहीं की जा सकती। यह बात निश्चित है कि जितना प्राचीन वेद है उतना ही प्राचीन ज्योतिषशास्त्र है। यद्यपि वेद कोई ज्योतिष की पुस्तक नहीं है तथापि ज्योतिष-सम्बन्धी अनेक गूढ़ तथ्यों व गणनाओं के बारे में विद्वानों में मत ऐक्यता का नितान्त अभाव है।

तारों का उदय-अस्त प्राचीन (वैदिक) काल में भी देखा जाता था। तैत्तिरीय ब्राह्मण एवं शतपथ ब्राह्मण में ऐसे अनेक संकेत व सूचनाएं मिलती हैं। लोकमान्य तिलक ने अपनी पुस्तक **'ओरायन'** के पृष्ठ 18 पर ऋग्वेद का काल ईसा पूर्व 4500 हजार वर्ष बताया है।[3] वहीं पं. रघुनन्दन शर्मा ने अपनी पुस्तक **'वैदिक-सम्पत्ति'** में मृगशिरा में हुए इसी वसन्तसम्पात को लेकर, तिलक महोदय की त्रुटियों का आकलन करते हुए अकाट्य तर्क के साथ प्रमाणपूर्वक कहा है कि ऋग्वेद काल ईसा से कम से कम 22,000 वर्ष प्राचीन है।[4]

भारतीय ज्योतिर्गणित एवं वेध-सिद्धांतों का क्रमबद्ध सबसे प्राचीन एवं प्रमाणिक परिचय हमे **'वेदांग ज्योतिष'** नामक ग्रन्थ में मिलता है।[6] यह ग्रन्थ सम्भवतः ईसा पूर्व 1200 का है। तब से लेकर अब तक ज्योतिषशास्त्र की अक्षुण्णता कायम है।[5]

वस्तुतः फिर वे यज्ञ ही नहीं कहलाते। इसलिए जो कुछ भी यज्ञादि (धार्मिक)

---

1. हलायुध कोश, हिन्दी समिति लखनऊ 1966 पृ. सं. 703
2. वाचस्पत्यम् भाग 4, चौखम्बा सीरिज वाराणसी सन् 1962 पृ. 3162
3. भारतीय ज्योतिष का इतिहास, डॉ. गोरखप्रसाद (प्रकाशन 1974) उत्तरप्रदेश शासन लखनऊ, पृ. 10
4. वैदिक सम्पति पं. रघुनन्दन शर्मा (प्रकाशन 1930) सेठ शूरजी वल्लभ प्रकाशन, कच्छ कैसल, बम्बई पृ. 90
5. **छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोथ पठ्यते, ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते।**
   शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम्, तस्मात्सांगमधीत्यैव, ब्रह्म लोके महीयते॥—पाणिनीय शिक्षा, श्लोक 41-42
7. Vedic Chronology and Veoanga Jyotisa &(Pub. 1925) Messrs Tilak Bross, Gaikwar Wada, POONA CITY, page-3

कृत्य करना हो, उसे निर्दिष्ट कालानुसार ही करना चाहिए। कहा भी है–यो ज्योतिषं

अतीतानागते काले, दानहोमजपादिकम्।
उषरे वापितं बीजं, तद्वद्भवति निष्फलम् ॥2॥[2]

इस प्रकार से यह सिद्ध है कि ज्योतिष के बिना कालज्ञान का अभाव रहता है। कालज्ञान के बिना समस्त श्रौत, स्मार्त कर्म, गर्भाधान, जातकर्म, यज्ञोपवीत, विवाह इत्यादि संस्कार ऊसर जमीन में बोए गए बीज की भांति निष्फल हो जाते हैं। तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण के ज्ञान के बिना तालाब, कुंआ, बगीचा, देवालय-मन्दिर, श्राद्ध, पितृकर्म, व्रत-अनुष्ठान, व्यापार, गृहप्रवेश, प्रतिष्ठा इत्यादि कार्य नहीं हो सकते। अतः सभी वैदिक एवं लौकिक व्यवहारों की सार्थकता, सफलता के लिए ज्योतिष का ज्ञान अनिवार्य है।

अप्रत्यक्षाणि शास्त्राणि, विवादस्तेषु केवलम्।
प्रत्यक्षं ज्योतिषं शास्त्रं, चंद्रार्कौ यत्र साक्षिणौ ॥3॥[3]

संसार में जितने भी शास्त्र हैं वे केवल विवाद (शास्त्रार्थ) के विषय हैं, अप्रत्यक्ष हैं, परन्तु ज्योतिष विज्ञान ही प्रत्यक्ष शास्त्र है, जिसकी साक्षी सूर्य और चंद्रमा घूम घूम कर दे रहे हैं। सूर्य, चंद्र ग्रहण, प्रत्येक दिन का सूर्योदय, सूर्यास्त चंद्रोदय, चंद्रास्त, ग्रहों की शृंगोन्नति, वेध, गति, उदय-अस्त इस शास्त्र की सत्यता एवं सार्थकता के प्रत्यक्ष प्रमाण हैं।

ज्योतिश्चक्रे तु लोकस्य, सर्वस्योक्तं शुभाशुभम्।
ज्योतिर्ज्ञानं तु यो वेद, स याति परमां गतिम्॥4॥[4]

ज्योतिष चक्र ने संसार के लिए शुभ व अशुभ सारे काल बतलाए हैं। जो ज्योतिष के दिव्य ज्ञान को जानता है व जन्म-मरण से मुक्त होकर परमगति (स्वर्गलोक) को प्राप्त करता है। संसार में ज्ञान विज्ञान की जितनी भी विधाएं हैं, वह मनुष्य को ईश्वर की ओर नहीं मोड़ती, उसे परमगति का आश्वासन नहीं देती, पर ज्योतिष अपने अध्येता को परमगति (मोक्ष) प्राप्ति की गारन्टी देता है। यह क्या कम महत्त्व की बात है।

---

1. ज्योतिर्निबन्ध–श्री शिवराज, (पृ. 1919), आनन्दाश्रम मुद्रणालय पूना, पृष्ठ1
2. ज्योतिर्निबन्ध श्लोक (2) पृष्ठ 2
3. जातकसार दीप–चंद्रशेखरन् (पृष्ठ 5) मद्रास गवर्मेंट ओरियण्टल सीरिज, मद्रास
4. शब्दकल्पद्रुम, द्वितीय खण्ड, पृष्ठ 550

अर्थार्जने सहाय: पुरुषाणामापदर्णवे पोत:।
यात्रा समये मन्त्री जातकमपहाय नास्त्यपर:॥5॥[1]

ज्योतिष एक ऐसा दिलचस्प विज्ञान है जो कि जीवन की अनजान राहों में मित्र व शुभचिन्तकों की लम्बी शृंखला खड़ी कर देता है। इसके अध्येता को समाज व राष्ट्र में भारी धन, यश व प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है।

जातक का ज्योतिषशास्त्र को छोड़कर मनुष्य का कोई सच्चा मित्र नहीं है क्योंकि द्रव्योपार्जन में यह सहायता देता है, आपत्ति रूपी समुद्र में नौका का कार्य करता है तथा यात्रा काल में सुहृदय मित्र की तरह सही सम्मति देता है। जनसम्पर्क बनाता है। स्वयं वराहमिहिर कहते हैं कि देशकाल परिस्थिति को जानने वाला दैवज्ञ जो काम करता है, वह हजार हाथी और चार हजार घोड़े भी नहीं कर सकते।[2] यदि ज्योतिष न हो तो मुहूर्त, तिथि, नक्षत्र, ऋतु, अयन आदि सब विषय उलट-पलट हो जाएं।[3] बृहत्संहिता की भूमिका में ही वराहमिहिर कहते हैं कि **दीपहीन रात्रि और सूर्यहीन आकाश की तरह ज्योतिषी से हीन राजा शोभित नहीं होता, वह जीवन के दुर्गम मार्ग में अंधे की तरह भटकता रहता है।**[4] **अत: जय, यश, श्री, भोग और मंगल की इच्छा रखने वाले राजपुरुष को सदैव विद्वान व श्रेष्ठ ज्योतिषी का अपने पास रखना चाहिए।**[5]

ज्योतिषशास्त्र के साथ एक विडम्बना यह है कि यह शास्त्र जितना अधिक प्रचलित व प्रसिद्ध होता चला गया, अनधिकारी लोगों की संगत से यह शास्त्र उतना ही अधिक विवादास्पद होता चला गया। अनेक नास्तिकों, अनीश्वरवादी सज्जनों एवं कुतर्की विद्वानों ने अपने-अपने ढंग से ज्योतिष विद्या पर क्रूरतम कठोर प्रहार किए। सत्य की निरन्तर खोज में एवं अनवरत अनुसंधान परीक्षणों में संलग्न भारतीय ऋषियों ने अपने आपको तिल तिल जलाकर, अपने प्राणों की आहुति देकर श्रुति परम्परा से इस दिव्य विद्या को जीवित रखा।

ज्योतिष वस्तुत: सूचनाओं और सम्भावनाओं का शास्त्र है। इसके उपयोग व महत्त्व को सही ढंग से समझने पर मानव जीवन और अधिक सफल व सार्थक हो

---

1. सुगम ज्योतिष-पं. देवीदत्त जोशी (प्रकाशन-1992) मोतीलाल बनारसीदास दिल्ली, पृष्ठ 17
2. बृहत्संहिता सांवत्सर सूत्राध्याय 1/37
3. बृहत्संहिता सांवत्सर सूत्राध्याय 1/25
4. अप्रदीपा यथा रात्रिरनादित्यं यथा नभ:।
   तथाऽसांवत्सरो राजा, भ्रमत्यन्ध इवाध्वनि॥-बृहत्संहिता, अ.1/24
5. बृहत्संहिता सांवत्सर सूत्राध्याय 1/26

सकता है। मान लीजिए ज्योतिष गणना के अनुसार अष्टमी की शाम को आठ बजे समुद्र में ज्वारभाटा आएगा। आपको पता चला तो आप अपना जहाज समुद्र में नहीं उतारेंगे और करोड़ों रुपयों के जान व माल के नुकसान् से बच जाएंगे। यदि आपको पता नहीं है, तो बीच रास्ते में आप मारे जाएंगे। ज्योतिषी कहता है कि आज अमुक योग के कारण वर्षा होगी तो वर्षा तो होगी पर आपको पता है तो आप छाता तान कर चलेंगे, दुनिया अचानक वर्षा के कारण तकलीफ में आ सकती है पर आपकी सावधानी से आप भीगेंगे नहीं।

ज्योतिष का उपयोग मनुष्य के दैनिक जीवन व दिनचर्या से जुड़ा हुआ है। मारक योग में ऑपरेशन या तेज गति का वाहन न चलाकर व्यक्ति दुर्घटना से बच सकता है। ज्योतिष अंधेरे में प्रकाश की तरह मनुष्य की सहायता करता है। ज्योतिष संकेत देता है कि समय खराब है सोने में हाथ डालेंगे, मिट्टी हो जाएगा, समय शुभ है तो मिट्टी में हाथ डालोगे, सोना हो जाएगी। मौसम विज्ञान की चेतावनी की तरह ज्योतिष का उपयोग किया जाना चाहिए क्योंकि घड़ी की सुई के साथ-साथ चल रहा मानव जीवन का प्रत्येक पल ज्योतिष से जुड़ा हुआ है। यह तो मानव मस्तिष्क एवं बुद्धि की विलक्षणता है कि आप किस विज्ञान से क्या व कितना ग्रहण कर पाते हैं।

सच तो यह है कठिनाई के क्षणों में ज्योतिष विद्या मानवीय सभ्यता के लिए अमृत-तुल्य उपादेय है। घोर कठिनाई के क्षणों में, विपत्ति की घड़ियों में, या ऐसे समय में जब व्यक्ति के पुरुषार्थ एवं भौतिक संसाधनों का जोर नहीं चलता, तब व्यक्ति सीधा मन्दिर-मस्जिद या गिरजाघरों में, या फिर सीधा किसी ज्योतिषी की शरण में जाकर अपने दुःख दर्द की फरियाद करता है, प्रार्थनाएं करता है। मन्दिर-मस्जिद और गिरजाघरों में पड़े निर्जीव पत्थर तो नहीं बोलते, पर ईश्वर की वाणी ज्योतिषी के मुखारविन्द से प्रस्फुटित होती है। ऐसे में इष्ट सिद्ध ज्योतिषी की जिम्मेदारी और अधिक बढ़ जाती है। भारत में विद्वान ज्योतिषी हो और ब्राह्मण हो तो लोग उसे ईश्वर तुल्य सम्मान देते हैं। भविष्य वक्ता होना अलग बात है तथा ज्योतिषी होना दूसरी बात है। भारत में भविष्य वक्ता को उतना सम्मान नहीं मिलता, जितना शास्त्र ज्ञाता ज्योतिषशास्त्र के अध्येता को। स्वयं वराहमिहिर ने कहा है–

म्लेच्छा हि यवनास्तेषु, सम्यक् शास्त्रमिदं स्थितम्।
ऋषिवत्तेऽपि पूज्यन्ते, किं पुनर्दैवविद् द्विजः॥1॥[1]

अर्थात् व्यक्ति कितना भी पतित हो, शूद्र-म्लेच्छ चाहे यवन ही क्यों न हो इस ज्योतिषशास्त्र के सम्यक् (भली-भांति) अध्ययन से वह ऋषि के समान पूजनीय हो

---

1. बृहत्संहिता सांवत्सर सूत्राध्याय 1/30

जाता है। इस दिव्य-ज्ञान के गंगा स्नान से व्यक्ति पवित्र व पूजनीय हो जाता है। फिर उस ब्राह्मण की क्या बात? जो ब्राह्मण भी हो, दैवज्ञ भी हो, इस दिव्य विद्या को भी जानता हो, उसकी तो अग्रपूजा निश्चय ही होती है।

इस श्लोक में 'सम्यक्' शब्द पर विशेष जोर दिया गया है। सम्यक् ज्ञान गुरु कृपा से ही आता है। पुस्तक के माध्यम से आप गुरु के विचारों के समीप तो जरूर पहुंचते हैं पर अन्ततोगत्वा वह किताबी ज्ञान ही कहलाता है। भारतीय वाङ्मय में गुरु का बड़ा महत्त्व है। अत: ज्योतिष जैसी गूढ़ विद्या गुरुमुख से ही ग्रहण करनी चाहिए तभी उसमें सिद्धहस्तता प्राप्त होती है।

कई लोग ज्योतिष को भाग्यवाद या जड़वाद से जोड़ने की कुचेष्टा भी करते हैं परन्तु अब सिद्ध हो चुका है कि ज्योतिष पुरुषार्थवाद की युक्ति संगत व्याख्या है। पुरुषार्थवाद की सीमाओं को ठीक से समझना ही ज्योतिर्विज्ञान की उपादेयता है। ज्योतिर्विज्ञान पुरुषार्थ का शत्रु नहीं, यह व्यक्ति को पुरुषार्थ करने से रोकता भी नहीं, अपितु सही समय (काल) में सही पुरुषार्थ करने की प्रेरणा देता है।[1]

'ज्योतिष विद्या वह दिव्य विज्ञान है जो भूत, भविष्य तथा वर्तमान तीनों कालों को जानने समझने की कला को सिखलाता है। प्रकृति के गूढ़ रहस्यों को उद्घाटित करता है तथा इस देवविद्या के माध्यम से हम मानवीय प्राणी के शुभाशुभ भविष्य को संवारने की क्षमता भी प्राप्त कर सकते हैं।'

अत: इस शास्त्र की उपादेयता एवं महत्त्व गूंगे के गुड़ की तरह से मिठास परिपूर्ण परन्तु शब्दों से अनिर्वचनीय है। वेदव्यास अपनी वाणी से ज्योतिषशास्त्र का महत्त्व प्रकट करते हुए कहते हैं कि काष्ठ (लकड़ी) का बना सिंह एवं कागज पर सम्राट का चित्र आकर्षक होते हुए भी निर्जीव होता है। ठीक उसी प्रकार से वेदों का अध्ययन कर लेने पर भी ज्योतिषशास्त्र का अध्ययन किए बिना ब्राह्मण निष्प्राण कहलाता है।[2]

❑❑❑

---

1. वक्री ग्रह–(प्रकाशन-1991) डायमंड प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ 140
2. यथा काष्ठमय: सिंहो यथा चित्रमयो नृप:।
   तथा वेदमधीतोऽपि ज्योतिशास्त्रं विना द्विज:॥–वेद व्यास, ज्योतिर्निबन्ध; 20/पृ.2

लग्न प्रशंसा

लग्नं देवः प्रभुः स्वामी, लग्नं ज्योतिः परं मतम्।
लग्नं दीपो महान् लोके, लग्नं तत्वं दिशन् गुरुः॥

त्रैलोक्यप्रकाश में बताया है कि लग्न ही देवता है। लग्न ही समर्थ स्वामी, परमज्योति है। लग्न से बड़ा दीपक संसार में कोई नहीं है, क्योंकि गुरु रूप ज्योतिष के ऋषियों का यही आदेश है।

न तिथिर्न च नक्षत्रं, न योगो नैन्दवं बलम्।
लग्नमेव प्रशंसन्ति, गर्गनारदकश्यपाः॥5॥

आचार्य लल्ल ने बताया है कि गर्ग, नारद, कश्यप ऋषियों ने तिथि-नक्षत्र व चंद्र बल को श्रेष्ठ न मानकर, केवल लग्न बल की ही प्रशंसा की है॥5॥

इन्दुः सर्वत्र बीजानभ्भो, लग्नं च कुसुमप्रभम्।
फलेन सदृशो अंशश्च भावाः स्वादुफलं स्मृतम्॥7॥

भुवन दीपक नामक ग्रंथ में बताया है कि समस्त कार्यों में चंद्रमा बीज सदृश है। लग्न पुष्प के समान, नवमांश फल के तुल्य और द्वादश भाव स्वाद के समान होता है।



लग्न का महत्त्व

यथा तनुत्पादनमन्तरैव पराङ्ग सम्पादनपत्र मिथ्या॥
विना विलग्नं परभावसिद्धिस्ततः प्रवक्ष्ये हि विलग्नसिद्धिम्॥

जिस प्रकार स्वयं के शरीर की उपेक्षा करके अन्य पराए अंगों (दूसरे लोगों पर) पर ध्यान देना दोषपूर्ण है (उचित नहीं है) ठीक उसी प्रकार से लग्न भाव की प्रधानता व महत्त्व को ठीक से समझे बिना अन्य भावों (षोडश वर्ग) को महत्त्व देना व्यर्थ है।

लग्नवीर्यं विना यत्र, यत्कर्म क्रियते बुधैः।
तत्फलं विलयं याति, ग्रीष्मे कुसरितो यथा॥8॥

'ज्योतिर्विदाभरण' में कहा है कि जिस कार्य का आरम्भ निर्बल लग्न में किया जाता है वह कार्य नष्ट होता है, जैसे गरमी के समय में बरसाती नदियां विलीन हो जाती हैं॥8॥

आचार्य रेणुक ने बताया है कि जिस प्रकार जन्म लग्न से शुभ व अशुभ फल की प्राप्ति होती है, उसी प्रकार समस्त कार्यों में लग्न के बली होने पर कार्य की सिद्धि होती है। अतः समस्त कामों में बली लग्न का ही विचार करके आदेश देना चाहिए॥9॥

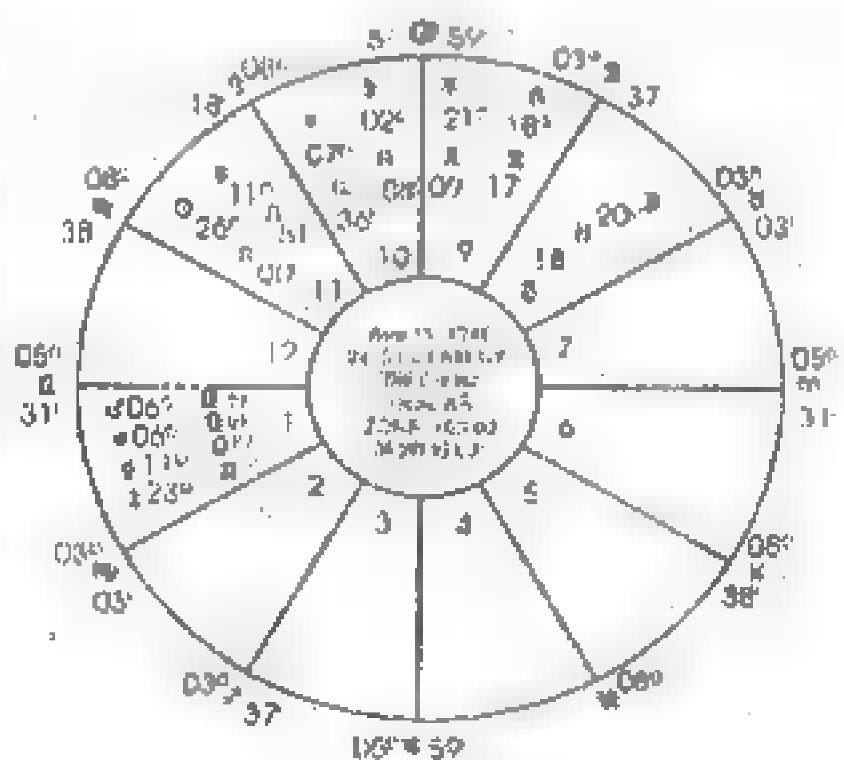
आदौ हि सम्पूर्णफलप्रदं स्यान्मध्ये पुनर्मध्यफलं विचिंत्यम्।
अतीव तुच्छं फलमस्य चान्ते विनिश्चयोऽयं विदुषामभीष्टः॥10॥

आचार्य श्रीपति जी ने बताया है कि लग्न के प्रारम्भ में संपूर्ण फल की, मध्यकाल में मध्यम फल की और लग्नान्त में अल्प फल होता है, यह विद्वानों का निर्णय है॥10॥

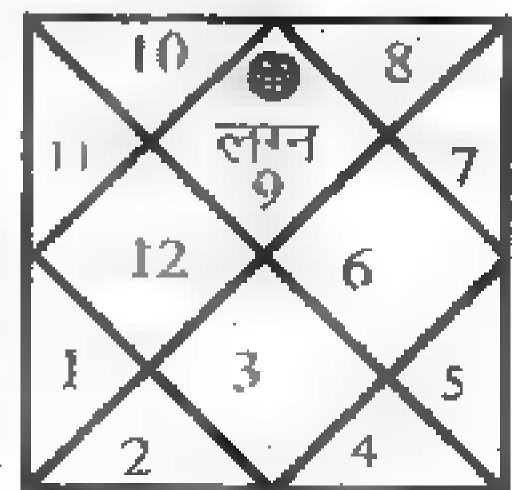
❑❑❑

लग्न किसे कहते हैं? लग्न क्या है? लग्न का क्या महत्त्व है?

हिन्दी में 'लग्न' अंग्रेजी में जिसे ऐसेडेन्ट (Ascendent) कहते हैं। इसके पर्यायवाची शब्दों में देह, तनु, कल्प, उदय, आय, जन्म, विलग्न, होरा, अंग, प्रथम, वपु इत्यादि प्रमुख हैं। ज्योतिष की भाषा में एक ''समय'' विशेष की परिमापन का नाप है जो लगभग दो घंटे का होता है। ज्योतिष की भाषा में जिसे जन्म कुण्डली कहते हैं वह वस्तुतः 'लग्न' कुण्डली ही होती है। लग्न कुण्डली को जन्मांग भी कहते हैं क्योंकि ''लग्न'' का गणित स्पष्टीकरण जन्म समय के आधार पर ही किया जाता है।



लग्न कुण्डली अभीष्ट समय में आकाश का मानचित्र है। इसकी स्पष्ट धारणा आप अंग्रेजी कुण्डली को सामने रखकर बनाएं तो साफ हो जाएगी क्योंकि अंग्रेजी में इसे हम Map of Heaven कहते हैं। बीच में पृथ्वी एवं उसके ऊपर वृत्ताकार घूमती हुई राशिमाला को विदेशों में Birth-Horoscope कहते हैं। इसलिए पारम्परिक ज्योतिष वृत्ताकार कुण्डली को ही प्राथमिकता देते हैं। परन्तु भारत में इसका प्रचलन नगण्य है। वस्तुतः आकाश में दीखने वाली बारह राशियां ही बारह लग्न हैं। जन्म कुण्डली के प्रथम भाव (पहले) घर को ही लग्न भाव, लग्न स्थान कहा जाता है। दिन और रात में 60 घटी होती है। 60 घटी में बारह लग्न होते हैं। 60 में बारह



3.30 से 5.30 A.M.
7.30 से 9.30
5.30 से 7.30 A.M. सूर्योदय
3.30 से 11.30
9.30 से 11.30
11.30 से अर्धरात्रि 1.30
दोपहर 1.30 से 11.30
सूर्यास्त 5.30 से 7.30 P.M.
1.30 से 3.30
1.30 से 3.30
3.30 से 5.30
7.30 से 3.30 P.M.

का भाग देने पर 2½ घटी का एक लग्न कहलाता है। यह लग्न कुण्डली ही जन्मपत्रिका का मुख्य आधार है जो खगोलस्थ ग्रहों के द्वारा निर्मित होती है। यही ग्रह केन्द्र बिन्दु है जहां से गणित व फलित ज्योतिष सूत्रों की स्थापना प्रारम्भ होती है। उपर्युक्त खाली जन्म कुण्डली है। इसके 12 विभाजन ही "द्वादश घर" या "बारह भाव" कहलाते हैं। इसका ऊपरी मध्य घर जहां सूर्य दिखाई देता है पहला घर माना जाता है। यह घर जन्मकुण्डली का सीधा पूर्व है। चूंकि सूर्य पूर्व दिशा में उदय होता है। इसलिए सूर्योदय के समय जन्म लेने वाले व्यक्ति की जन्मकुण्डली में सूर्य उसी घर में होगा जिसे "लग्न" कहते हैं। चूंकि पृथ्वी अपनी धुरी पर एक चक्र 24 घंटों में पूर्ण कर लेती है, इसलिए सूर्य प्रत्येक दो घंटों में एक घर से दूसरे घर में जाता हुआ दिखलाई देगा। दूसरे अर्थों में पाठक जन्मकुण्डली को देखकर बता सकता है कि अमुक जन्मकुण्डली वाले व्यक्ति का जन्म सूर्य के किन दो घंटों के समय में हुआ था।

10 9 8
11 प्रथम स्थान लग्न 7 रा.
12 6
1 के. 3 बु. सू. 5 श.
2 चं. शु. 4 गु.

वृष मिथुन चं.शु. सू. बु.	प्रथम स्थान मेष केतु	मीन कुम्भ
कर्क. गुरु	बंगाल	मकर
सिंह शनि कन्या मं.	तुला राहु	धनु वृश्चिक लग्न

मीन	मेष के.	वृष चं. श.	मिथुन सू. बु.
कुम्भ	चेन्नई		कर्क गु.
मकर			सिंह श.
धनु	वृश्चिक लग्न	तुला रा.	कन्या मं.

11 10	प्रथम स्थान के. 9	8 रा. 7
12	बंगाल	6
1 के. चं. 2 शु.	3 सू. बु.	5 4 श. गु.

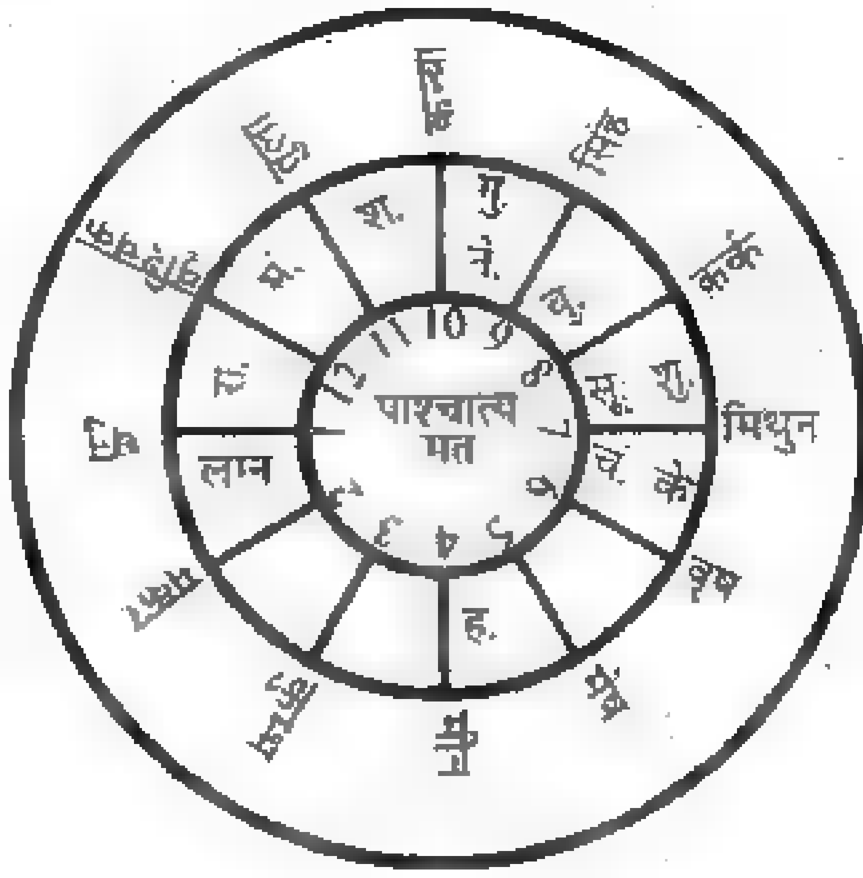
जनश्रुतियों में प्रचलित प्रत्येक लग्न की चारित्रिक विशेषताएं

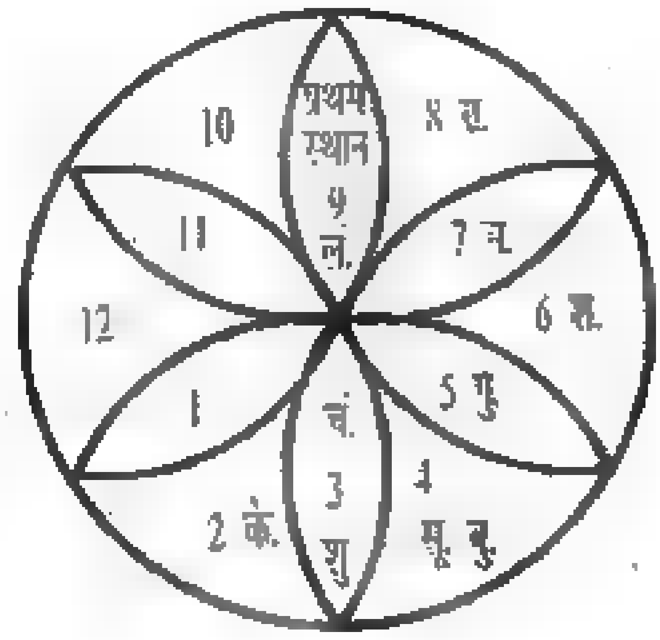
राजस्थान के ग्रामीण अंचलों में जनश्रुतियों के आधार पर लावणी में प्रस्तुत यह गीत जब मैंने पहली बार समदंडी ग्राम के राजज्योतिषी पं. मगदत्त जी व्यास के मुख से राग व लय के साथ सुना तो मन्त्र-मुग्ध रह गया। इस गीत में द्वादश लग्नों में जन्मे मनुष्य का जन्मगत स्वभाव, चरित्र, सार रूप में संकलित है। जो कि निरन्तर अनुसंधान, अनुभव एवं अकाट्य सत्य के काफी नजदीक है। प्रबुद्ध पाठकों के ज्ञानार्जन एवं संग्रह हेतु इसे ज्यों का त्यों यहां दिया जा रहा है।

ज्योतिष शास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत्, वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है॥ टेर ॥
जिसका जन्म हो ***मेषलग्न*** में, क्रोध युक्त और महाविकट।
सभी कुटुम्ब की करे पालना, लाल नेत्र रहते हर दम।
करे गुरु की सेवा सदा नर, जिसका होता ***वृषभलग्न***।
तरह-तरह के शाल-दुशाला, पहने कण्ठ में आभूषण।
मिथुनलग्न के चतुर सदा नर, नहीं किसी से डरता है।
ज्योतिष शास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत्, वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है॥ टेर ॥
कर्कलग्न के देखे सदा नर, उनके रहती बीमारी।
सिंहलग्न के महापराक्रमी, करे नाग की असवारी।
कन्यालग्न के होत नपुन्सक, रोवे मात और महतारी।
तुलालग्न के तस्कर बालक, खेले जुआं और अपनी नारी।
वृश्चिकलग्न के दुष्ट पदार्थ, आप अकेले खाते हैं।

ज्योतिष शास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत्, वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है।। टेर ।।
बुद्धिमान और गुणी सुखी नर, जिसका होता **धनुलग्न।**
मकरलग्न मन्द बुद्धि के, अपनी धुन में वो भी मगन।
कुम्भलग्न के पूत बड़े अवधूत, रात-दिन करते रहते भजन।
मीनलग्न के सुत का जीना, मृत्यु लोक में बड़ा कठिन।
नहीं किसी का दोष, कर्मफल अपने आप बतलाता है।
ज्योतिष शास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत्, वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है।। टेर ।।

❑❑❑





क्रमांक	लग्न	दीर्घादि	घटी पल	अवधि घ. मि.	दिशा
1.	मेष	ह्रस्व	4.00	1.36	पूर्व
2.	वृषभ	ह्रस्व	4.30	1.48	दक्षिण
3.	मिथुन	सम	5.00	2.00	पश्चिम
4.	कर्क	दीर्घ	5.30	2.12	उत्तर
5.	सिंह	दीर्घ	5.30	2.12	पूर्व
6.	कन्या	दीर्घ	5.30	2.11	दक्षिण
7.	तुला	दीर्घ	5.30	2.12	पश्चिम
8.	वृश्चिक	दीर्घ	5.30	2.12	उत्तर
9.	धनु	दीर्घ	5.30	2.12	पूर्व
10.	मकर	सम	5.00	2.00	दक्षिण
11.	कुंभ	लघु	4.30	1.48	पश्चिम
12.	मीन	लघु	4.00	1.36	उत्तर

सही व शुद्ध लग्न साधन के लिए तीन वस्तुओं की जानकारी आवश्यक है।
1. जन्म तारीख, 2. जन्म समय 3. जन्म स्थान।

विभिन्न पंचांगों में आजकल दैनिक ग्रह स्पष्ट के साथ-साथ, भिन्न-भिन्न देशों की दैनिक लग्न सारणियां, अंग्रेजी तारीख एवं भारतीय मानक समय में दी हुई होती हैं। जिन्हें देखकर आसानी से अभीष्ट तारीख के दैनिक लग्न की स्थापना की जा सकती है।

लग्न का महत्त्व

लग्न वह प्रारम्भ बिन्दु है जहां से जन्मपत्रिका, निर्माण की रचना प्रारम्भ होती है। इसलिए शास्त्रकारों ने ''लग्नं देहो वर्ग षट्कोऽर्गानि'' लग्न कुण्डली को जातक का शरीर माना है तथा जन्मपत्रिका के अन्य षोडश वर्ग उसके सोलह अंग कहे गए हैं।

जातक ग्रन्थों के अनुसार–

यथा तनुत्पादनमन्तरैव

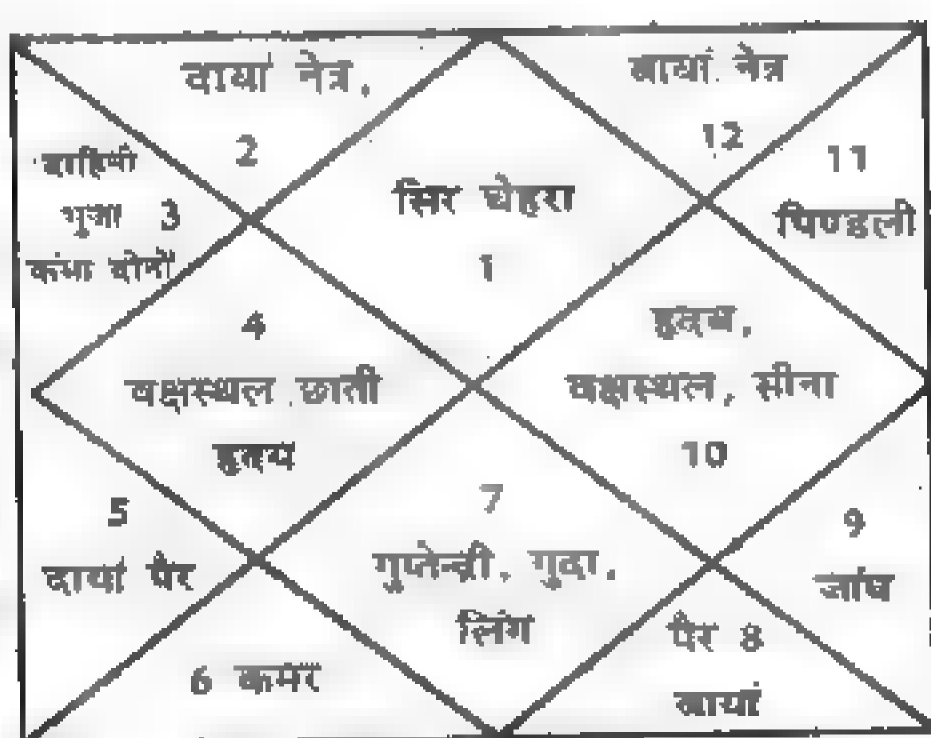
परागसम्पादनम् अत्र मिथ्या।

बिना विलग्नं परभाव सिद्धिः

ततः प्रयत्ये हि विलग्न सिद्धिम्॥

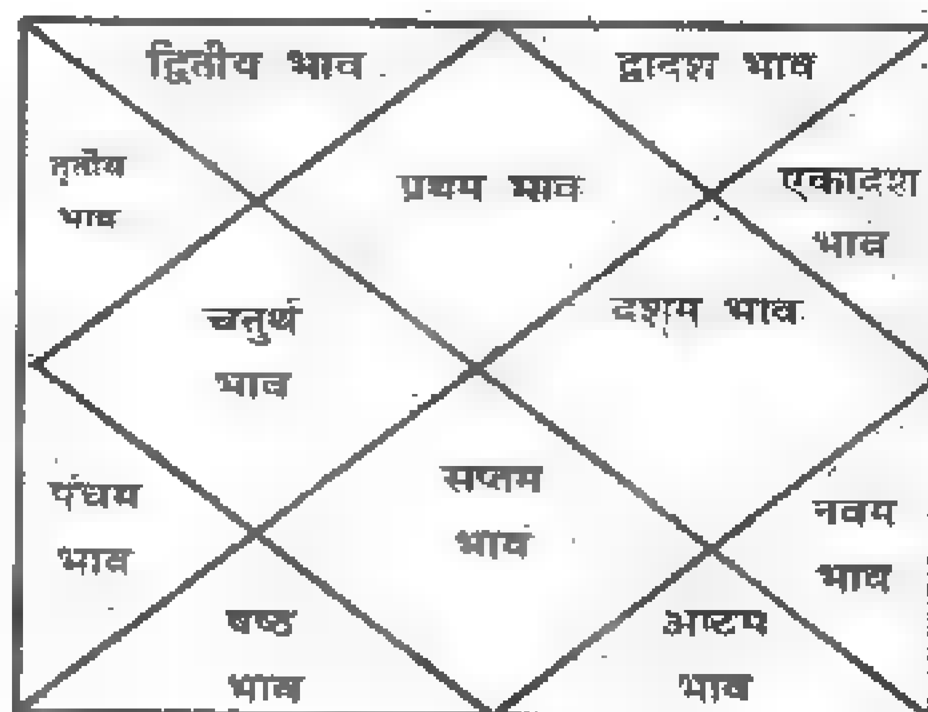
जैसे वृक्ष के बिना फल–पुष्प–पत्र एवं पराग प्रक्रियाओं की कल्पना व्यर्थ है। उसी प्रकार लग्न साधन के बिना अन्य भावों की कल्पना एवं फल कथन प्रक्रिया भी व्यर्थ है। अतः जन्मपत्रिका निर्माण में ''बीजरूप लग्न'' ही प्रधान है तभी कहा गया है कि–**''लग्न बलं सर्वबलेषु प्रधानम्''**।

लग्न ही व्यक्ति का चेहरा



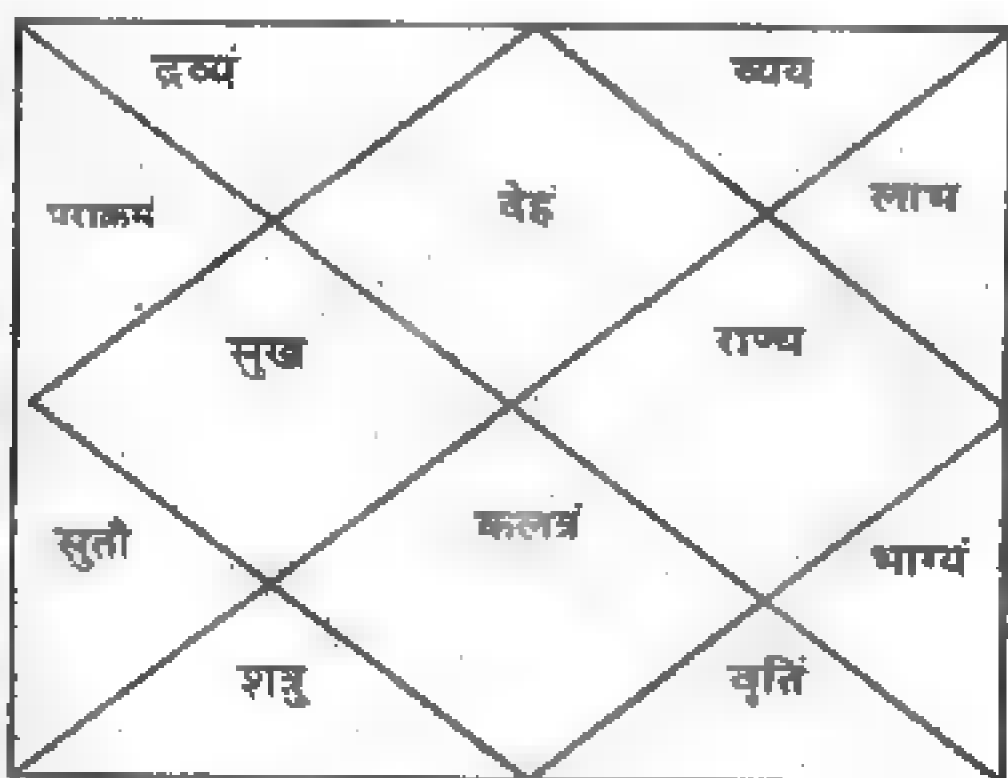
फलित ज्योतिष में कालपुरुष के शरीर के विभिन्न अंगों पर राशियों की कल्पना की गई है। लग्न कुण्डली में भी कालपुरुष के इन अंगों को विभिन्न भागों में विभाजित किया गया है।

जिसमें लग्न ही व्यक्ति का चेहरा है। जैसा लग्न होगा वैसा ही व्यक्ति का चेहरा होगा। इस पर हमारी पुस्तक **''ज्योतिष और आकृति विज्ञान''** पढ़िए। लग्न पर जिन–जिन ग्रहों का प्रभाव होगा व्यक्ति का चेहरा व स्वभाव भी उन–उन ग्रहों के स्वभाव व चरित्र से मिलता–जुलता होगा। लग्न कुण्डली में कालपुरुष का जो भाव विकृत एवं पाप पीड़ित होगा,



सम्बन्धित मनुष्य का वही अंग विशेष रूप से विकृत होगा, यह निश्चित है। अतः अकेले लग्न कुण्डली पर यदि व्यक्ति ध्यान केन्द्रित कर फलादेश करना शुरू कर दे तो वह फलित ज्योतिष का सिद्धहस्त चैम्पियन बन जाएगा।

जन्मकुण्डली का प्रथम भाव ही लग्न कहलाता है। इसे पहला घर भी कह सकते हैं। इसी प्रकार दाएं से चलते हुए कुण्डली के 12 कोष्ठक, बारह भाव या बारह घर कहलाते हैं। चाहे इस भाव में कोई भी अंक या राशि नम्बर क्यों न हो, उसमें कोई अन्तर नहीं पड़ता। अब किस भाव पर घर में क्या देखा जाता है इस पर जातक ग्रन्थों में काफी चिन्तन किया गया है। एक प्रसिद्ध श्लोक इस प्रकार है–



देहं द्रव्यं पराक्रमः सुखं, सुतो शत्रुकलत्रं वृत्तिः।
भाग्यं राज्यं पदे क्रमेण, गदिता लाभ-व्ययौ लग्नतः॥

अर्थात् पहले भाव में देह-शरीर सुख, दूसरे में धन, तीसरे में पराक्रम, जन-सम्पर्क, भाई-बहन, चौथे में सुख, नौकर, माता, पांचवें में सन्तान एवं विद्या, छठे में शत्रु व रोग, सातवें में पत्नी, आठवें में आयु, नौवें स्थान में भाग्य, दसवें में राज्य, ग्यारहवें में लाभ एवं बारहवें स्थान में खर्च का चिन्तन करना चाहिए।

❑❑❑

धनुलग्न एक परिचय

1.	लग्नेश, सुखेश	–	गुरु
2.	धनेश, पराक्रमेश	–	शनि
3.	पंचमेश, खर्चेश	–	मंगल
4.	षष्ठेश; लाभेश	–	शुक्र
5.	सप्तमेश, राज्येश	–	बुध
6.	भाग्येश	–	सूर्य
7.	अष्टमेश	–	चंद्रमा
8.	त्रिकोणाधिपति	–	5–मंगल, 9–सूर्य
9.	दु:स्थान के स्वामी	–	6–शुक्र, 8–चंद्र, 12–मंगल
10.	केन्द्राधिपति	–	1, 4–गुरु, 7, 10–बुध
11.	पणकर के स्वामी	–	2–शनि, 5–मंगल, 8–चंद्र, 11–शुक्र
12.	आपोक्लिम	–	3–शनि, 6–शुक्र, 9–सूर्य, 12–मंगल
13.	त्रिकेश	–	6–शुक्र, 8–चंद्र, 12–मंगल
14.	उपचय के स्वामी	–	3–शनि, 6–शुक्र, 10–बुध, 11–शुक्र
15.	शुभ योग	–	1. मंगल, 2. सूर्य
16.	अशुभ योग	–	1. गुरु+शुक्र, 2. गुरु+शनि, 3. गुरु+बुध 4. गुरु+चंद्र
17.	निष्फल योग	–	1. मंगल+बुध
18.	सफल योग	–	1. मंगल+गुरु, 2. सूर्य+गुरु, 3. सूर्य+बुध
19.	राजयोग कारक	–	सूर्य और गुरु योगकारक–बुध

20. मारकेश	–	शुक्र मारकेश और बुध सहायक मारकेश।
21. पापफलद	–	शनि, चंद्र
22. परमपापी	–	शुक्र

❑❑❑

लघु पाराशरी सिद्धान्त के अनुसार

धनुलग्न का ज्योतिषीय विश्लेषण

पहला पाठ

एक एव कविः पापः शुभौ सौम्यदिवाकरौ।
योगों भास्कर सौम्याभ्यां निहन्ता भास्वतः सुतः॥44॥
ध्नन्ति शुक्रादयः पापा मारकत्वेन लक्षिताः।
ज्ञातव्यानि फलान्यैवं चापजस्य मनीषिभिः॥45॥

दूसरा पाठ

एक पापः कविर्ज्ञोऽपि शुभौ भौमदिवाकरौ।
युक्तो भास्करभौमाभ्याम् न हन्ति रविनन्दनः॥46॥
ध्नन्ति शुक्रादयः पापा हन्तृलक्षणलक्षिताः।
ज्ञातव्यानि फलान्येवं चापजस्य मनीषिभिः॥47॥

तीसरा पाठ

एक एव कविः पापः शुभौ भौमदिवाकरौ।
योगो भास्करसौम्याभ्यां न तु हन्तांशु मत्सुतः॥48॥
ध्नन्ति शुक्रादयः पापाः मारकत्वेन लक्षिताः।
ज्ञातव्यानि फलान्येवं धनुष्यश्च मनीषिभिः॥49॥

स्पष्टीकरण

पहला पाठ–धनुलग्न के लिए शुक्र एक मात्र पाप फल देने वाला है कारण वह षष्ठ और एकादश स्थानों का स्वामी है। बुध और रवि शुभ फलदायक हैं कारण

बुध सप्तम और दशम स्थानों का स्वामी होकर सूर्य नवम (भाग्य) का स्वामी है। इन दोनों ग्रहों का योग हो तो राजयोग जानना चाहिए। शनि मृत्युदायक है। उसी प्रकार शुक्रादि पाप ग्रह अपनी दशान्तर्दशा में मृत्युप्रद होते हैं।

दूसरा पाठ–शुक्र षष्ठेश और एकादशेश होता है इसलिए बुध बलवान (सप्तम) मारक स्थान का स्वामी और दशम केन्द्र का स्वामी होता है। इसलिए ये दोनों ग्रह अशुभ फल देते हैं। मंगल पंचमेश और द्वादशेश होता है इसलिए शुभ फल देता है। सूर्य नवम स्थान का स्वामी होता है इन दोनों की युति हो तो योगकारक होती है। शनि स्वयं मारक नहीं बनता। शेष सब पहले पाठ के अनुसार होता है।

तीसरा पाठ–अकेला शुक्र अशुभ फल देता है (पहले पाठ के अनुसार) मंगल और सूर्य शुभ फल देते हैं। (दूसरे पाठ के अनुसार) रवि बुध का योग पहले पाठ के अनुसार लिया है। पहले और तीसरे पाठ में बुध को अशुभत्व नहीं दिया है। शनि मारक होता है। (पहले पाठ के अनुसार) शनि स्वयं मारक नहीं होता (दूसरे और तीसरे पाठों के अनुसार)।

शुक्र को तीनों पाठों में मारक होता है ऐसा कहा गया है। दूसरे पाठ में बुध की अशुभ ग्रहों में गणना की गई है। उसका कारण कदाचित् बुध केन्द्राधिपति और मारक स्थान का स्वामी होता है। ऐसा मालूम होता ह। दूसरे पाठ में बुध को निकालकर उसकी जगह मंगल को लिया है। परन्तु मंगल पंचमेश और व्ययेश होता है। इस ग्रंथकार की एक विशिष्ठ विचारधारा दिखाई पड़ती है वह ऐसी है कि व्ययेश पाप ग्रह हो तो वह पाप फल नहीं दे सकता और वह शुभ फल देता है। प्रसंगों में शुभ ग्रह भी व्ययेश हो तो शुभ फल देते हैं। ऐसा मिथुन और तुला लग्नों के विवेचनों में बुध और शुक्र की राजयोगों में गणना की गई है इस पर से व्यय स्थान अथवा व्ययेश पाप फल देने वाले नहीं होते यह सिद्ध होता है। वे अन्य ग्रहों के साहचर्यानुसार फल देते हैं। इस पर से रवि बुध का योग प्रथम श्रेणी का होता है। तो रवि मंगल योग द्वितीय श्रेणी का होता है। परन्तु धनुलग्न को शुक्र को छोड़कर शेष सब ग्रह शुभ फल देते हैं। मात्र चंद्रमा धनुलग्न के लिए अष्टमेश होता है। इससे अष्टमेश का दोष नहीं होगा। परन्तु अपनी दशान्तर्दशा में अनिष्ट फल देता है। इस प्रकार धनुलग्न के ग्रहों के शुभाशुभत्व के विचार हैं।

सूर्य पुत्र शनि को इस लग्न के लिए पहले पाठ में विघातक माना गया है कारण यह द्वितीय और तृतीय इन दोनों अशुभ स्थलों का स्वामी होता है। द्वितीय और तृतीय इन दोनों स्थानों में क्रमश: मकर और कुंभ राशियां आती हैं और उनका स्वामी शनि ही होता है इसलिए शनि अनिष्टकारक होकर मारकेश है। निसर्गत: शनि स्वयं पाप ग्रह है और इन सब कारणों की वजह से वह पाप ग्रह ठहराया गया है और वह अपनी दशान्तर्दशा में अशुभफल देगा इसमें संदेह नहीं है। गुरु और चंद्रमा के

विषय में यहां पर कुछ भी उल्लेख नहीं है। गुरु चतुर्थ केन्द्र का स्वामी होने से शुभ फल देने वाला नहीं होता और उसी प्रकार चंद्रमा अष्टम स्थान का अधिपति होने के कारण से शुभ फल देने वाला नहीं होता।

धनुलग्न के लिए शुभाशुभ योग

1. **शुभ योग**—सूर्य निसर्गतः पाप ग्रह है फिर भी नवम (त्रिकोण) का स्वामी होने से श्लोक 6 के अनुसार शुभ माना गया है और शुभ फलदायक होता है।
2. **शुभ योग**—मंगल नैसर्गिक पाप ग्रह है फिर भी पंचम (त्रिकोण) स्थान का स्वामी होने से श्लोक 6 के अनुसार शुभ माना गया होकर शुभ फलदायक होता है।
3. **शुभ योग**—बुध दशम केन्द्र का स्वामी होने से और सूर्य नवम (त्रिकोण) स्थान का स्वामी होने से इन दोनों का स्थान सहचर्य योग उत्तम माना गया है और वह उत्तम फलदायक होता है।

धनुलग्न के लिए अशुभ योग

1. **अशुभ योग**—शुक्र नैसर्गिक शुभ ग्रह होने पर भी षष्ठ और एकादश स्थानों का स्वामी होने से अशुभ होकर अशुभ फल देने वाला होता है।
2. **अशुभ योग**—शनि द्वितीय स्थान का स्वामी होकर तृतीय अशुभ स्थान का स्वामी होने से वह अशुभफलदायक होता है।
3. **अशुभ योग**—बुध सप्तम (मारक) स्थान का और दशम (केन्द्र स्थान) स्थान का स्वामी होने से श्लोक 7 के अनुसार अशुभ फल देने वाला होता है।
4. **अशुभ योग**—गुरु लग्न और चतुर्थ केन्द्र का स्वामी होने से श्लोक 7 और 10 के अनुसार अशुभ फलदायक होता है।
5. **अशुभ योग**—चंद्रमा अष्टम स्थान का स्वामी होने से अशुभ फलदायक होता है।

धनुलग्न के लिए निष्फल योग

1. मंगल-बुध

धनुलग्न के लिए सफल योग

1. मंगल-गुरु, 2. सूर्य-गुरु, 3. सूर्य-बुध (निकृष्ट)



धनुलग्न की प्रमुख विशेषताएं एक नजर में

1.	लग्न	–	धनु
2.	लग्न चिह्न	–	दो पैर और अन्त में चार पैर वाला धनुर्धारी
3.	लग्न स्वामी	–	गुरु
4.	लग्न तत्त्व	–	अग्नि तत्त्व
5.	लग्न स्वरूप	–	द्विस्वभाव
6.	लग्न दिशा	–	पूर्व
7.	लग्न लिंग व गुण	–	पुरुष, सतोगुणी
8.	लग्न जाति	–	क्षत्रिय
9.	लग्न प्रकृति व स्वभाव	–	क्रूर स्वभाव, पित्त प्रकृति
10.	लग्न का अंग	–	[illegible] (जांघ)
11.	जीवन रत्न	–	[illegible]
[illegible]	अनुकूल रंग	–	[illegible]
[illegible]	[illegible]	–	[illegible]
14.	अनुकूल देवता	–	विष्णु
15.	व्रत, उपवास	–	गुरुवार
16.	अनुकूल अंक	–	3
17.	अनुकूल तारीखें	–	3/12/30
18.	मित्र लग्न	–	मेष व सिंह
19.	शत्रु लग्न	–	कर्क, वृश्चिक व मीन
20.	व्यक्तित्व	–	गुणग्राही प्रवृत्ति, अध्ययन प्रियता

21.	**सकारात्मक तथ्य**	–	बुद्धिवादी तर्क। लक्ष्य प्राप्ति की ओर सचेष्ट
22.	**नकारात्मक तथ्य**	–	अतिभूर्तता, अव्यवहारिकता

❑❑❑

धनुलग्न के स्वामी गुरु का वैदिक स्वरूप

वैदिक साहित्य में गुरु का नाम अनेक मंत्रों में आया है।[1] थिबो का कहना है कि यह गुरु ग्रह का नाम है, चिन्त्य है।[2] 'तैत्तिरीय ब्राह्मण' में गुरु के जन्म का उल्लेख मिलता है।

बृहस्पतिः प्रथमं जायमानस्तिष्यं नक्षत्रमभिसम्बभूव।
श्रेष्ठो देवानां पृतनासु जिष्णुः दिशो नु सर्वा अभयं नो अस्तु॥

—तैत्तिरीय ब्राह्मण 3/1/1/5

अर्थात् जब गुरु पहले प्रकट हुआ तब वह तिष्य (पुष्य) नक्षत्र के पास था। शंकर बालकृष्ण दीक्षित के अनुसार कभी पुष्य तारा गुरु ग्रह की ओट में हो गया होगा। ज्योतिष की दृष्टि से यह संभव है। अपनी गति के कारण जब दो चार घंटे में गुरु पुष्य से पृथक हुआ होगा तो लोगों ने समझा होगा कि गुरु का जन्म हुआ। उस समय गुरु पुष्य के निकट रहा होगा।[4]

तिष्य शब्द का अर्थ पुष्य नक्षत्र है और पुष्य के देवता गुरु कहे गये हैं। ज्योतिष ग्रंथों में गुरु पुष्य योग अत्यधिक सुखद माना गया है। चंद्रमा, तारा एवं गुरु के संदर्भ में जो पौराणिक आख्यान हैं उस विषय में ऋग्वेद में वर्णन आता है कि गुरु ने अपनी पत्नी जुहू छोड़ी, सोम राजा ने उसे पुनः भेजा, मित्रावरुण ने समर्थन किया और अग्नि ने हाथ पकड़कर स्वयं पहुंचाया। तब सोम द्वारा लायी जाया को गुरु ने पुनः स्वीकार कर लिया।

तैत्तिरीय संहिता में शुक्र व चन्द्रादि ग्रहों के साथ गुरु ग्रह का नाम भी आया है।

1. बृहस्पते अतिअदर्यो अर्हाद् ऋग्वेद अ. 2 मण्डल 23/15
2. ऐस्ट्रोनोमी ऐस्ट्रोलजी एण्ड मैथमेटिक-पृष्ठ सं. 6
3. भारतीय ज्योतिष का इतिहास-डॉ. गोरख प्रसाद, पृष्ठ 31
4. भारतीय ज्योतिष का इतिहास-डॉ. गोरख प्रसाद, पृष्ठ 32

'वस्व्यसि रुद्रास्यदितिरस्यादित्यासि शुक्रासि चंद्रासि बृहस्पतित्वा सुम्ने कृण्वतु।'[1]

अर्थात् हे सोम को खरीदने वाले तू वस्वी है, अर्थात् वसु आदि देवों का रूप है। रुद्र है, अदिति है, आदित्य है, शुक्र है, चंद्र है, गुरु है। तू सुख से रहे।

ऋग्वेद में गुरु के ग्रहत्व को स्पष्ट करते हुए यह कहा गया कि–"गुरु प्रथम महान् प्रकाश के अत्यन्त उच्च स्वर्ग (कक्ष) में उत्पन्न हुआ।"[2]

गुरु ग्रह को देवगुरु, आंगिरस, गुरु तथा जीव आदि नामों से कहा गया है। यह सम्पूर्ण नक्षत्र मंडल का लगभग 12 वर्षों में भ्रमण पूरा करता है। ग्रह लाघव के अनुसार यह अस्त होने के बाद 1 महीने के पश्चात् उदित होता है। उसके बाद लगभग 4 महीने पश्चात् वक्री होता है तथा चार मास वक्री होने के पश्चात् मार्गी होता है तथा पुनः 4 महीने बाद अस्त हो जाता है। यह इसका मध्यम मान है। यह सूर्य से अधिक दूर है तथा सूर्य के ही प्रकाश से प्रकाशित है। इसे शुभ ग्रह माना गया है।

ऋग्वेद के इस आख्यानक के अनुसार इसका अर्थ यह है कि राजा सोम अर्थात् चंद्रमा का प्रत्येक 27वें दिन पुष्य नक्षत्र से संयोग होता है किन्तु गुरु उसे एक बार छोड़ने के पश्चात् लगभग 12 वर्ष पश्चात् पुनः उस नक्षत्र (पुष्य) में आता है। इस बीच में मित्र, वरुण और अग्नि देव उससे कई बार मिल लेते हैं। ये देव सम्भवतः सूर्य, बुध, शुक्र हैं जो प्रत्येक वर्ष में एक बार पुष्य नक्षत्र से संयुक्त होते हैं अर्थात् पुष्य नक्षत्र की सीध में आ जाते हैं। वेदों में गुरु को ब्रह्म अथवा ज्ञान का प्रतीक भी कहा गया है। पुष्य नक्षत्र बुद्धि का प्रतीक है तथा गुरु ज्ञान का अतः बुद्धि में ज्ञान यदा-कदा उदित होता है जबकि मन में काम, अर्थ आदि प्रायः आते रहते हैं। यही गुरु, तारा और चंद्रमा की कथा है।

गुरु के पूजन, हवन तथा शांतिकर्म में प्रयुक्त होने वाला वैदिक मंत्र इस प्रकार है–

ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हा द्युमद् विभाति क्रतुमज्जनेषु।
यद्दीदयच्छवस् ऋत प्रजात तदस्मासु द्रविणं देहि चित्रम्॥

❑❑❑

1. तैत्तिरीय संहिता 1/2/5
2. गुरुः प्रथमञ्जायमानो महो ज्योतिषः परमे व्योमन्

–ऋग्वेद 4/50/4
–अथर्ववेद 20/88/4
–तैत्तरीय ब्राह्मण 2/8/2

धनुलग्न के स्वामी गुरु का पौराणिक स्वरूप

देवगुरु गुरु पीत वर्ण के हैं। उनके सिर पर स्वर्ण मुकुट तथा गले में सुन्दर माला है। वे पीत वस्त्र धारण करते हैं तथा कमल के आसन पर विराजमान हैं। उनके चारों हाथों में क्रमशः दण्ड, रुद्राक्ष की माला, पात्र और वरदमुद्रा सुशोभित है।

महाभारत आदिपर्व और तै. स. के अनुसार गुरु महर्षि अंगिरा के पुत्र तथा देवताओं के पुरोहित हैं। ये अपने प्रकृष्ट ज्ञान से देवताओं को उनका यज्ञ- भाग प्राप्त करा देते हैं। असुर यज्ञ में विघ्न डालकर देवताओं को भूखों मार देना चाहते हैं। ऐसी परिस्थितियों में देवगुरु गुरु रक्षोघ्न मंत्रों का प्रयोग कर देवताओं की रक्षा करते हैं तथा दैत्यों को दूर भगा देते हैं।

इन्हें देवताओं का आचार्यत्व और ग्रहत्व कैसे प्राप्त हुआ? इसका विस्तृत वर्णन स्कन्द पुराण में प्राप्त होता है। गुरु ने प्रभास तीर्थ में जाकर भगवान शंकर की कठोर तपस्या की थी। उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान शंकर ने उन्हें देवगुरु का पद तथा ग्रहत्व प्राप्त करने का वर दिया। (श्रीमद. 5/22/15)

गुरु एक- एक राशि पर एक--एक वर्ष रहते हैं। वक्र गति होने पर इसमें अंतर आ जाता है।

ऋग्वेद के अनुसार गुरु अत्यन्त सुन्दर है। इनका आवास स्वर्ण निर्मित है। ये विश्व के लिए वरणीय हैं। ये अपने भक्तों पर प्रसन्न होकर उन्हें सम्पत्ति तथा बुद्धि से सम्पन्न कर देते हैं, उन्हें सन्मार्ग पर चलाते हैं और विपत्ति में उनकी रक्षा भी करते हैं। शरणागतवत्सलता का गुण इनमें कूट-कूटकर भरा हुआ है। देवगुरु गुरु का वर्ण पीत है। इनका वाहन रथ है, जो सोने का बना है तथा अत्यन्त सुखकर और सूर्य के समान भास्वर है। इसमें वायु के समान वेग वाले पीले रंग के आठ घोड़े जुते रहते हैं। ऋग्वेद के अनुसार इनका आयुध स्वर्ण निर्मित दण्ड है।

देवगुरु गुरु की एक पत्नी का नाम शुभा और दूसरी का तारा है। शुभा से सात कन्याएं उत्पन्न हुईं भानुमती, राका, अर्चिष्मति, महामती, महिष्मती, सिनीवाली और हविष्मती। तारा से सात पुत्र व एक कन्या उत्पन्न हुई। उनकी तीसरी पत्नी ममता से भारद्वाज और कच नामक दो पुत्र उत्पन्न हुए। गुरु के अधिदेवता इंद्र और प्रत्यधिदेवता ब्रह्मा हैं।

गुरु धनु और मीन राशि का स्वामी है। इनकी महादशा सोलह वर्ष की होती है। इनकी शान्ति के लिये प्रत्येक अमावस्या को गुरु का व्रत करना चाहिए और पीला पुखराज धारण करना चाहिए। ब्राह्मणों को दान में पीला वस्त्र, सोना, हल्दी, घृत, पीला अन्न, पुखराज, अश्व, पुस्तक, मधु, लवण, शर्करा, भूमि और छत्र देना चाहिए।

इनकी शान्ति के लिए वैदिक मंत्र–"**ओ३म् बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद् द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥**"

पौराणिक मंत्र–"**देवानां च ऋषीणां च गुरुं कान्चसंनिभम्। बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्॥**"

बीज मंत्र–'**ओ३म ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः।**'

तथा सामान्य मंत्र–'**ओ३म् बृं बृहस्पतये नमः**' है।

इनमें से किसी एक का श्रद्धानुसार नित्य निश्चित संख्या में जप करना चाहिए। जप का समय संध्या काल तथा जप संख्या 11,000 है।

❑❑❑

धनुलग्न के स्वामी गुरु का खगोलीय स्वरूप

गुरु एक पीत वर्ण का ग्रह है। इसका सौर मंडल में पांचवां स्थान है। यह सूर्य से लगभग 77,80,00000 कि.मी. की दूरी पर है और लगभग 11 वर्षों में सूर्य की एक परिक्रमा पूरी करता है। पृथ्वी से बहुत दूर होते हुए भी गुरु अत्यधिक देदीप्यमान् दिखाई देता है। यह सौर मण्डल का सम्राट ग्रह है। अतः शास्त्रों में इसके लिए "गुरु" तथा "गुरु" नामों का प्रयोग किया गया है। इसका व्यास 1,43,640 किमी. है। गुरु यदि भीतर से खोखला हो तो पृथ्वी जैसे 1600 पिण्ड उसमें समा सकते हैं। इसका गुरुत्व भी पृथ्वी से 317 गुना है। यदि कोई व्यक्ति पृथ्वी पर 77 कि.ग्रा. भार का हो तो "गुरु" पर जाकर उसका भार 22 टन हो जायेगा। गुरु के चंद्रमाओं की संख्या तेरह है। गुरु ग्रह अस्त होने के 30 दिन बाद वक्री होता है। उदय के 129 दिन बाद वक्री होता है। वक्री के 128 दिन बाद मार्गी होता है तथा मार्गी के 129 दिन बाद पुनः अस्त होता है।

गुरु के अतिरिक्त गुरु, देवगुरु, वागीश, अंगिरा, जीव आदि नाम भी इसके पर्याय माने गये हैं।

गुरु की गति–गुरु अपनी धुरी पर 9 घंटा 55 मिनट में एक चक्कर लगाता है। यह एक सैकंड में 8 मील चलता है तथा सूर्य की परिक्रमा 4,332 दिन 35 घंटे 5 पल में पूरी करता है। स्थूल तौर पर यह 12 या 13 महीनों में एक राशि, 160 दिन में एक नक्षत्र, 43 दिन एक चरण पर रहता है।

गुरु ग्रह अस्त होने के 30 दिन बाद उदय होता है। उदय के 128 दिन बाद वक्री होता है। वक्री के 120 दिन बाद मार्गी होता है तथा मार्गी के 128 दिन बाद पुनः अस्त हो जाता है।

गणितागत स्पष्टीकरण से चार राशि या 120 डिग्री अंश के पीछे रहने पर गुरु वक्री हो जाता है। सूर्य से चार राशि 120 डिग्री अंश के आगे रहने पर यह मार्गी

होता है। वक्री अवस्था में 12 डिग्री अंश तक पीछे हटता है तथा चार मास तक वक्री रहता है तथा पुनः 8 मास तक मार्गी रहता है। जब इसकी गति 14/4 की होती है, तब यह शीघ्रगामी (अतिचारी) हो जाता है। गुरु 45 दिन तक अतिचारी रहता है। यह सूर्य से दूसरी राशि पर शीघ्रगामी, तीसरी पर समचारी, चौथी पर मंदचारी, पांचवीं और छठी पर वक्री, सातवीं और आठवीं पर अतिवक्री, नवम और दशम पर कुटिल और ग्यारहवीं तथा बारहवीं राशि पर पुनः शीघ्रगामी हो जाता है। वक्री होने के पांच दिन आगे या पीछे यह स्थिर रहता है।

□□□

धनुलग्न की चारित्रिक विशेषताएं

धनुलग्न का स्वरूप

पृष्ठोदयी त्वथ धनुर्गुरुस्वामी च सात्विकः॥17॥
पिंगलो निशिवीर्याढ्यः पावकः क्षत्रियो द्विपात्।
आदावन्ते चतुष्पादः समगात्रो धनुर्धरः॥18॥
पूर्वस्थो वसुधाचारी तेजस्वी ब्रह्मणा कृतः।

–बृहत्पाराशर होराशास्त्र अ. 4/श्लो. 18

धनु पृष्ठोदय, सत्वगुणी, पिंगलवर्ण, रात्रिबली, अग्नितत्त्व, क्षत्रिय, 25 अंश तक द्विपद, उसके बाद चतुष्पद, समदेह, धनुषधारी, पूर्व दिशावासी, भूचारी, तेजस्वी है, इसका स्वामी गुरु है।।17-18।।

व्यादीर्घास्य शिरोधरः पितृधनस्त्यागी कविर्वीर्यवान्,
वक्ता स्थूलरदश्रवोधरनसः कर्मोद्यतः शिल्पवित्।
कुब्जांसः कुनखी समांसलभुजः प्रागल्भ्यवान् धर्मवित्,
बन्धुद्विट् न बलात् समेति च वशं साम्नैकसाध्योऽश्विजः॥9॥

–बृहज्जातकम् अ. 16/श्लो. 9

धनु राशि में चंद्रमा रहने पर जातक बड़े मुख व लम्बी गर्दन वाला, पैतृक सम्पत्ति प्राप्त करने वाला, त्यागी अर्थात् दानशील, काव्यादि को समझने वाला या कवि, पराक्रमी या अधिक वीर्य वाला, अच्छा वक्तव्य देने वाला, दांत, कान, होंठ व नाक पर मोटाई लिए हुए, सदैव कर्मशील, शिल्प कला जानने वाला, आगे को झुके हुए कन्धों वाला तथा कन्धों के पीछे उठी हड्डी वाला, नाखूनों में विकार से युक्त, मांसल भुजाओं वाला, प्रगल्भतायुक्त अर्थात् प्रतिभाशाली, धर्मवेत्ता, अपने बन्धुओं से द्वेष करने वाला, हठ व शक्ति से वश में न होने वाला अर्थात् बल प्रयोग से अधिक असाध्य हो जाने वाला, प्रेम व कोमल व्यवहार मात्र से ही नियंत्रित होने वाला होता है।

धनुर्विलग्ने भवति प्रसूतः कुलप्रधानः सुभगो मनुष्यः।
शूरोऽर्थवान् भीतिपरः कृतज्ञो बन्धूपभोग्यो द्रविणो वपुष्मान्॥9॥

– वृद्धयवन जातक अ. 24/श्लो.9/ पृ.289

यदि जन्म समय में धनुलग्न का उदय हो तो मनुष्य अपने कुल में प्रधानता पाने वाला, सौभाग्य से युक्त, शूरवीर, धनवान, भययुक्त रहने वाला, लोकधर्म में भीरु, कृतज्ञता से युक्त बन्धु-बान्धवों की सहायता करने वाला, अच्छे स्वस्थ शरीर वाला एवं धनी होता है।

प्राज्ञश्चापविलग्नजः कुलवरः श्रीमान् यशोवित्तवा

–जातक पारिजात श्लो. 9/ पृ. 678

धनु प्राज्ञ, कुल में श्रेष्ठ, धनी, यशस्वी, द्रव्यवान्। मूल में श्रीमान् और वित्तवान् यह दो शब्द आये हैं। अभिप्राय दोनों का एक ही है।

परिमण्डलाक्षवक्त्रो गणेषु मुख्यो धनुर्दृगाणाद्ये
स्वोपचितस्वाचारस्तथा मृदुर्भवति संजातः॥

–सारावली श्लो. 10/ पृ. 466

यदि जन्म लग्न में धनु राशि व धनु राशि का प्रथम द्रेष्काण हो तो जातक गोल नेत्र व मुख वाला, समुदाय में प्रधान, स्वयं वृद्धि करने वाला, सुन्दर आचरण कर्त्ता व कोमल हृदय वाला होता है।

धनुर्लग्नोदये जातो नीतिमान् धर्मवान्, सुधीः।
कुलमध्ये प्रधानश्च प्राज्ञः सर्वस्य पोषकः॥

–मानसागरी अ. 1/ श्लो. 9

धनुलग्न वाला जीव धर्मिष्ठ, कुल वंश में प्रधान सभी का परिपालक, सुन्दर, ज्ञानी, दृढ़ संकल्प वाला, राजसेवा कार्य तथा नीतिरीति निपुण होता है।

भोजसंहिता

धनुलग्न का स्वामी गुरु है। गुरु देवगुरु माने गये हैं तथा धार्मिक प्रवृत्तियों के परिसूचक भी हैं। यह कांचन वर्ण, द्विस्वभाव व अर्द्धजल राशि है। इसका प्राकृतिक स्वभाव अधिकार प्रिय, करुणामय और मर्यादा इच्छुक है। इस राशि वाले व्यक्ति विशेषतः पीले रंग, गेहुंए शरीर व बड़ी-बड़ी आंखें, उन्नत ललाट, गाल फूले हुए वाले तथा बुद्धिजीवी होते हैं। अध्ययन व अध्यापन कराते हुए पठन पाठन में रुचि लेने वाले ये व्यक्ति धार्मिक स्वभाव के होते हैं।

सामान्यतयाः धनुलग्न में उत्पन्न जातक स्वस्थ्य एवं बलवान होते हैं। स्वभाव

में यद्यपि ये शान्त होते हैं परन्तु यदा-कदा अभिमान के भाव का भी प्रदर्शन करते हैं। ये धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति होते हैं तथा अत्यन्त ही बुद्धिमत्ता से अपने सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करके उनमें सफलता अर्जित करते हैं फलतः जीवन में धनैश्चर्य वैभव एवं सुख संसाधनों को अर्जित करने में समर्थ रहते हैं। ये आदर्शवाद एवं आध्यात्मिकता के मध्य प्रवृत्त होकर भौतिक सुखों के प्रति आकृष्ट रहकर उनका उपभोग करते हैं। ये अपने समस्त कार्यों को नियमानुसार सम्पन्न करते हैं। अन्य जनों के ये विश्वास पात्र होते हैं परन्तु स्वयं दूसरे पर कम ही विश्वास करते हैं। दानशीलता का भाव भी इनमें विद्यमान रहता है तथा समाज में मान प्रतिष्ठा तथा यश अर्जित करने में समर्थ रहते हैं। राजनीति कानून गणित या ज्योतिष आदि विषयों में इनकी रुचि रहती है तथा परिश्रमपूर्वक इन क्षेत्रों में सफलता प्राप्त करते हैं। इनको प्रेम से ही वश में किया जा सकता है अन्य प्रलोभनों से नहीं।

धनुलग्न के प्रभाव से आप स्वस्थ्य एवं बलशाली होंगे तथा परिश्रम एवं बुद्धिमत्तापूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करके, उनमें सफलता प्राप्त करेंगे। आप एक अध्ययनशील पुरुष को लेकर जीवन संघर्ष करेंगे तथा किसी के प्रति भी मन में अनावश्यक द्वेष या ईर्ष्या का भाव नहीं रखेंगे, फलतः समाज में आप आदरणीय होंगे। शत्रु एवं विरोधी पक्ष से भी आप उदारता का व्यवहार करके उनको प्रभावित करेंगे। साथ ही अपनी व्यवहार कुशलता एवं धैर्ययुक्त प्रवृत्ति से कार्यक्षेत्र में उन्नति मार्ग पर प्रशस्त होकर सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करेंगे।

आप एक बुद्धिमान पुरुष होंगे तथा बुद्धिमत्तापूर्वक सांसारिक कार्यों में सफलता अर्जित करके धनैश्वर्य एवं सुख संसाधनों को अर्जित करेंगे। आप में उदारता का भाव भी विद्यमान होगा तथा अवसरानुकूल अन्य जनों की सेवा तथा सहायता करने में तत्पर होंगे। आर्थिक रूप से आपकी स्थिति सुदृढ़ रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में आपको सफलता मिलेगी।

आपमें तेजस्विता का भाव भी विद्यमान होगा तथा आप यदा-कदा उग्रता का भी प्रदर्शन करेंगे। राजकार्य या सरकारी सेवा में आप तत्पर रहेंगे तथा राजनीति के क्षेत्र में भी आपको सफलता की प्राप्ति हो सकती है। आपकी श्रेष्ठ कार्यों में रुचि रहेगी तथा इन्हीं कार्यकलापों से आपकी प्रतिष्ठा बनेगी।

आप एक आस्तिक व्यक्ति होंगे तथा धर्म के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा निष्ठापूर्वक आप धार्मिक कार्य कलापों को सम्पन्न करेंगे साथ ही आप समय-समय पर तीर्थयात्राएं भी करते रहेंगे। मित्र एवं बन्धुवर्ग के आप प्रिय एवं आदरणीय होंगे तथा उनसे इच्छित लाभ एवं सहयोग प्राप्त होता रहेगा। इस प्रकार आप उदार, दानशील तेजस्वी, महत्त्वाकांक्षी एवं व्यवहार कुशल व्यक्ति होंगे तथा आनन्दपूर्वक सुखों का उपभोग करते हुए अपना समय व्यतीत करेंगे।

धनु राशि पुरुष जाति, अल्पसंतति व दिवाबली है। इस राशि का चिह्न प्रत्यंचा चढ़ा हुआ धनुष है। ऐसे व्यक्ति लक्ष्य भेदन में पटु होते हैं। इनके जीवन का एक निश्चित (टारगेट) लक्ष्य होता है तथा ये बड़े दत्तचित्त होकर एकाग्रता से अपने कार्य को सफल बनाने में प्रयत्नशील रहते हैं। ऐसे व्यक्ति सभा सम्मेलनों व भाषण इत्यादि में बढ़-चढ़कर भाग लेते हैं। मित्रों के हिसाब से ये श्रेष्ठतर मित्र साबित हो सकते हैं।

यदि आपका जन्म 15 दिसम्बर से 23 जनवरी के बीच में हुआ तो आपका भाग्योदय 32 वर्ष की आयु के पश्चात् सम्भव है। बचपन में आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं कही जा सकती है। ऐसे व्यक्ति यौवनकाल में ही विवाह करने के पक्ष में रहते हैं। आपको व्यवसाय व प्रेम दोनों क्षेत्रों में शत्रुओं से संघर्ष करना पड़ेगा। गुरु पीतवर्णित होने से पीले रंग की वस्तु आपके अनुकूल रहेगी। यदि आप अनुसंधानात्मक कार्यों में रुचि लेंगे तो सफलता आपके कदम चूमेगी। आपका जीवन रत्न पुखराज है।

नक्षत्रानुसार फलादेश

ये यो भा भी	भू धा फा ढा	भे
मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा

मूलं च पूर्वाषाढोत्तराषाढा पादैको धनुः

धनु राशि में मूल नक्षत्र संपूर्ण और पूर्वाषाढ़ा संपूर्ण तथा उत्तराषाढ़ा का प्रथम चरण आता है। इस तरह 0/0/0 अंश से 30/00/00 तक एक राशि धनु संपूर्ण होती है। धनु राशि का स्वामी गुरु है। अतः यह राशि गुरु के संपूर्ण प्रभुत्व में है।

मूल नक्षत्र के चारों चरणों में नवांशेश क्रमशः मं. शु. । बु. व चं. है। इनका केतु व गुरु से समन्वय होकर फलादेश बनता है।

चंद्रमा पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में

व्यभीष्टितानंदकलत्रमानी,

नरोम्बुदैवेदृढसौहृदश्च।

यदि जन्म समय पर चंद्रमा पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में हो तो मनुष्य को हर प्रकार का सुख प्राप्त होता है। वह कलत्रवान, मानी तथा पक्का प्रेमी होता है। पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र का स्वामी शुक्र ग्रह है। शुक्र का भोग सामग्री तथा स्त्री और प्रेम से संबंध होने के कारण उक्त गुणों की प्राप्ति का होना हेतुपूर्ण है।

पूर्वाषाढ़ा प्रथम पाद–पूर्वाषाढ़ा के प्रथम पाद में यदि जन्म समय में चंद्रमा स्थित हो तो व्यक्ति श्रेष्ठ होता है। इस नक्षत्र का स्वामी सूर्य है जो राजा होने के

नाते नर श्रेष्ठ है। वह अपने प्रभाव से चंद्रमा को उच्च श्रेणी वाला श्रेष्ठ बनायेगा।

पूर्वाषाढ़ा द्वितीय पाद—पूर्वाषाढ़ा के द्वितीय पाद में यदि चंद्रमा जन्म समय में यहां स्थित हो तो मनुष्य राजा होता है। इस पाद का स्वामी बुध है और इस नक्षत्र का स्वामी शुक्र है। शुक्र और बुध दोनों शुभ ग्रह हैं। संभव है ये अपने प्रबल प्रभाव के कारण व्यक्ति की स्थिति को एक राजा की सी स्थिति बना दें।

पूर्वाषाढ़ा तृतीय पाद—पूर्वाषाढ़ा के तृतीय पाद में यदि जन्म समय में चंद्र यहां स्थित हो तो मनुष्य मीठा बोलने वाला होता है। यहां नक्षत्र स्वामी भी शुक्र है और नक्षत्र पाद स्वामी भी शुक्र है। अतः स्पष्ट है कि चंद्रमा पर शुक्र का प्रभाव अत्यधिक होगा। शुक्र एक सुसंस्कृत ग्रह है और यह सभ्य और मीठे ढंग से बोलना खूब जानता है। इसलिए इसका फल भी मीठा कहा गया है।

पूर्वाषाढ़ा चतुर्थ पाद—पूर्वाषाढ़ा के चतुर्थ पाद में यदि जन्म समय पर चंद्र स्थित हो तो व्यक्ति धनवान होता है। यहां नक्षत्र का स्वामी शुक्र है और नक्षत्र पाद का स्वामी मंगल है। प्रायः आप देखते आये होंगे कि मंगल के प्रभाव से चंद्रमा का धनदायक गुण बढ़ता है। नक्षत्र रोड़ा नहीं अटकाता।

चंद्रमा उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में

वैश्वे विनीतो बहुमित्रधर्म

युतः कृतज्ञः सुभगः शशांके।

यदि जन्म समय पर चंद्रमा उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में स्थित हो तो जातक बहुत नम्र, बहुत मित्रों वाला, धार्मिक, कृतज्ञ भाग्यशाली होता है। उत्तराषाढ़ा सूर्य का नक्षत्र है जो कि चंद्रमा का मित्र है, इसलिए यह सब शुभ फल प्रदाता है।

अगर आपका जन्म उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में है तो आप स्पष्टवादी होते हुए यथार्थता पर जोर देंगे धार्मिक दृष्टिकोण से आप व्यर्थ के पाखण्ड में विश्वास नहीं रखते है। मानव मात्र से प्रेम करना आप अपना पवित्र कर्म मानते हैं। प्रत्येक धर्म के अच्छे सिद्धान्त आपको ग्राह्य हैं। अतः आप विश्वसनीय व सत्यवादी व्यक्ति हैं।

उत्तराषाढ़ा प्रथम पाद—उत्तराषाढ़ा के प्रथम पाद में यदि चंद्र जन्मकुंडली में यहां स्थित हो तो जातक राजा के समान होता है यहां नक्षत्र पाद स्वामी गुरु है और नक्षत्र स्वामी सूर्य। चंद्रमा, सूर्य और गुरु तीनों राजकीय ग्रह हैं, अतः सूर्य और गुरु का चंद्र पर प्रभाव राज्यसत्ता की प्राप्ति में सहायक सिद्ध होगा।

उत्तराषाढ़ा द्वितीय पाद—उत्तराषाढ़ा के द्वितीय पाद में यदि चंद्रमा जन्मकुंडली में यहां स्थित हो तो व्यक्ति मित्रों का विरोधी होता है। यहां नक्षत्र पाद का स्वामी

शनि बनता है जो कि चंद्र का शत्रु है और नक्षत्र स्वामी सूर्य का भी। अतः विरोध की भावना चंद्र में उत्पन्न हो सकती है।

उत्तराषाढ़ा तृतीय पाद–उत्तराषाढ़ा के तृतीय पाद में यदि चंद्रमा जन्मकुंडली में स्थित हो तो व्यक्ति मान प्राप्त करता है। यहां नक्षत्र पाद का स्वामी शनि है। यह कैसे मान दे सकता है विचारणीय विषय है। केवल सूर्य मानप्रद है। अतः व्यक्ति का सम्मान विवादास्पद विषय हो जायेगा।

उत्तराषाढ़ा चतुर्थ पाद–उत्तराषाढ़ा के चतुर्थ पाद में यदि चंद्रमा जन्मकुंडली में यहां स्थित हो तो मनुष्य का धर्म से लगाव वाला होता है। इस नक्षत्र पाद का स्वामी एक परम धार्मिक ग्रह गुरु है जिसके प्रभाव द्वारा व्यक्ति का धार्मिक हो जाना सहज ही में समझा जा सकता है। नक्षत्र स्वामी सूर्य भी धार्मिक अथवा सात्विक है, अतः यह भी इस दिशा में सहायक ही है, बाधक नहीं।

धनुलग्न की महिला जातक

धनुलग्न में जन्मी कन्या स्थूल होंठ, स्थूल दांत और नाक वाली, कफ-वात प्रकृति, पुष्ट बाहु और जांघ वाली, ज्ञानवती होती है। यह काम करने में अति चतुर लेकिन पति की बातों का विरोध भी करती है। जातिका मनपसंद कार्य की तरफ झुकाव ज्यादा रखती है। प्रायः पेट दर्द की शिकायत या गैस ट्रबल बनी रहती है। अन्य औरतों के साथ प्रेमपूर्ण व्यवहार बहुत ही कम रखती है। बुधवार व्रत, चैत्र महीना ये हमेशा हर नवीन कार्य के लिए शुभ रहता है। संतान नियोजित न कराने पर अधिक संतान दे सकती हैं। इसे गिरकर चोट लगना, आग का भय बार-बार बन सकता है। अंत में मुख रोग या कफ से आयु क्षीण होती है। जातिका की आयु 50-65 वर्ष तक होती है। आगे का फल विशेष योगायोगों पर निर्भर है।

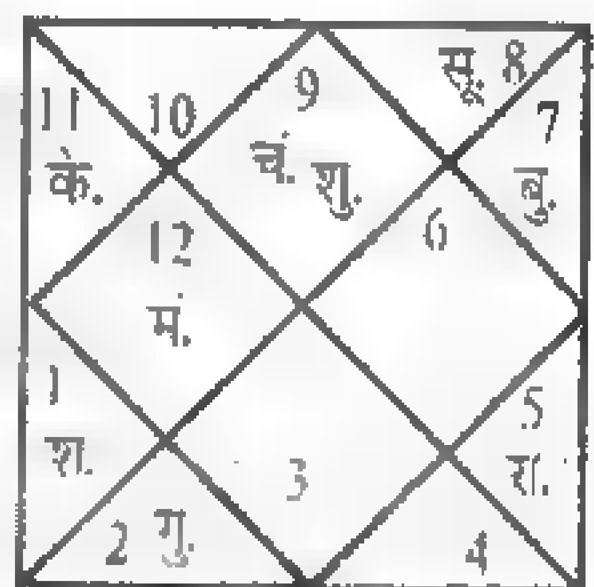
इस लग्न वाली औरतों की संतान सुंदर होती है। परन्तु उनमें ज्यादातर झगड़े की शौकीन होती हैं या फिर साहसी कर्म में लग जाती हैं। जातिका कठोर स्वभाव की होती है। धनुलग्न वाली जातिका स्वयं भी प्रेम कर और दिखावा ज्यादा करती है। अतः लोगों से प्रेम इसे कम मिलता है।

धनुलग्नानुसार शुभाशुभ फल देने वाले ग्रह

- ❑ लग्नेश और चतुर्थेश गुरु शुभ ग्रह है। फिर भी इसको केन्द्राधिपति दोष होने के कारण इसका फल मध्यम प्राप्त होता है। यदि गुरु स्वगृही होगा तो 'हंस योग' करेगा और उत्तम फल देगा।
- ❑ धनेश और तृतीयेश शनि मारक भी है और अशुभ फल प्रदान करता है।
- ❑ पंचमेश और द्वादशेश मंगल त्रिकोणेश होने से शुभ फल प्रदान करता है।

- षष्ठेश और लाभेश शुक्र पाप ग्रह है तथा अशुभ फल करने वाला है।
- सप्तमेश और दशमेश बुध मारक ग्रह है और केन्द्राधिपति दोषी है। यह अशुभ फल प्रदान करता है। बुध स्वगृही होने पर 'भद्र योग' करेगा। अच्छा फल देगा इसलिए मध्यम है।
- अष्टमेश चंद्रमा पापी है यहां पर 'गजकेसरी योग' आदि बनते हों तो वे शुभ फल प्रदान नहीं करते हैं। यह चंद्रमा सम है फिर भी जिस भाव में बैठेगा उसका फल कमजोर करेगा।
- नवमेश सूर्य उत्तम फल प्रदान करेगा और शुभ है। इस कुंडली में मंगल और सूर्य की युति या कोई संबंध हो तो शुभ योग होगा। इस कुंडली का प्रधान ग्रह सूर्य है। उसका गुरु से योग व संबंध भी शुभ होगा, सफल योग देगा।
- धनु राशि कालपुरुष का नवां अंग नितंब है। यानि हीपस है। इसलिए धनु राशि में गुरु नवम भाव और नवमेश सूर्य अगर पाप प्रभावी हो तो नितंबों में रोग होंगे।
- इस कुंडली में मंगल और बुध की युति केन्द्र और त्रिकोण का संबंध होने पर भी 'निष्फल योग' होगा, फलदायी नहीं होगा।
- इस कुंडली में मंगल और गुरु के योग या बुध व सूर्य के योग लक्ष्मीदायक होंगे।

उदाहरण–



- यह स्त्री रसायन शास्त्र की व्याख्याता है। लग्न में चंद्रमा और शुक्र की युति होने के कारण अंतर्जातीय विवाह हुआ, अष्टमेश और एकादशेश की युति लग्न में और मंगल का उस पर दशम प्रभाव होने के कारण अंतर्जातीय विवाह हुआ।
- कुंडली में सूर्य और मंगल मंगलीक है। इसलिए विलम्ब से विवाह हुआ।
- गुरु का सूर्य से संबंध होने से भाग्येश और लग्नेश का संबंध हो गया। इससे खूब धन, भवन, वाहन, सरकारी नौकरी पति का सुख पूर्ण।
- पंचम स्थान में शनि नीच का वक्रीय होने से संतानहीन।
- सप्तमेश बुध लाभ भवन में गुरु के साथ होने से शुभ मध्यत्व में पति प्रोफेसर मिला, विवाह 30 वर्ष के पश्चात् हुआ।
- तृतीय शनि नीच का वक्री होने से पांच बहनें हो गईं और सभी की उच्च घराने में शादी हुई।

- तृतीयेश शनि तीसरे से तीसरा होने के कारण 'विपरीत राजयोग' से धन की वृद्धि खूब हुई।
- मंगल का चंद्रमा पर प्रभाव होने प्रसिद्धि और जिद्दी।
- बुध का शनि से संबंध होने से कमीशन द्वारा लाखों की आय।
- भाग्येश 12वें और भाग्य स्थान में राहु का स्थान परिवर्तन।
- गुरु और शुक्र का आपस में स्थान परिवर्तन होने से अतिधनाढ्य और वैभवशाली जीवन।

अन्य योग

- लग्न में शनि होने से उत्तम फल की प्राप्ति राज्य से भी सुख की प्राप्ति व राजा के समान बने।
- लग्न में गुरु 'हंस योग' से सुखी पाप प्रभावी हो तो पेट, तिल्ली में रोग, नितम्ब में कष्ट, जनता के क्रोध का भागी।
- लग्नस्थ शनि+मंगल योग वाला होने से जातक आत्महत्या करेगा।
- गुरु बलवान हो तो माता व छोटे भाइयों से लाभ होगा।
- लग्न में शनि+शुक्र हो तो विवाह सुख अच्छा नहीं मिलता।
- लग्न में चंद्र+शुक्र हो तो विवाह देर से होगा व सुख कमजोर होगा।
- शनि उच्चस्थ हो तो सुंदर फल देगा। जातक उच्च कोटि के तर्क का धनी होगा। धन प्राप्ति छोटे बहन या भाइयों से होगा।
- पंचम भाव में नीच का शनि अपनी दशा में खूब सुख देता है तथा धनी बना देता है।
- केवल शुक्र लग्न में हो तो विवाह विलम्ब से होगा पर पति अच्छा मिलेगा। प्रेम भी खूब रहेगा। धन स्थान में गुरु।शनि युति से लक्ष्मी योग बनेगा पर शनि या गुरु वक्री हो तो साधारण योग ही रहेगा।

चंद्रमा मूल नक्षत्र में

सुखी न हिंस्रो धनमानभोग
युतः स्थिरो मूलगतेशशांके।

यदि जन्म समय पर चंद्रमा मूल नक्षत्र में स्थिर हो तो मनुष्य सुख से युक्त, हिंसा रहित, धनी, मानी, भोगी और स्थित होता है।

मूल नक्षत्र का स्वामी केतु है जो कि चंद्रमा के मित्र मंगल का फल प्रदान करता है। अतः धन, मान, भोग, सुख सभी उपयुक्त हैं। मंगल यद्यपि हिंसक है, परन्तु यहां मोक्ष कारक के रूप में होकर तथा चंद्रमा के प्रभाव में आकर यह हिंसा को त्याग कर कार्य करता है।

यदि आपका जन्म मूल नक्षत्र में हुआ है तो आप विशेष प्रभावशाली व्यक्ति होने के साथ-साथ बुद्धिमान ईमानदार तथा उदार हृदय के हैं। पागड़े जीत वाली कहावत आप पर लागू होती है। आप बिना प्रत्युत्तर की भावना के दूसरों की भलाई करते रहते हैं। मानव मात्र की सेवा आपका धर्म है। आप सामाजिक कार्यों में हिस्सा लेते हैं। गुरु से प्रभावित व्यक्तियों में बड़े गजब की नेतृत्व शक्ति होती है। यदि आप राजनीतिक कार्य कलापों में सक्रिय हिस्सा लें तो शीघ्र ही आप उच्च पदस्थ नेता बन सकते हैं।

मूल नक्षत्र

यह गंडात नक्षत्र है। इसकी कर्मकांडी लोग शांति भी करवाते हैं। मूल नक्षत्र धनु राशि के 3/20/0 अंश से प्रारंभ होकर धनु के 12/20/00 तक रहता है। प्रत्येक चरण 3/20/00 का होता है।

मूल नक्षत्र प्रथम चरण—मूल नक्षत्र के प्रथम चरण में यदि चंद्रमा स्थित हो तो व्यक्ति भोगी होता है। यहां नक्षत्र चरण का स्वामी मंगल है और नक्षत्र का स्वामी केतु। केतु भी मंगल रूप है। मंगल चूंकि भौतिकता प्रिय भोगी ग्रह है, इसके प्रभाव से भोग का गुण आ जाना स्वाभाविक ही है।

मूल नक्षत्र द्वितीय चरण—मूल नक्षत्र के द्वितीय पाद में यदि चंद्रमा स्थित हो तो मनुष्य त्यागी होता है। इस नक्षत्र चरण का स्वामी शुक्र होता है। शुक्र प्रेम करने वाला ग्रह है, अतः अपने प्रभाव द्वारा चंद्रमा में प्रेम का गुण भरकर त्याग करवा सकता है।

मूल नक्षत्र तृतीय चरण—मूल नक्षत्र के तृतीय चरण में यदि चंद्रमा स्थित हो तो मनुष्य अच्छे मित्रों वाला होता है। इस नक्षत्र चरण का स्वामी बुध है जिसे केतु का फल करना है तथा केतु मंगलवत् फल करता है और मंगल चंद्र का मित्र है। अतः मित्रों वाली बात घट सकती है।

मूल नक्षत्र चतुर्थ चरण—मूल नक्षत्र के चतुर्थ चरण में यदि चंद्रमा स्थित हो तो व्यक्ति राजा होता है। इस नक्षत्र चरण का स्वामी चंद्र है। अपने ही नक्षत्र चरण में और केतु द्वारा सहायता पाकर चंद्र भाव का अर्थात् धन भाव पदवी का उत्तम फल कर सकता है। इसी उत्तम फल का नाम राज्य है।

□□□

जन्माक्षर (जन्मपत्रिका) भरने के लिये विशेष चार्ट

क्र.	नक्षत्र	नक्षत्र अक्षर	राशि	स्वामी	योनि	गण	वर्ण	भुज्जा	हंस	नाड़ी	वश्य	पाया	वर्ग	जन्म दशा	दशा वर्ष
1	अश्विनी	चू,चे,चो,ला	मेष	मंगल	अश्व	देव	क्षत्रीय	पूर्व	अग्नि	आद्य	चतु.	सोना	सिंह 3 हि. 1	केतु	7
2.	भरणी	ली,लू,ले,लो	मेष	मंगल	गज	मनु.	क्षत्रीय	पूर्व	अग्नि	मध्य	चतु.	सोना	हिरण	शुक्र	20
3.	कृतिका	अ	मेष	मंगल	मीढ़ा	राक्षस	क्षत्रीय	पूर्व	अग्नि	अन्त्य	चतु.	सोना	गरुड़	सूर्य	6
3.	कृतिका	ई,उ,ए	वृष	शुक्र	मीढ़ा	राक्षस	वैश्य	पूर्व	भूमि	अन्त्य	चतु.	सोना	गरुड़	सूर्य	6
4.	रोहिणी	ओ,वा,वी,वू	वृष	शुक्र	सर्प	मनु.	वैश्य	पूर्व	भूमि	अन्त्य	चतु.	सोना	ग. 1 हि. 3	चंद्र	10
5.	मृगशिरा	वे,वो	वृष	शुक्र	सर्प	देव	वैश्य	पूर्व	भूमि	मध्य	चतु.	सोना	हिरण	मंगल	7
5.	मृगशिरा	का,की	मिथुन	बुध	सर्प	देव	शूद्र	पूर्व	वायु	मध्य	द्विप	सोना	बिलाड़	मंगल	7
6.	आर्द्रा	कु,घ,ङ,छ	मिथुन	बुध	श्वान	मनु.	शूद्र	मध्य	वायु	आद्य	द्विप	चांदी	बि. 3 सि.1	राहु	18
7.	पुनर्वसु	के,को,ह	मिथुन	बुध	मार्जार	देव	शूद्र	मध्य	वायु	आद्य	द्विप	चांदी	बि. 2 मी. 1	गुरु	16
7.	पुनर्वसु	ही	कर्क	चन्द्र	मार्जार	देव	विप्र	मध्य	जल	आद्य	द्विप	चांदी	मीढ़ा	गुरु	16

क्र.	नक्षत्र	नक्षत्र अक्षर	राशि	स्वामी	योनि	गण	वर्ण	भुज्जा	हंस	नाड़ी	वश्य	पाया	वर्ग	जन्म दशा	दशा वर्ष
8.	पुष्य	हू,हे,हो,डा	कर्क	चन्द्र	मीढ़ा	देव	विप्र	मध्य	जल	मध्य	द्विप	चांदी	मी. 3 श्वा. 1	शनि	19
.9.	आश्लेषा	डी,डू,डे,डो	कर्क	चन्द्र	मार्जार	राक्षस	विप्र	मध्य	जल	आद्य	द्विप	चांदी	श्वान	बुध	17
10.	मघा	मा,मी,मू,मो	सिंह	सूर्य	मूषक	राक्षस	क्षत्रिय	मध्य	वायु	आद्य	चतु.	चांदी	मूषक	केतु	7
11.	पूर्व फा.	मो,टा,टी,टू	सिंह	सूर्य	मूषक	मनुष्य	क्षत्रिय	मध्य	वायु	मध्य	चतु.	चांदी	मू. 3 श्वा. 3	शुक्र	20
12	उ. फा.	टे	सिंह	सूर्य	गौ	मनुष्य	क्षत्रिय	मध्य	वायु	आद्य	चतु.	चांदी	श्वान	सूर्य	6
12.	उ. फा.	टो,पा,पी	कन्या	बुध	गौ	मनुष्य	वैश्य	मध्य	भूमि	आद्य	द्विपद	चांदी	श्वा. 1 मू. 2	सूर्य	6
13.	हस्त	पू,ष,ण,ठ	कन्या	बुध	भैंस	देव	वैश्य	मध्य	भूमि	आद्य	द्विपद	चांदी	मू. 1 मी. 1 श्वा. 2	चंद्र	10
14.	चित्रा	पे,पो	कन्या	बुध	व्याघ्र	राक्षस	वैश्य	मध्य	भूमि	मध्य	द्विपद	चांदी	मूषक	मंगल	7
14.	चित्रा	रा,री	तुला	शुक्र	व्याघ्र	राक्षस	शूद्र	मध्य	वायु	मध्य	द्विपद	चांदी	हिरण	मंगल	7
15.	स्वाति	रू,रे,रो,ता	तुला	शुक्र	भैंस	देव	शूद्र	मध्य	वायु	अन्त्य	द्विपद	चांदी	हि. 3 सर्प 1	राहु	18
16.	विशाखा	ती,तू,ते	तुला	शुक्र	मध्य	राक्षस	शूद्र	मध्य	वायु	अन्त्य	द्विपद	ताम्बा	सर्प	गुरु	16
16.	विशाखा	तो	वृश्चिक	मंगल	मध्य	राक्षस	विप्र	मध्य	जल	अन्त्य	कीट	ताम्बा	सर्प	गुरु	16

क्र.	नक्षत्र	नक्षत्र अक्षर	राशि	स्वामी	योनि	गण	वर्ण	भुञ्जा	हंस	नाड़ी	वश्य	पाया	वर्ग	जन्म दशा	दशा वर्षा
17.	अनुराधा	ना,नी,नू,ने	वृश्चिक	मंगल	मृग	देव	विप्र	मध्य	जल	व्याघ्र	कीट	ताम्बा	सर्प	शनि	19
18.	ज्येष्ठा	नो,या,यी,यू	वृश्चिक	मंगल	मृग	राक्षस	विप्र	अन्त्य	जल	आद्य	कीट	ताम्बा	सर्प 1 हिरण 3	बुध	17
19.	मूल	ये,यो,भा,भी	धनु	गुरु	श्वान	राक्षस	क्षत्रिय	अन्त्य	अग्नि	आद्य	द्विपद	ताम्बा	मूषक	केतु	7
20.	पूर्वाषाढ़ा	भू,धा,फा,ढा	धनु	गुरु	कपि	मनुष्य	क्षत्रिय	अन्त्य	अग्नि	मध्य	द्विपद	ताम्बा	1 मू. 1 स. 1 मू. 1 श्वान	शुक्र	20
21.	उ. षा.	भे	धनु	गुरु	नकुल	मनुष्य	क्षत्रिय	अन्त्य	अग्नि	अन्त्य	द्विपद	ताम्बा	मूषक	सूर्य	6
21.	उ. षा.	भो,जा,जी	मकर	शनि	नकुल	मनुष्य	वैश्य	अन्त्य	भूमि	अन्त्य	चतु.	ताम्बा	1 मू. 2 सिं.	सूर्य	6
22.	अभिजित्	जू,जे,जो,खा	मकर	शनि	नकुल	मनुष्य	वैश्य	अन्त्य	भूमि	अन्त्य	चतु.	ताम्बा	सिं. 3 बि. 1	×	×
23.	श्रवण	खी,खू,खे,खो	मकर	शनि	कपि	देव	वैश्य	अन्त्य	भूमि	अन्त्य	चतु.	ताम्बा	बिलाड़	चन्द्र	10
24.	धनिष्ठा	गा,गी	मकर	शनि	सिंह	राक्षस	वैश्य	अन्त्य	भूमि	मध्य	चतु.	ताम्बा	बिलाड़	मंगल	7
24.	धनिष्ठा	गू, गे	कुम्भ	शनि	सिंह	राक्षस	शूद्र	अन्त्य	वायु	मध्य	द्विपद	ताम्बा	बिलाड़	मंगल	7
25.	शतभिषा	गो,सा,सी,सू	कुम्भ	शनि	अश्व	राक्षस	शूद्र	अन्त्य	वायु	आद्य	द्विपद	लोहा	1 बि. 3 मी	राहु	18
26.	पूर्वा भा.	से,सो,द	कुम्भ	शनि	सिंह	मनुष्य	शूद्र	अन्त्य	वायु	आद्य	द्विपद	लोहा	2 मी. 1 सर्प	गुरु	16

क्र.	नक्षत्र	नक्षत्र अक्षर	राशि	स्वामी	योनि	गण	वर्ण	भुञ्जा	हंस	नाड़ी	वश्य	पाया	वर्ग	जन्म दशा	दशा वर्ष
26.	पूर्व भा.	दी	मीन	गुरु	सिंह	मनुष्य	विप्र	अन्त्य	जल	आद्य	जल	लोहा	सर्प	गुरु	16
27.	उ. भा.	दू,थ,झ,ञ	मीन	गुरु	गौ	मनुष्य	विप्र	अन्त्य	जल	मध्य	जल	लोहा	2 सर्प, 2 सिंह	शनि	19
28.	रेवती	दे,दो,चा,ची	मीन	गुरु	गज	देव	विप्र	पूर्व	जल	अन्त्य	जल	सोना	2 सर्प, 2 सिंह	बुध	17

विभिन्न नक्षत्रों का ग्रहों के साथ सम्बन्ध

	क्र.	नक्षत्र नाम	नक्षत्र देवता	नक्षत्र स्वामी	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
मेष	1	अश्विनी	अश्वि. कुमार	केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	स्व.
	2.	भरणी	यम	शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	शत्रु	स्व.	मित्र	शत्रु	शत्रु
	3.	कृतिका	अग्नि	सूर्य	स्व.	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
वृष	4.	रोहिणी	ब्रह्मा	चंद्र	मित्र	स्व.	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	5.	मृगशिरा	चन्द्र	मंगल	मित्र	मित्र	स्व.	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
मिथुन	6.	आर्द्रा	रुद्र	राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	स्व.	मित्र
	7.	पुनर्वसु	अदिति	गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	सम	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
कर्क	8.	पुष्य	गुरु	शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	मित्र
	9.	आश्लेषा	सर्प	बुध	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	सम
सिंह	10.	मघा	पितर	केतु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	स्व.
	11.	पू. फा.	भग	शुक्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	स्व.	मित्र	मित्र	मित्र
	12	उ. फा.	अर्यमा	सूर्य	स्व.	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	महाशत्रु	शत्रु	शत्रु
कन्या	13.	हस्त	आदित्य	चन्द्र	मित्र	स्व.	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	14.	चित्रा	विश्वकर्मा	मंगल	मित्र	मित्र	स्व.	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु

	क्र.	नक्षत्र नाम	नक्षत्र देवता	नक्षत्र स्वामी	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तुला	15.	स्वाति	वायु	राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	स्व.	मित्र
	16.	विशाखा	इन्द्राग्नि	गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	स्व.	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
शनि	17.	अनुराधा	मित्र	शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	स्व.	मित्र	मित्र
	18.	ज्येष्ठा	इन्द्र	बुध	शत्रु	शत्रु	शत्रु	स्व.	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	सम
धनु	19.	मूला	नैऋति	केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	स्व.
	20.	पू. षा.	उदक	शुक्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र.	शत्रु	स्व.	मित्र	मित्र	मित्र
मकर	21.	उ. षा.	विश्वेदेव	सूर्य	स्व.	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	22.	श्रवंण	विष्णु	चन्द्र	मित्र	स्व.	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	23.	धनिष्ठा	वसु	मंगल	मित्र	मित्र	स्व.	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	24.	शतभिषा	वरुण	राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	स्व.	मित्र
कुंभ	25.	पू. भा.	अजकचरण	गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	स्व.	शत्रु	शत्रु	सम	सम
	26.	उ. भा.	अहिर्बुध्न्य	शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	स्व.	मित्र	मित्र
मीन	27.	रेवती	पूषा	बुध	शत्रु	शत्रु	शत्रु	स्व.	शत्रु	मित्र	मित्र	सम	सम

नक्षत्र चरण, नक्षत्रस्वामी एवं नक्षत्र चरणस्वामी

मेष राशि											
1. अश्विनी (केतु)				2. भरणी (शुक्र)				3. कृतिका (सूर्य)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
चू.	0/3/20/0	1	मं.	ली.	0/16/40/0	1	सू.	आ	0/30/0/0	1	गु.
चे.	0/6/40/0	2	शु.	लू	0/20/0/0	2	बु.	–	–	–	–
चो	0/10/0/0	3	बु.	ले.	0/23/20/0	3	शु.	–	–	–	–
ला	0/13/20/4/	4	चं.	लो	0/26/40/0	4	मं.	–	–	–	–

वृष राशि											
3. कृतिका (सूर्य)				4. रोहिणी (चंद्र)				5. मृगशिरा (मंगल)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
ई	1/30/20/0	2	श.	ओ	1/13/20/0	1	मं.	वे	0/20/40/1	1	सू.
उ	1/6/40/0	3	श	वा	1/16/40/0	2	शु.	वो	0/30/0/0	2	बु.
				वी	1/20/0/0	3	बु.	–	–	–	–
ए	1/10/0/0	4	मं.	वू	1/23/20/0	4	चं.	–	–	–	–

मिथुन राशि

5. मृगशिरा (मंगल)

अक्षर		चरण	स्वामी
का	2/3/20/0	3	शु.
की	2/6/40/0	4	मं.

6. आर्द्रा (राहु)

अक्षर		चरण	स्वामी
कु	2/10/0/0	1	गु.
घ	2/13/20/0	2	श.
ड़	2/16/40/0	3	श.
छ	2/20/0/0	4	गु.

7. पुनर्वसु (गुरु)

अक्षर		चरण	स्वामी
के	2/23/20/0	1	मं.
को	2/26/40/0	2	शु.
हा	2/30/0/0	3	बु.
—	—	—	—

कर्क राशि

7. पुनर्वसु (गुरु)

अक्षर		चरण	स्वामी
ही	3/30/20/0	4	चं.
—	—	—	—
—	—	—	—
—	—	—	—

8. पुष्य (शनि)

अक्षर		चरण	स्वामी
हू	3/6/40/0	1	सू.
हे	3/10/0/0	2	बु.
हो	3/13/20/0	3	शु.
डा	3/16/40/0	4	मं.

9. आश्लेषा (बुध)

अक्षर		चरण	स्वामी
डी	3/20/0/0	1	गु.
डू	3/23/20/0	2	श.
डे	3/26/40/0	3	श.
डो	3/30/0/0	4	गु.

सिंह राशि

10. **मघा** (केतु)				11. **पूर्वाफाल्गुनी** (शुक्र)				12. **उत्तराफाल्गुनी** (सूर्य)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
मा	4/3/20/0	1	मं.	मो	4/16/40/0	1	सू.	टे	4/30/0/0	1	गु.
मी	4/6/40/0	2	शु.	टा	4/20/0/0	2	बु.	–	–	–	–
मू	4/10/0/0	3	बु.	टी	4/23/20/0	3	शु.	–	–	–	–
मे	4/13/20/0	4	चं.	टू	4/26/40/0	4	मं.	–	–	–	–

कन्या राशि

12. **उत्तराफाल्गुनी** (सूर्य)				13. **हस्त** (चंद्र)				14. **चित्रा** (मंगल)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
टो	5/3/20/0	2	श.	पू	5/13/20/0	1	मं.	पे	5/26/40/0	1	सू.
पा	5/6/40/0	3	श.	ष	5/16/40/0	2	शु.	पे	5/30/0/0	2	बु.
पी.	5/10/0/0	4	गु.	ण	5/20/0/0	3	बु.	–	–	–	–
–	–	–	–	ठ	5/23/20/0	4	चं.	–	–	–	–

तुला राशि											
14. **चित्रा** (मंगल)				15. **स्वाति** (राहु)				16. **विशाखा** (गुरु)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
रा	6/3/20/0	3	शु.	रू	6/10/0/0	1	गु.	ती	6/23/20/0	1	मं.
री	6/6/40/0	4	मं.	रे	6/13/20/0	2	श.	तू	6/26/40/0	2	शु.
–	–	–	–	रो	6/16/40/0	3	श.	ते	6/30/0/0	3	बु.
–	–	–	–	ता	6/20/0/0	4	गु.	–	–	–	–

वृश्चिक राशि											
16. **विशाखा** (गुरु)				17. **अनुराधा** (शनि)				18. **ज्येष्ठा** (बुध)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
तो	7/3/20/0	4	चं.	ना	7/6/40/0	1	सू.	नो	7/20/0/0	1	गु.
–	–	–	–	नी	7/10/0/0	2	बु.	या	7/23/20/0	2	श.
–	–	–	–	नू	7/13/20/0	3	शु.	यी	7/26/40/0	3	श.
–	–	–	–	ने	7/16/40/0	4	मं.	यू	7/30/0/0	4	शु.

धनु राशि											
17. **मूल** (केतु)				18. **पूर्वाषाढ़ा** (शुक्र)				21. **उत्तराषाढ़ा** (सूर्य)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
ये	8/3/20/0	1	मं.	भू	8/16/40/0	1	सू.	भे	8/30/0/0	1	गु.
यो	8/6/40/0	2	शु.	धा	8/20/0/0	2	बु.	–	–	–	–
या	8/10/0/0	3	बु.	फा	8/23/20/0	3	शु.	–	–	–	–
यी	8/13/20/0	4	चं.	ढा	8/26/40/0	4	मं.	–	–	–	–

मकर राशि											
21. **उत्तराषाढ़ा** (सूर्य)				22. **श्रवण** (चंद्र)				23. **धनिष्ठा** (मंगल)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
भो	9/3/20/0	2	श.	खी	9/13/20/0	1	मं.	गा	9/26/40/0	1	सू.
जा	9/6/40/0	3	श.	खू	9/16/40/0	2	शु.	गी	9/30/0/0	2	बु.
जी	9/10/0/0	4	गु.	खे	9/20/0/0	3	बु.	–	–	–	–
–	–	–	–	खो	9/23/20/0	4	चं.	–	–	–	–

कुंभ राशि

23. धनिष्ठा (मंगल)				24. शतभिषा (राहु)				26. पूर्वाभाद्रपद (गुरु)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
गू	10/3/20/0	3	शु.	गो	10/10/0/0	1	गु.	से	10/23/20/0	1	म.
गे	10/6/40/0	4	मं.	सा	10/13/20/0	2	श.	सो	10/26/40/0	2	श.
—	—	—	—	सी	10/16/40/0	3	श.	दा	10/30/0/0	3	बु.
—	—	—	—	सू	10/19/0/04	4	गु.	—	—	—	—

मीन राशि

26. पूर्वाभाद्रपद (गुरु)				27. उत्तराभाद्रपद (शनि)				28. रेवती (बुध)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
दी	10/3/20/0	4	चं.	दू	11/6/40/4	1	सू.	दे	11/20/0/0	1	गु.
—	—	—	—	थ	11/10/0/0	2	बु.	दो	11/23/20/0	2	श.
—	—	—	—	झ	11/13/20/0	3	शु.	चा	11/26/40/0	3	श.
—	—	—	—	ञ	11/16/40/0	4	गु.	ची	11/30/0/0	4	गु.

धनुलग्न पर अंशात्मक फलादेश

धनुलग्न, अंश 0 से 1

1. लग्न नक्षत्र–मूल
2. नक्षत्र पद–I
3. नक्षत्र अंश–8/3/20/0
4. वर्ण–क्षत्रिय
5. वश्य–द्विपद
6. योनि–श्वान
7. गण–राक्षस
8. नाड़ी–आद्य
9. नक्षत्र देवता–नैऋति
10. वर्णाक्षर–ये
11. वर्ग–हरिण
12. लग्न स्वामी–गुरु
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–केतु
14. नक्षत्र चरण स्वामी–मंगल
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
18. प्रधान विशेषता–'भोगी'

मूल नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति सभी प्रकार की सुख-सुविधाओं से युक्त जीवन जीने वाला, हिंसा रहित, धनी-मानी, भोगी एवं स्थिर स्वभाव का होता है। मूल नक्षत्र का देवता नैऋति व स्वामी केतु है। मूल नक्षत्र के प्रथम चरण का स्वामी मंगल है। लग्नेश गुरु की नक्षत्र स्वामी केतु से शत्रुता है। नक्षत्र चरण स्वामी मंगल की भी केतु से शत्रुता है। फलतः जातक को भौतिक सुखों की प्राप्ति हेतु काफी संघर्ष करना पड़ेगा।

यहां लग्न जीरो (Zero) से एक अंश के भीतर होने से मृतावस्था (Combust) में है, कमजोर है। जातक का लग्न बली नहीं होने से विकास रुका हुआ रहेगा। लग्नेश गुरु की दशा निर्बल रहेगी। सूर्य की दशा अच्छी जायेगी।

धनुलग्न, अंश 1 से 2

1. लग्न नक्षत्र–मूल

2. नक्षत्र पद–1

3. नक्षत्र अंश–8/3/20/0

4. वर्ण–क्षत्रिय

5. वश्य–द्विपद

6. योनि–श्वान

7. गण–राक्षस

8. नाड़ी–आद्य

9. नक्षत्र देवता–नैर्ऋति

10. वर्णाक्षर–ये

11. वर्ग–हरिण

12. लग्न स्वामी–गुरु

13. लग्न नक्षत्र स्वामी–केतु

14. नक्षत्र चरण स्वामी–मंगल

15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु

17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु

18. प्रधान विशेषता–'भोगी'

मूल नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति सभी प्रकार की सुख-सुविधाओं से युक्त जीवन जीने वाला, हिंसा रहित, धनी-मानी, भोगी एवं स्थिर स्वभाव का होता है। मूल नक्षत्र का देवता नैर्ऋति व स्वामी केतु है। मूल नक्षत्र के प्रथम चरण का स्वामी मंगल है। लग्नेश गुरु की नक्षत्र स्वामी केतु से शुत्रता है। नक्षत्र चरण स्वामी मंगल की भी केतु से शत्रुता है। फलत: जातक को भौतिक सुखों की प्राप्ति हेतु काफी संघर्ष करना पड़ेगा।

लग्न एक से दो अंश के भीतर होने से 'उदित अंशों' का है, बलवान है। जातक लग्न बली एवं चेष्टावान होगा। लग्नेश की दशा शुभ फल देगी। लग्नेश गुरु की दशा निर्बल रहेगा। सूर्य की दशा अच्छी जायेगी। धनु राशि के दस अंशों तक गुरु मूल त्रिकोण का कहलायेगा।

धनुलग्न, अंश 2 से 3

1. लग्न नक्षत्र–मूल

2. नक्षत्र पद–1

3. नक्षत्र अंश–8/3/20/0

4. वर्ण–क्षत्रिय

5. वश्य–द्विपद

6. योनि–श्वान

7. गण–राक्षस

8. नाड़ी–आद्य

9. नक्षत्र देवता–नैर्ऋति

10. वर्णाक्षर–ये

11. वर्ग–हरिण

12. लग्न स्वामी–गुरु **13. लग्न नक्षत्र स्वामी**–केतु

14. नक्षत्र चरण स्वामी–मंगल **15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु **17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

18. प्रधान विशेषता–'भोगी'

मूल नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति सभी प्रकार की सुख-सुविधाओं से युक्त जीवन जीने वाला, हिंसा रहित, धनी-मानी, भोगी एवं स्थिर स्वभाव का होता है। मूल नक्षत्र का देवता नैऋति व स्वामी केतु है। मूल नक्षत्र के प्रथम चरण का स्वामी मंगल है। लग्नेश गुरु की नक्षत्र स्वामी केतु से शुत्रता है। नक्षत्र चरण स्वामी मंगल की भी केतु से शत्रुता है। फलतः जातक को भौतिक सुखों की प्राप्ति हेतु काफी संघर्ष करना पड़ेगा।

लग्न यहां दो से तीन अंशों के भीतर होने से बलवान है। लग्न उदित अंशों में होने से लग्नेश गुरु की दशा उत्तम फल देगी। सूर्य की दशा में जातक का भाग्योदय होगा। धनु राशि के दस अंशों तक गुरु मूल त्रिकोण का कहलाता है। अतः अत्यधिक श्रेष्ठ फल देगा।

धनुलग्न, अंश 3 से 4

1. लग्न नक्षत्र–मूल **2. नक्षत्र पद**–2

3. नक्षत्र अंश–8/3/20/0 से 8/6/40/0

4. वर्ण–क्षत्रिय **5. वश्य**–द्विपद

6. योनि–श्वान **7. गण**–मनुष्य

8. नाड़ी–आद्य **9. नक्षत्र देवता**–नैऋति

10. वर्णाक्षर–यो **11. वर्ग**–हरिण

12. लग्न स्वामी–गुरु **13. लग्न नक्षत्र स्वामी**–केतु

14. नक्षत्र चरण स्वामी–शुक्र **15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–मित्र **17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र

18. प्रधान विशेषता–'त्यागी'

मूल नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति सभी प्रकार की सुख-सुविधाओं से युक्त जीवन जीने वाला, हिंसा रहित, धनी-मानी, भोगी एवं स्थिर स्वभाव का होता है। मूल नक्षत्र का देवता नैऋति व स्वामी केतु है। मूल नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी शुक्र है। लग्नेश गुरु की नक्षत्र स्वामी केतु से शत्रुता है, परन्तु नक्षत्र चरण स्वामी शुक्र की केतु से मित्रता है। ऐसे जातक में त्याग (दान देने) की प्रवृत्ति ज्यादा होगी।

लग्न यहां तीन से चार अंशों के भीतर होने से उदित अंशों में बलवान है। लग्न उदित अंशों में होने से, लग्नेश गुरु की दशा उत्तम फल देगी। सूर्य की दशा में जातक का भाग्योदय होगा। शुक्र की दशा खराब नहीं होगी। केतु की दशा भी शुभ फल देगी। धनु राशि के दस अंशों तक गुरु मूल त्रिकोण का होगा अतः अति उत्तम फल देगा।

धनुलग्न, अंश 4 से 5

1. लग्न नक्षत्र—मूल **2. नक्षत्र पद**—2

3. नक्षत्र अंश—8/3/20/0 से 8/6/40/0

4. वर्ण—क्षत्रिय **5. वश्य**—द्विपद

6. योनि—श्वान **7. गण**—मनुष्य

8. नाड़ी—आद्य **9. नक्षत्र देवता**—नैऋति

10. वर्णाक्षर—यो **11. वर्ग**—हरिण

12. लग्न स्वामी—गुरु **13. लग्न नक्षत्र स्वामी**—केतु

14. नक्षत्र चरण स्वामी—शुक्र **15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध—मित्र **17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**—मित्र

18. प्रधान विशेषता—'त्यागी'

मूल नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति सभी प्रकार की सुख-सुविधाओं से युक्त जीवन जीने वाला हिंसा रहित, धनी-मानी, भोगी एवं स्थिर स्वभाव का होता है। मूल नक्षत्र का देवता नैऋति व स्वामी केतु है। मूल नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी शुक्र है। लग्नेश गुरु की नक्षत्र स्वामी केतु से शत्रुता है, परन्तु नक्षत्र चरण स्वामी शुक्र की केतु से मित्रता है। ऐसे जातक में त्याग (दान देने) की प्रवृत्ति ज्यादा होगी।

लग्न यहां चार से पांच अंशों के भीतर होने से बलवान है। लग्न उदित अंशों में होने से लग्नेश गुरु की दशा उत्तम फल देगी। सूर्य की दशा में जातक का भाग्योदय होगा। शुक्र की दशा खराब नहीं जायेगी। केतु की दशा भी शुभ फल देगी। धनु राशि के दस अंशों तक गुरु मूल त्रिकोण का कहलायेगा। अतः अति उत्तम फल देगा।

धनुलग्न, अंश 5 से 6

1. लग्न नक्षत्र—मूल **2. नक्षत्र पद**—2

3. नक्षत्र अंश—8/3/20/0 से 8/6/40/0

4. वर्ण—क्षत्रिय **5. वश्य**—द्विपद

6. **योनि**–श्वान
7. **गण**–मनुष्य
8. **नाड़ी**–आद्य
9. **नक्षत्र देवता**–नैऋति
10. **वर्णाक्षर**–यो
11. **वर्ग**–हरिण
12. **लग्न स्वामी**–गुरु
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–केतु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शुक्र
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्र
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
18. **प्रधान विशेषता**–'त्यागी'

मूल नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति सभी प्रकार की सुख-सुविधाओं से युक्त जीवन जीने वाला, हिंसा रहित, धनी-मानी, भोगी एवं स्थिर स्वभाव का होता है। मूल नक्षत्र का देवता नैऋति व स्वामी केतु है। मूल नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी शुक्र है। लग्नेश गुरु की नक्षत्र स्वामी केतु से शत्रुता है, परन्तु नक्षत्र चरण स्वामी शुक्र की केतु से मित्रता है। ऐसे जातक में त्याग (दान देने) की प्रवृत्ति ज्यादः होगी।

लग्न यहां पांच से छः अंशों के भीतर होने से बलवान है। लग्न उदित अंशों में होने से लग्नेश गुरु की दशा उत्तम फल देगी। सूर्य की दशा में जातक का भाग्योदय होगा। शुक्र की दशा खराब नहीं होगी। केतु की दशा भी शुभ फल देगी। धनु राशि के दस अंशों तक गुरु मूल त्रिकोण का होगा। अतः अति उत्तम फल देगा।

धनुलग्न, अंश 6 से 7

1. **लग्न नक्षत्र**–मूल
2. **नक्षत्र पद**–3
3. **नक्षत्र अंश**–8/6/40/0 से 8/10/0/0
4. **वर्ण**–क्षत्रिय
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–श्वान
7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–आद्य
9. **नक्षत्र देवता**–नैऋति
10. **वर्णाक्षर**–या
11. **वर्ग**–मूषक
12. **लग्न स्वामी**–गुरु
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–केतु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–बुध
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्र
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
18. **प्रधान विशेषता**–'सुमित्रश्च'

मूल नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति सभी प्रकार की सुख सुविधाओं से युक्त जीवन जीने वाला, हिंसा रहित, धनी-मानी, भोगी एवं स्थिर स्वभाव का होता है। मूल नक्षत्र का देवता नैऋति व स्वामी केतु है। मूल नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी बुध है। लग्नेश गुरु की नक्षत्र स्वामी केतु से शत्रुता है। नक्षत्र चरण स्वामी बुध केतु का मित्र है। ऐसे जातक के अनेक मित्र होंगे एवं सभी सुयोग्य होंगे।

यहां लग्न छह से सात अंशों के भीतर होने से 'उदित अंशों' में है, बलवान है। लग्नेश गुरु की दशा अति उत्तम फल देगी। सूर्य की दशा में जातक का भाग्योदय होगा। केतु एवं बुध की दशाएं शुभ फल देगी। धनु राशि के दस अंशों तक गुरु मूल त्रिकोण का कहलाता है, अतः अति उत्तम फल देगा।

धनुलग्न, अंश 7 से 8

1. **लग्न नक्षत्र**–मूल
2. **नक्षत्र पद**–3
3. **नक्षत्र अंश**–8/6/40/0 से 8/10/0/0
4. **वर्ण**–क्षत्रिय
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–श्वान
7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–आद्य
9. **नक्षत्र देवता**–नैऋति
10. **वर्णाक्षर**–या
11. **वर्ग**–मूषक
12. **लग्न स्वामी**–गुरु
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–केतु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–बुध
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्र
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
18. **प्रधान विशेषता**–'सुमित्रश्च'

मूल नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति सभी प्रकार की सुख-सुविधाओं से युक्त जीवन जीने वाला, हिंसा रहित, धनी-मानी, भोगी एवं स्थिर स्वभाव का होता है। मूल नक्षत्र का देवता नैऋति व स्वामी केतु है। मूल नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी बुध है। लग्नेश गुरु की नक्षत्र स्वामी केतु से शत्रुता है। नक्षत्र चरण स्वामी बुध केतु का मित्र है। ऐसे जातक के अनेक मित्र होंगे एवं सभी सुयोग्य होंगे।

यहां लग्न सात से आठ अंशों के भीतर होने से 'उदित अंशों' में है, बलवान है। लग्नेश गुरु की दशा अति उत्तम फल देगी। सूर्य की दशा में जातक का भाग्योदय होगा। केतु एवं बुध की दशाएं शुभ फल देगी। धनु राशि के दस अंशों तक गुरु मूल त्रिकोण का कहलाता है अतः अति उत्तम फल देगा।

धनुलग्न, अंश [illegible] से 9

1. **लग्न नक्षत्र**—मूल
2. **नक्षत्र पद**—3
3. **नक्षत्र अंश**—8/6/40/0 से 8/10/0/0
4. **वर्ण**—क्षत्रिय
5. **वश्य**—द्विपद
6. **योनि**—श्वान
7. **गण**—राक्षस
8. **नाड़ी**—आद्य
9. **नक्षत्र देवता**—नैऋति
10. **वर्णाक्षर**—या
11. **वर्ग**—मूषक
12. **लग्न स्वामी**—गुरु
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**—केतु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**—बुध
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**—मित्र
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**—मित्र
18. **प्रधान विशेषता**—'सुमित्रश्च'

मूल नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति सभी प्रकार की सुख-सुविधाओं से युक्त जीवन जीने वाला, हिंसा रहित, धनी-मानी, भोगी एवं स्थिर स्वभाव का होता है। मूल नक्षत्र का देवता नैऋति व स्वामी केतु है। मूल नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी बुध है। लग्नेश गुरु की नक्षत्र स्वामी केतु से शत्रुता है। नक्षत्र चरण स्वामी बुध केतु का मित्र है। ऐसे जातक के अनेक मित्र होंगे एवं सभी सुयोग्य होंगे।

यहां लग्न आठ से नौ अंशों में उदित अंशों में है, बलवान है। लग्नेश गुरु की दशा अति उत्तम फल देगी। सूर्य की दशा में जातक का भाग्योदय होगा। केतु व बुध की दशाएं शुभ फल देंगी। धनु राशि के दस अंशों तक गुरु मूल त्रिकोण का कहलाता है। अतः अति उत्तम फल देगा।

धनुलग्न, अंश 9 से 10

1. **लग्न नक्षत्र**—मूल
2. **नक्षत्र पद**—4
3. **नक्षत्र अंश**—8/10/0/0 से 8/13/20/0
4. **वर्ण**—क्षत्रिय
5. **वश्य**—द्विपद
6. **योनि**—श्वान
7. **गण**—राक्षस
8. **नाड़ी**—आद्य
9. **नक्षत्र देवता**—नैऋति
10. **वर्णाक्षर**—भी
11. **वर्ग**—मूषक

12. **लग्न स्वामी**–गुरु
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–केतु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–चंद्र
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–'नृपति'

मूल नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति सभी प्रकार की सुख–सुविधाओं से युक्त जीवन जीने वाला, हिंसा रहित, धनी-मानी, भोगी एवं स्थिर स्वभाव का होता है। मूल नक्षत्र का देवता नैऋति व स्वामी केतु है। मूल नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी चंद्र है। लग्नेश गुरु की नक्षत्र स्वामी केतु से शत्रुता है। नक्षत्र चरण स्वामी चंद्र की भी केतु से शत्रुता है। फिर भी ऐसा जातक राजा के समान ऐश्वर्य को प्राप्त करता है, क्योंकि लग्नेश गुरु एवं चंद्रमा की परस्पर मित्रता है।

यहां लग्न नौ से दस अंशों के भीतर उदित अंशों में है, बलवान है। लग्नेश गुरु की दशा उत्तम फल देगी। सूर्य की दशा में जातक का भाग्योदय होगा। चंद्रमा की दशा अनिष्ट फल नहीं देगी। धनु राशि के दस अंशों तक गुरु मूल त्रिकोण का कहलाता है अतः अति उत्तम फल देगा।

धनुलग्न, अंश 10 से 11

1. **लग्न नक्षत्र**–मूल
2. **नक्षत्र पद**–4
3. **नक्षत्र अंश**–8/10/0/0 से 8/13/20/0
4. **वर्ण**–क्षत्रिय
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–श्वान
7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–आद्य
9. **नक्षत्र देवता**–नैऋति
10. **वर्णाक्षर**–भी
11. **वर्ग**–मूषक
12. **लग्न स्वामी**–गुरु
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–केतु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–चंद्र
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–'नृपति'

मूल नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति सभी प्रकार की सुख–सुविधाओं से युक्त जीवन जीने वाला, हिंसा रहित, धनी-मानी, भोगी एवं स्थिर स्वभाव का होता है। मूल नक्षत्र का देवता नैऋति व स्वामी केतु है। मूल नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी चंद्र है। लग्नेश गुरु की नक्षत्र स्वामी केतु से शत्रुता है। नक्षत्र चरण स्वामी चंद्र का भी

केतु से शत्रुता है। फिर भी ऐसा जातक राजा के समान ऐश्वर्य को प्राप्त करता है, क्योंकि लग्नेश गुरु एवं चंद्रमा की परस्पर मित्रता है।

यहां लग्न दस से ग्यारह अंशों के भीतर 'आरोह अवस्था' में पूर्ण बली है। लग्नेश गुरु की दशा अति उत्तम फल देगी। सूर्य की दशा में जातक का भाग्योदय होगा। केतु व चंद्र की दशाएं भी शुभ फल देंगी।

धनुलग्न, अंश 11 से 12

1. **लग्न नक्षत्र**–मूल
2. **नक्षत्र पद**–4
3. **नक्षत्र अंश**–8/10/0/0 से 8/13/20/0
4. **वर्ण**–क्षत्रिय
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–श्वान
7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–आद्य
9. **नक्षत्र देवता**–नैऋति
10. **वर्णाक्षर**–भी
11. **वर्ग**–मूषक
12. **लग्न स्वामी**–गुरु
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–केतु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–चंद्र
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
18. **प्रधान विशेषता**–'नृपति'

मूल नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति सभी प्रकार की सुख-सुविधाओं से युक्त जीवन जीने वाला, हिंसा रहित, धनी-मानी, भोगी एवं स्थिर स्वभाव का होता है। मूल नक्षत्र का देवता नैऋति व स्वामी केतु है। मूल नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी चंद्र है। लग्नेश गुरु की नक्षत्र स्वामी केतु से शत्रुता है। नक्षत्र चरण स्वामी चंद्र की भी केतु से शत्रुता है। फिर भी ऐसा जातक राजा के समान ऐश्वर्य को प्राप्त करता है, क्योंकि लग्नेश गुरु एवं चंद्रमा की परस्पर मित्रता है।

यहां लग्न ग्यारह से बारह अंशों के भीतर 'आरोह अवस्था' में पूर्ण बली है। गुरु की दशा अति उत्तम फल देगी। सूर्य की दशा में जातक का भाग्योदय होगा। केतु और चंद्र की दशाएं भी शुभ फल देंगी।

धनुलग्न, अंश 12 से 13

1. **लग्न नक्षत्र**–मूल
2. **नक्षत्र पद**–4
3. **नक्षत्र अंश**–8/10/0/0 से 8/13/20/0

4. **वर्ण**—क्षत्रिय

5. **वश्य**—द्विपद

6. **योनि**—श्वान

7. **गण**—राक्षस

8. **नाड़ी**—आद्य

9. **नक्षत्र देवता**—नैऋति

10. **वर्णाक्षर**—भी

11. **वर्ग**—मूषक

12. **लग्न स्वामी**—गुरु

13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**—केतु

14. **नक्षत्र चरण स्वामी**—चंद्र

15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**—शत्रु

17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु

18. **प्रधान विशेषता**—'नृपति'

मूल नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति सभी प्रकार की सुख-सुविधाओं से युक्त जीवन जीने वाला, हिंसा रहित, धनी-मानी, भोगी एवं स्थिर स्वभाव का होता है। मूल नक्षत्र का देवता नैऋति व स्वामी केतु है। मूल नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी चंद्र है। लग्नेश गुरु की नक्षत्र स्वामी केतु से शत्रुता है। नक्षत्र चरण स्वामी चंद्र की भी केतु से शत्रुता है। फिर भी ऐसा जातक राजा के समान ऐश्वर्य को प्राप्त करता है, क्योंकि लग्नेश गुरु एवं चंद्रमा की परस्पर मित्रता है।

यहां लग्न बारह से तेरह अंशों के मध्य होने से 'आरोह अवस्था' में पूर्ण बली है। लग्नेश गुरु की दशा उत्तम फल देगी। सूर्य की दशा में जातक का भाग्योदय होगा। शुक्र की दशा अनिष्ट फल नहीं देगी।

धनुलग्न, अंश 13 से 14

1. **लग्न नक्षत्र**—पूर्वाषाढ़ा

2. **नक्षत्र पद**—1

3. **नक्षत्र अंश**—8/16/40/0

4. **वर्ण**—क्षत्रिय

5. **वश्य**—द्विपद

6. **योनि**—कपि

7. **गण**—मनुष्य

8. **नाड़ी**—मध्य

9. **नक्षत्र देवता**—उदक

10. **वर्णाक्षर**—भू

11. **वर्ग**—मूषक

12. **लग्न स्वामी**—गुरु

13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**—शुक्र

14. **नक्षत्र चरण स्वामी**—सूर्य

15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**—शत्रु

17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु

18. **प्रधान विशेषता**—'श्रेष्ठी'

पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति हर प्रकार से सुखी होता है। स्त्री-संतान के सुख से युक्त ऐसा जातक समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है। पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र का देवता उदक एवं स्वामी शुक्र है। इस नक्षत्र के प्रथम चरण का स्वामी सूर्य है। दोनों ग्रह परस्पर शत्रु होते हुए भी तेजस्वी है। फलत: ऐसा जातक अपनी जाति का तेजस्वी एवं श्रेष्ठ व्यक्ति होता है।

यहां लग्न तेरह से चौदह अंशों के मध्य 'आरोह अवस्था' में पूर्ण बली है। लग्नेश गुरु की दशा अत्यन्त श्रेष्ठ फल देगी। सूर्य की दशा में जातक का सम्पूर्ण भाग्योदय होगा एवं शुक्र की दशा अनिष्ट फल नहीं देगी।

धनुलग्न, अंश 14 से 15

1. लग्न नक्षत्र–पूर्वाषाढ़ा
2. नक्षत्र पद–1
3. नक्षत्र अंश–8/16/40/0
4. वर्ण–क्षत्रिय
5. वश्य–द्विपद
6. योनि–कपि
7. गण–मनुष्य
8. नाड़ी–मध्य
9. नक्षत्र देवता–उदक
10. वर्णाक्षर–भू
11. वर्ग–मूषक
12. लग्न स्वामी–गुरु
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–शुक्र
14. नक्षत्र चरण स्वामी–सूर्य
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
18. प्रधान विशेषता–'श्रेष्ठी'

पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति हर प्रकार से सुखी होता है। स्त्री-संतान के सुख से युक्त ऐसा जातक समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है। पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र का देवता उदक एवं स्वामी शुक्र है। इस नक्षत्र के प्रथम चरण का स्वामी सूर्य है। दोनो ग्रह परस्पर शत्रु होते हुए भी तेजस्वी है। फलत: ऐसा जातक अपनी जाति का तेजस्वी एवं श्रेष्ठ व्यक्ति होता है।

यहां लग्न चौदह से पन्द्रह अंशों के भीतर होने से आरोह अवस्था में पूर्ण बली है। लग्नेश गुरु की दशा अति उत्तम फल देगी। सूर्य की दशा में जातक का भाग्योदय होगा। शुक्र की दशा अनिष्ट फल नहीं देगी।

धनुलग्न, अंश 15 से 16

1. लग्न नक्षत्र–पूर्वाषाढ़ा
2. नक्षत्र पद–1
3. नक्षत्र अंश–8/16/40/0

4. वर्ण–क्षत्रिय
5. वश्य–द्विपद
6. योनि–कपि
7. गण–मनुष्य
8. नाड़ी–मध्य
9. नक्षत्र देवता–उदक
10. वर्णाक्षर–भू
11. वर्ग–मूषक
12. लग्न स्वामी–गुरु
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–शुक्र
14. नक्षत्र चरण स्वामी–सूर्य
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
18. प्रधान विशेषता–'श्रेष्ठी'

पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति हर प्रकार से सुखी होता है। स्त्री-संतान के सुख से युक्त ऐसा जातक समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है। पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र का देवता उदक एवं स्वामी शुक्र है। इस नक्षत्र के प्रथम चरण का स्वामी सूर्य है। दोनों ग्रह परस्पर शत्रु होते हुए भी तेजस्वी हैं। फलतः ऐसा जातक अपनी जाति का तेजस्वी एवं श्रेष्ठ व्यक्ति होता है।

यहां लग्न पन्द्रह-से सोलह अंशों के भीतर होने से आरोह अवस्था में है। लग्नेश गुरु की दशा उत्तम फल देगी। सूर्य की दशा में जातक का भाग्योदय होगा। शुक्र की दशा अनिष्ट फल नहीं देगी।

धनुलग्न, अंश 16 से 17

1. लग्न नक्षत्र–पूर्वाषाढ़ा
2. नक्षत्र पद–।
3. नक्षत्र अंश–8/16/40/0
4. वर्ण–क्षत्रिय
5. वश्य–द्विपद
6. योनि–कपि
7. गण–मनुष्य
8. नाड़ी–मध्य
9. नक्षत्र देवता–उदक
10. वर्णाक्षर–भू
11. वर्ग–मूषक
12. लग्न स्वामी–गुरु
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–शुक्र
14. नक्षत्र चरण स्वामी–सूर्य
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
18. प्रधान विशेषता–'श्रेष्ठी'

पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति हर प्रकार से सुखी होता है। स्त्री-संतान के सुख से युक्त ऐसा जातक समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है।

पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र का देवता उदक एवं स्वामी शुक्र है। इस नक्षत्र के प्रथम चरण का स्वामी सूर्य है। दोनों ग्रह परस्पर शत्रु होते हुए भी तेजस्वी हैं। फलतः ऐसा जातक अपनी जाति का तेजस्वी एवं श्रेष्ठ व्यक्ति होता है।

यहां लग्न सोलह से सत्रह अंशों के भीतर मध्य अवस्था में पूर्ण बली है। लग्नेश गुरु की दशा अति उत्तम फल देगी। सूर्य की दशा में जातक का भाग्योदय होगा। शुक्र की दशा अनिष्ट फल नहीं देगी।

धनुलग्न, अंश 17 से 18

1. लग्न नक्षत्र—पूर्वाषाढ़ा | **2. नक्षत्र पद**—2

3. नक्षत्र अंश—8/16/40/0 से 8/20/0/0

4. वर्ण—क्षत्रिय | **5. वश्य**—द्विपद

6. योनि—कपि | **7. गण**—मनुष्य

8. नाड़ी—मध्य | **9. नक्षत्र देवता**—उदक

10. वर्णाक्षर—धा | **11. वर्ग**—सर्प

12. लग्न स्वामी—गुरु | **13. लग्न नक्षत्र स्वामी**—शुक्र

14. नक्षत्र चरण स्वामी—बुध | **15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध—मित्र | **17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**—मित्र

18. प्रधान विशेषता—'राजा'

पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति हर प्रकार से सुखी होता है। स्त्री-संतान के सुख से युक्त ऐसा जातक समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है। पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र का देवता उदक, स्वामी शुक्र है। इस नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी बुध है। लग्नेश गुरु देवाचार्य एवं नक्षत्र स्वामी शुक्र दैत्याचार्य में परस्पर शत्रुता है। दोनों ही बुद्धि प्रधान ग्रह हैं। नक्षत्र चरण स्वामी बुध की नक्षत्र स्वामी शुक्र से मित्रता है। फलतः ऐसा व्यक्ति राजा तुल्य पराक्रमी एवं बुद्धिशाली होगा।

यहां लग्न सत्रह से अठारह अंशों के भीतर मध्य अवस्था में पूर्ण बली है। लग्नेश गुरु की दशा अति उत्तम फल देगी। सूर्य की दशा में जातक का भाग्योदय होगा। बुध की दशा भी श्रेष्ठ फल देगी। शुक्र अनिष्ट फल नहीं देगा, क्योंकि यह लग्न नक्षत्र का स्वामी ग्रह है।

धनुलग्न, अंश 18 से 19

1. **लग्न नक्षत्र**—पूर्वाषाढ़ा
2. **नक्षत्र पद**—2
3. **नक्षत्र अंश**—8/16/40/0 से 8/20/0/0
4. **वर्ण**—क्षत्रिय
5. **वश्य**—द्विपद
6. **योनि**—कपि
7. **गण**—मनुष्य
8. **नाड़ी**—मध्य
9. **नक्षत्र देवता**—उदक
10. **वर्णाक्षर**—धा
11. **वर्ग**—सर्प
12. **लग्न स्वामी**—गुरु
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**—शुक्र
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**—बुध
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**—मित्र
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**—मित्र
18. **प्रधान विशेषता**—'राजा'

पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति हर प्रकार से सुखी होता है। स्त्री-संतान के सुख से युक्त ऐसा जातक समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है। पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र का देवता उदक, स्वामी शुक्र है। इस नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी बुध है। लग्नेश गुरु देवाचार्य एवं नक्षत्र स्वामी शुक्र दैत्याचार्य में परस्पर शत्रुता है। दोनों ही बुद्धि प्रधान ग्रह हैं। नक्षत्र चरण स्वामी बुध की नक्षत्र स्वामी शुक्र से मित्रता है। फलत: ऐसा व्यक्ति राजा तुल्य पराक्रमी बुद्धिशाली होगा।

यहां लग्न अठारह से उन्नीस अंशों के भीतर होने से मध्य अवस्था में है। लग्नेश गुरु की दशा अति उत्तम फल देगी। सूर्य की दशा में जातक का भाग्योदय होगा। बुध की दशा भी श्रेष्ठ फल देगी। शुक्र अनिष्ट फल नहीं देगा क्योंकि यह लग्न नक्षत्र का स्वामी ग्रह है।

धनुलग्न, अंश 19 से 20

1. **लग्न नक्षत्र**—पूर्वाषाढ़ा
2. **नक्षत्र पद**—2
3. **नक्षत्र अंश**—8/16/40/0 से 8/20/0/0
4. **वर्ण**—क्षत्रिय
5. **वश्य**—द्विपद
6. **योनि**—कपि
7. **गण**—मनुष्य
8. **नाड़ी**—मध्य
9. **नक्षत्र देवता**—उदक
10. **वर्णाक्षर**—धा
11. **वर्ग**—सर्प

12. लग्न स्वामी–गुरु

13. लग्न नक्षत्र स्वामी–शुक्र

14. नक्षत्र चरण स्वामी–बुध

15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–मित्र

17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–मित्र

18. प्रधान विशेषता–'राजा'

पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति हर प्रकार से सुखी होता है। स्त्री-संतान के सुख से युक्त ऐसा जातक समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है। पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र का देवता उदक, स्वामी शुक्र है। इस नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी बुध है। लग्नेश गुरु देवाचार्य एवं नक्षत्र स्वामी शुक्र दैत्याचार्य में परस्पर शत्रुता है। दोनों ही बुद्धि प्रधान ग्रह हैं। नक्षत्र चरण स्वामी बुध की नक्षत्र स्वामी शुक्र से मित्रता है। फलत: ऐसा व्यक्ति राजा तुल्य पराक्रमी एवं बुद्धिशाली होगा।

यहां लग्न उन्नीस अंशों से बीस अंशों के भीतर होने से मध्य अवस्था में है। लग्नेश गुरु की दशा अति उत्तम फल देगी। सूर्य की दशा में जातक का भाग्योदय होगा। बुध की दशा भी श्रेष्ठ फल देगी। शुक्र अनिष्ट फल नहीं देगा, क्योंकि यह लग्न नक्षत्र का स्वामी ग्रह है।

धनुलग्न, अंश 20 से 21

1. लग्न नक्षत्र–पूर्वाषाढ़ा

2. नक्षत्र पद–3

3. नक्षत्र अंश–8/20/0/0 से 8/23/20/0

4. वर्ण–क्षत्रिय

5. वश्य–द्विपद

6. योनि–कपि

7. गण–मनुष्य

8. नाड़ी–मध्य

9. नक्षत्र देवता–उदक

10. वर्णाक्षर–फा

11. वर्ग–मूषक

12. लग्न स्वामी–गुरु

13. लग्न नक्षत्र स्वामी–शुक्र

14. नक्षत्र चरण स्वामी–शुक्र

15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–सम

17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–सम

18. प्रधान विशेषता–'प्रियवादी'

पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति हर प्रकार से सुखी होता है। स्त्री-संतान के सुख से युक्त ऐसा जातक समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है। पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र का देवता उदक, स्वामी शुक्र है। इस नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी शुक्र है। लग्नेश गुरु देवाचार्य एवं नक्षत्र स्वामी शुक्र दैत्याचार्य में परस्पर शत्रुता है।

यहां नक्षत्र चरण स्वामी शुक्र होने से ऐसा जातक प्रिय, मीठी एवं हितकारी वाणी बोलेगा।

यहां लग्न बीस से इक्कीस अंशों के भीतर होने से अवरोह अवस्था में है। लग्नेश गुरु की दशा उत्तम फल देगी। सूर्य की दशा में जातक का भाग्योदय होगा। शुक्र की दशा अनिष्ट फल नहीं देगी।

धनुलग्न, अंश 21 से 22

1. लग्न नक्षत्र–पूर्वाषाढ़ा
2. नक्षत्र पद–3
3. नक्षत्र अंश–8/20/0/0 से 8/23/20/0
4. वर्ण–क्षत्रिय
5. वश्य–द्विपद
6. योनि–कपि
7. गण–मनुष्य
8. नाड़ी–मध्य
9. नक्षत्र देवता–उदक
10. वर्णाक्षर–फा
11. वर्ग–मूषक
12. लग्न स्वामी–गुरु
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–शुक्र
14. नक्षत्र चरण स्वामी–शुक्र
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–सम
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–सम
18. प्रधान विशेषता–'प्रियवादी'

पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति हर प्रकार से सुखी होता है। स्त्री-संतान के सुख से युक्त ऐसा जातक समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है। पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र का देवता उदक, स्वामी शुक्र है। इस नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी भी शुक्र है। लग्नेश गुरु देवाचार्य एवं नक्षत्र स्वामी शुक्र दैत्याचार्य में परस्पर शत्रुता है। यहां नक्षत्र चरण स्वामी शुक्र होने से ऐसा जातक प्रिय, मीठी एवं हितकारी वाणी बोलेगा।

यहां लग्न इक्कीस से बाईस अंशों के भीतर होने से अवरोह अवस्था में है। लग्नेश गुरु की दशा उत्तम फल देगी। सूर्य की दशा में जातक का भाग्योदय होगा। यहां शुक्र की दशा कभी भी अनिष्ट फल नहीं देगी।

धनुलग्न, अंश 22 से 23

1. लग्न नक्षत्र–पूर्वाषाढ़ा
2. नक्षत्र पद–4
3. नक्षत्र अंश–8/20/0/0 से 8/23/20/0

4. वर्ण–क्षत्रिय
5. वश्य–द्विपद
6. योनि–कपि
7. गण–मनुष्य
8. नाड़ी–मध्य
9. नक्षत्र देवता–उदक
10. वर्णाक्षर–फा
11. वर्ग–मूषक
12. लग्न स्वामी–गुरु
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–शुक्र
14. नक्षत्र चरण स्वामी–शुक्र
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–सम
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–सम
18. प्रधान विशेषता–'प्रियवादी'

पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति हर प्रकार से सुखी होता है। स्त्री-संतान के सुख से युक्त ऐसा जातक समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है। पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र का देवता उदक, स्वामी शुक्र है। इस नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी शुक्र है। लग्नेश गुरु देवाचार्य एवं नक्षत्र स्वामी शुक्र दैत्याचार्य में परस्पर शत्रुता है। यहां नक्षत्र चरण स्वामी शुक्र होने से ऐसा जातक प्रिय, मीठी एवं हितकारी वाणी बोलेगा।

यहां लग्न बाईस से तेईस अंशों में अवरोह अवस्था में बलवान है। लग्नेश गुरु की दशा शुभ फल देगी। सूर्य की दशा में जातक का भाग्योदय होगा। यहां शुक्र की दशा कभी भी अनिष्ट फल नहीं देगी।

धनुलग्न, अंश 23 से 24

1. लग्न नक्षत्र–पूर्वाषाढ़ा
2. नक्षत्र पद–4
3. नक्षत्र अंश–8/23/20/0 से 8/26/40/0
4. वर्ण–क्षत्रिय
5. वश्य–द्विपद
6. योनि–कपि
7. गण–मनुष्य
8. नाड़ी–मध्य
9. नक्षत्र देवता–उदक
10. वर्णाक्षर–ढा
11. वर्ग–कुत्ता
12. लग्न स्वामी–गुरु
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–शुक्र
14. नक्षत्र चरण स्वामी–मंगल
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
18. प्रधान विशेषता–'धनी'

पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति हर प्रकार से सुखी होता है। स्त्री-संतान के सुख से युक्त ऐसा जातक समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है। पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र का देवता उदक, स्वामी शुक्र है। इस नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी मंगल है। लग्नेश गुरु देवाचार्य एवं नक्षत्र स्वामी शुक्र दैत्याचार्य में परस्पर शत्रुता है। यहां नक्षत्र चरण स्वामी मंगल की भी शुक्र से शत्रुता है। फिर भी ऐसा जातक संघर्ष के रहते हुए भी धनी होगा।

यहां लग्न तेईस से चौबीस अंशों में अवरोह अवस्था में बलवान है। लग्नेश गुरु की दशा शुभ फल देगी। सूर्य की दशा में जातक का भाग्योदय होगा। मंगल की दशा में जातक देशाटन, तीर्थाटन करेगा। यहां शुक्र की दशा अशुभ फल नहीं देगी।

धनुलग्न, अंश 24 से 25

1. **लग्न नक्षत्र**–पूर्वाषाढ़ा
2. **नक्षत्र पद**–4
3. **नक्षत्र अंश**–8/23/20/0 से 8/26/40/0
4. **वर्ण**–क्षत्रिय
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–कपि
7. **गण**–मनुष्य
8. **नाड़ी**–मध्य
9. **नक्षत्र देवता**–उदक
10. **वर्णाक्षर**–ढा
11. **वर्ग**–कुत्ता
12. **लग्न स्वामी**–गुरु
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–शुक्र
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–मंगल
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–'धनी'.

पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति हर प्रकार से सुखी होता है। स्त्री-संतान के सुख से युक्त ऐसा जातक समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है। पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र का देवता उदक, स्वामी शुक्र है। इस नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी मंगल है। लग्नेश गुरु देवाचार्य एवं नक्षत्र स्वामी शुक्र दैत्याचार्य में परस्पर शत्रुता है। यहां नक्षत्र चरण स्वामी मंगल की भी शुक्र से शत्रुता है। फिर भी ऐसा जातक संघर्ष के रहते हुए भी धनी होगा।

यहां लग्न चौबीस से पच्चीस अंशों के मध्य अवरोह अवस्था में बलवान है। लग्नेश गुरु की दशा शुभ फल देगी। सूर्य की दशा में जातक का भाग्योदय होगा। मंगल की दशा में जातक देशाटन, तीर्थयात्रा करेगा। यहां शुक्र की दशा अशुभ फल नहीं देगी।

धनुलग्न, अंश 25 से 26

1. लग्न नक्षत्र–पूर्वाषाढ़ा
2. नक्षत्र पद–4
3. नक्षत्र अंश–8/23/20/0 से 8/26/40/0
4. वर्ण–क्षत्रिय
5. वश्य–द्विपद
6. योनि–कपि
7. गण–मनुष्य
8. नाड़ी–मध्य
9. नक्षत्र देवता–उदक
10. वर्णाक्षर–ढा
11. वर्ग–कुत्ता
12. लग्न स्वामी–गुरु
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–शुक्र
14. नक्षत्र चरण स्वामी–मंगल
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
18. प्रधान विशेषता–'धनी'

पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति हर प्रकार से सुखी होता है। स्त्री-संतान के सुख से युक्त ऐसा जातक समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है। पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र का देवता उदक, स्वामी शुक्र है। इस नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी मंगल है। लग्नेश गुरु देवाचार्य एवं नक्षत्र स्वामी शुक्र दैत्याचार्य से परस्पर शत्रुता है। यहां नक्षत्र चरण स्वामी मंगल को भी शुक्र से शत्रुता है। फिर भी ऐसा जातक संघर्ष के रहते हुए भी धनी होगा।

यहां लग्न पच्चीस से छब्बीस अंशों के मध्य हीन बली है। लग्नेश गुरु की दशा शुभ फल देगी। सूर्य की दशा में भाग्योदय होगा। मंगल की दशा में जातक देशाटन, तीर्थयात्रा करेगा। यहां शुक्र की दशा अशुभफल नहीं देगी।

धनुलग्न, अंश 26 से 27

1. लग्न नक्षत्र–पूर्वाषाढ़ा
2. नक्षत्र पद–4
3. नक्षत्र अंश–8/23/20/0 से 8/26/40/0
4. वर्ण–क्षत्रिय
5. वश्य–द्विपद
6. योनि–कपि
7. गण–मनुष्य
8. नाड़ी–मध्य
9. नक्षत्र देवता–उदक
10. वर्णाक्षर–ढा
11. वर्ग–कुत्ता
12. लग्न स्वामी–गुरु
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–शुक्र
14. नक्षत्र चरण स्वामी–मंगल
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु

17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु

18. प्रधान विशेषता–'धनी'

पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति हर प्रकार से सुखी होता है। स्त्री-संतान के सुख से युक्त ऐसा जातक समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है। पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र का देवता उदक, स्वामी शुक्र है। इस नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी मंगल है। लग्नेश गुरु देवाचार्य एवं नक्षत्र स्वामी शुक्र दैत्याचार्य से परस्पर शत्रुता है। यहां नक्षत्र चरण स्वामी मंगल की भी शुक्र से शत्रुता है। फिर भी ऐसा जातक संघर्ष के रहते हुए भी धनी होगा।

यहां लग्न छब्बीस से सत्ताईस अंशों के भीतर होने से हीनबली है। लग्नेश गुरु की दशा मध्यम फल देगी। मंगल की दशा में जातक देशाटन, तीर्थयात्रा करेगा। सूर्य की दशा में भाग्योदय होगा।

धनुलग्न, अंश 27 से 28

1. लग्न नक्षत्र–उत्तराषाढ़ा

2. नक्षत्र पद–1

3. नक्षत्र अंश–8/26/40/0 से 8/30/0/0

4. वर्ण–क्षत्रिय

5. वश्य–द्विपद

6. योनि–नकुल

7. गण–मनुष्य

8. नाड़ी–अन्त्य

9. नक्षत्र देवता–विश्वेदेवा

10. वर्णाक्षर–ये

11. वर्ग–मूषक

12. लग्न स्वामी–गुरु

13. लग्न नक्षत्र स्वामी–सूर्य

14. नक्षत्र चरण स्वामी–गुरु

15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–स्व.

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–मित्र

17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–मित्र

18. प्रधान विशेषता–'नृपो'

उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति बहुत मित्रों वाला, धार्मिक, कृतज्ञ एवं भाग्यशाली होता है। उत्तराषाढ़ा नक्षत्र का देवता विश्वेदेवा, स्वामी सूर्य है। उत्तराषाढ़ा के प्रथम चरण का स्वामी गुरु, नक्षत्र स्वामी सूर्य एवं गुरु में मित्रता है। लग्नेश भी गुरु होने से यहां गुरु ग्रह का प्रभाव ज्यादा बलशाली है। ऐसा जातक निश्चय ही राजा तुल्य ऐश्वर्यशाली व पराक्रमी होगा।

यहां लग्न सत्ताईस से अट्ठाईस अंशों के भीतर होने से हीनबली है। लग्नेश गुरु की दशा में जातक का सर्वांगीण विकास होगा। सूर्य की दशा-अन्तर्दशा में जातक का प्रबल भाग्योदय होगा।

धनुलग्न, अंश 28 से 29

1. **लग्न नक्षत्र**—उत्तराषाढ़ा
2. **नक्षत्र पद**—1
3. **नक्षत्र अंश**—8/26/40/0 से 8/30/0/0
4. **वर्ण**—क्षत्रिय
5. **वश्य**—द्विपद
6. **योनि**—नकुल
7. **गण**—मनुष्य
8. **नाड़ी**—अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**—विश्वेदेवा
10. **वर्णाक्षर**—ये
11. **वर्ग**—मूषक
12. **लग्न स्वामी**—गुरु
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**—सूर्य
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**—गुरु
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—सम
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**—मित्र
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**—मित्र
18. **प्रधान विशेषता**—'नृपो'

उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति बहुत मित्रों वाला, धार्मिक, कृतज्ञ एवं भाग्यशाली होता है। उत्तराषाढ़ा नक्षत्र का देवता विश्वेदेवा एवं स्वामी सूर्य है। उत्तराषाढ़ा के प्रथम चरण का स्वामी गुरु, नक्षत्र स्वामी सूर्य एवं गुरु में मित्रता है। लग्नेश भी गुरु होने से यहां गुरु ग्रह का प्रभाव ज्यादा बलशाली है। ऐसा जातक निश्चय ही राजा तुल्य ऐश्वर्यशाली व पराक्रमी होगा।

यहां लग्न अट्ठाईस से उनतीस अंशों वाला अवरोही अवस्था में होकर 'हीनबली' है। उसका सारा तेज समाप्ति की ओर है। गुरु की दशा मध्यम फल देगी। सूर्य की दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

धनुलग्न, अंश 29 से 30

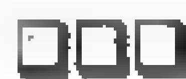
1. **लग्न नक्षत्र**—उत्तराषाढ़ा
2. **नक्षत्र पद**—1
3. **नक्षत्र अंश**—8/26/40/0 से 8/30/0/0
4. **वर्ण**—क्षत्रिय
5. **वश्य**—द्विपद
6. **योनि**—नकुल
7. **गण**—मनुष्य
8. **नाड़ी**—अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**—विश्वेदेवा
10. **वर्णाक्षर**—ये
11. **वर्ग**—मूषक
12. **लग्न स्वामी**—गुरु
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**—सूर्य
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**—गुरु
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—सम

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–मित्र **17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–मित्र**

18. प्रधान विशेषता–'नृपो'

उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति बहुत मित्रों वाला, धार्मिक, कृतज्ञ एवं भाग्यशाली होता है। उत्तराषाढ़ा नक्षत्र का देवता विश्वेदेवा एवं स्वामी सूर्य है। उत्तराषाढ़ा के प्रथम चरण का स्वामी गुरु, नक्षत्र स्वामी सूर्य एवं गुरु में मित्रता है। लग्नेश भी गुरु होने से यहां गुरु ग्रह का प्रभाव ज्यादा बलशाली है। ऐसा जातक निश्चय ही राजा तुल्य ऐश्वर्यशाली व पराक्रमी होगा।

यहां लग्न उनतीस से तीस अंशों वाला अवरोही अवस्था में जाकर मृतावस्था (Combust) में है। निस्तेज है। लग्नेश गुरु की दशा मध्यम फल देगी। सूर्य की दशा में जातक का भाग्योदय होगा।



धनुलग्न और आयुष्य योग

1. धनुलग्न वालों के लिये शनि मारकेश है पर शुक्र षष्टेश होने पर भी मुख्य मारकेश का काम करेगा। आयुष्य प्रदाता ग्रह गुरु है।
2. धनुलग्न में जन्म लेने वाले की मृत्यु जल में डूबने से, जलीय पदार्थों से, जल-जन्तु, मछली, मगरमच्छ, भयंकर शस्त्रास्त्र, दूसरों के हाथों एवं परदेश में होती है।
3. धनुलग्न वालों की औसत आयु 85 वर्ष की होती है। जन्म उपरान्त 5, 9, 11 माह तथा 1, 3, 13, 16, 24, 30, 34, 39, 42, 47, 50, 57, 61, 65, 69 और 72 वर्ष की आयु में शारीरिक कष्ट एवं अल्प मृत्यु संभव है।
4. धनुलग्न में अष्टमेश चंद्रमा यदि शुभ द्रेष्कोण में हो तो दिन रात में हर प्रकार के खतरे से रक्षा करता हुआ जातक को दीर्घायु देता है।
5. धनुलग्न में मेष का नवमांश हो, शुक्र लग्न में हो, गुरु सातवें हो, चंद्रमा कन्या में हो तो ऐसा जातक ब्रह्मा के समान यशस्वी एवं चिरंजीवी होता है।
6. धनुलग्न में बुध, गुरु व शुक्र छठे हो, शनि सातवे व नीच का मंगल आठवें हो, चंद्रमा के पीछे शेष ग्रह हों तो व्यक्ति कुबड़ा होता है।
7. धनुलग्न में गुरु हो, चौथे शुक्र हो, चंद्रमा शनि से युत होकर कहीं भी बैठा हो, परन्तु दशम स्थान में कोई पाप ग्रह हो तो जातक 120 वर्ष की 'परमायु' को भोगता है।
8. धनुलग्न में शनि उच्च का एकादश भाव में हो तो जातक को दीर्घायु देता है।
9. धनुलग्न में अष्टमेश चंद्रमा लग्न में हो तथा गुरु एवं शुक्र से दृष्ट हो तो जातक सौ वर्ष की स्वस्थ दीर्घायु को प्राप्त करता है।
10. धनुलग्न में चंद्रमा मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु एवं कुंभ राशि में हो तथा अन्य सभी ग्रह भी इन्हीं राशियों में हों तो जातक नब्बे वर्ष की उत्तम आयु को भोगता है।

11. धनुलग्न में चंद्रमा छठे वृष का हो, अष्टम स्थान में कोई पाप ग्रह न हो तथा सभी शुभ ग्रह केन्द्रवर्ती हों तो जातक 86 वर्ष की स्वस्थ आयु को प्राप्त करता है।

12. धनुलग्न में गुरु लग्न को देखता हो तथा सभी शुभ ग्रह केन्द्र में हों तो जातक 85 वर्ष की स्वस्थ आयु को प्राप्त करता है।

13. धनुलग्न में मंगल पांचवें एवं शनि मेष के साथ हो एवं सूर्य सातवें हो तो जातक 70 वर्ष की निरोग आयु को भोगता है।

14. धनुलग्न में सूर्य+मंगल+शनि हो, चंद्रमा द्वादश हो, गुरु बलहीन हो तो जातक 70 वर्ष तक जीता है।

15. धनुलग्न में सूर्य+चंद्रमा दसवें, शनि लग्न में तथा स्वगृही गुरु चौथे स्थान में हो तो एक प्रकार का राजयोग बनता है परन्तु ऐसा व्यक्ति मात्र 68 वर्ष की आयु को ही भोग पाता है।

16. धनुलग्न में गुरु+बुध+सूर्य लग्नस्थ हो, शनि मीन का केन्द्र में तथा वृश्चिक राशि का चंद्रमा द्वादश स्थान में हो तो एक प्रकार का राजयोग बनता है पर ऐसे जातक की आयु मात्र 66 वर्ष की होती है।

17. शनि लग्न में, मीन का चंद्र हो चौथे, मंगल सातवें एवं दसवें स्थान में सूर्य किसी अन्य शुभ ग्रह के साथ हो तो जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगता हुआ 60 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

18. धनुलग्न में अष्टमेश चंद्रमा सातवें हो तथा लग्नेश पाप ग्रहों के साथ छठे या आठवें स्थान में हो तो व्यक्ति 58 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

19. धनुलग्न में शनि किसी भी अन्य ग्रह के साथ लग्नस्थ हो, चंद्रमा पाप ग्रहों के साथ आठवें या द्वादश भाव में हो तो व्यक्ति सैद्धान्तिक चरित्रवान एवं विद्वान होते हुए 52 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

20. धनुलग्न में गुरु लग्नस्थ हो तथा मंगल और राहु आठवें हो तो जातक 52 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

21. धनुलग्न में लग्नेश गुरु पाप ग्रहों के साथ आठवें हो तथा अष्टमेश चंद्रमा पाप ग्रहों के साथ छठे, अन्य किसी शुभ ग्रह से दृष्ट न हो तो जातक मात्र 45 वर्ष तक ही जी पाता है।

22. धनुलग्न में शनि+मंगल हो पाप ग्रहों के साथ चंद्रमा आठवें गुरु छठे हो ऐसा जातक मात्र 32 वर्ष की अल्पायु को प्राप्त करता है।

23. धनुलग्न में द्वितीय और द्वादश भाव में पाप ग्रह हो, लग्नेश गुरु निर्बल हो तथा लग्न, द्वितीय या द्वादश भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो जातक मात्र 32 वर्ष की अल्पायु को प्राप्त करता है।

24. धनुलग्न में गुरु वृश्चिक राशि में एवं मंगल धनु राशि में परस्पर घर परिवर्तन करके बैठे तो बालारिष्ट योग बनता है। ऐसे बालक की मृत्यु 12 वर्ष के की आयु भीतर हो जाती है।

25. धनुलग्न में मंगल+सूर्य+शनि अष्टम स्थान में, शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो बालारिष्ट योग बनता है। उपाय न करने पर ऐसे बालक की मृत्यु एक वर्ष की आयु में हो जाती है।

26. धनुलग्न के सप्तम भ[redacted] में शनि+राहु+मंगल+चंद्रमा की युति शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो ऐसा जातक जन्म लेते ही शीघ्र मृत्यु को प्राप्त होता है।

27. धनुलग्न के दूसरे भाव में मकर का शनि हो तथा चतुर्थ, दशम भाव में भी क्रूर ग्रह हो तो ऐसा जातक बहुत कष्ट से जीता है।

28. धनुलग्न के द्वितीय, तृतीय य[redacted] द्वादश भाव में सूर्य+मंगल+राहु+गुरु की युति हो तो ऐसा जातक बहुत कष्ट से जीता है। उसे कोई न कोई शारीरिक बीमारी लगी रहती है।

29. धनुलग्न के अष्टम भाव में मंगल के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा जातक मातृघातक होता है।

30. धनुलग्न में पंचमस्थ शनि के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा जातक मातृघातक होता है।

31. धनुलग्न में लग्नेश गुरु एवं लग्न दोनों पाप ग्रहों के साथ हो, सप्तम में शनि हो तो जातक देवता के शाप या शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता है।

32. धनुलग्न में षष्टेश शुक्र सप्तम या दशम स्थान में हो, लग्न पर मंगल की दृष्टि हो तो व्यक्ति शत्रुकृत अभिचार रोग से पीड़ित रहता है।

33. धनुलग्न में निर्बल चंद्रमा अष्टम स्थान में शनि के साथ हो तो जातक प्रेत बाधा एवं शत्रुकृत अभिचार रोग से पीड़ित रहता हुआ अकाल मृत्यु को प्राप्त करता है।

□□□

धनुलग्न और रोग

1. धनुलग्न में षष्टेश शुक्र लग्न में पाप ग्रहों से दृष्ट हो तो व्यक्ति जलस्राव से अंधा हो जाता है।
2. धनुलग्न के चौथे भाव में पाप ग्रह हो तथा चतुर्थेश गुरु पाप ग्रहों के मध्य हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
3. धनुलग्न में चतुर्थेश गुरु यदि अष्टमेश चंद्र के साथ अष्टम स्थान में पाप ग्रहों से दृष्ट हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
4. धनुलग्न में चतुर्थेश गुरु मकर राशि में, निर्बल या अस्तगत हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
5. धनुलग्न में शनि चतुर्थ भाव में मीन का, षष्टेश चंद्रमा एवं सूर्य पाप ग्रहों के साथ हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
6. जातक पारिजात के अनुसार धनुलग्न में चतुर्थ एवं पंचम भाव में पाप ग्रह हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
7. धनुलग्न में मीन का शनि चतुर्थ स्थान में एवं कुंभ का सूर्य तृतीय स्थान में हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
8. धनुलग्न में चतुर्थ भाव में राहु अन्य पाप ग्रहों से दृष्ट हो, लग्नेश, गुरु निर्बल हो तो जातक को असह्य हृदयशूल (हार्ट-अटैक) होता है।
9. धनु में वृश्चिक का सूर्य दो पाप ग्रहों के मध्य हो तो जातक को तीव्र हृदयशूल (हार्ट-अटैक) होता है।
10. धनुलग्न में वृश्चिक+चंद्रमा+शुक्र की युति एक साथ दुःस्थानों में हो तो जातक की वाहन दुर्घटना से अकाल मृत्यु होती है।
11. धनुलग्न में पाप ग्रह हो, लग्नेश गुरु बलहीन हो तो व्यक्ति रोगी रहता है।
12. धनुलग्न में क्षीण चंद्रमा बैठा हो, लग्न पर पाप ग्रहों की दृष्टि हो तो ऐसा जातक रोगग्रस्त रहता है।

13. धनुलग्न में अष्टमेश चंद्रमा लग्न में हो, लग्नेश गुरु अष्टम में हो, लग्न पाप दृष्ट हो तो ऐसा व्यक्ति दवाई लेने पर ठीक नहीं होता। व्यक्ति सदैव रोगी रहता है।

14. धनुलग्न में गुरु लग्न को देखता हो तथा सभी शुभ ग्रह केंद्र में हों तो जातक 85 वर्ष को स्वस्थ आयु को भोगता है।

15. धनुलग्न मे मंगल पांचवें, शनि मेष के साथ हो एवं सूर्य सातवें हो तो जातक 70 वर्ष की निरोग आयु को भोगता है।

16. धनुलग्न में सूर्य+मंगल+शनि हो, चंद्रमा द्वादश स्थान में हो, गुरु बलहीन हो तो जातक 70 वर्ष तक जीता है।

17. धनुलग्न में सूर्य+चंद्रमा दसवें, शनि लग्न में तथा स्वगृही गुरु चौथे स्थान में हो तो एक प्रकार का राजयोग बनता है परंतु ऐसा व्यक्ति मात्र 68 वर्ष तक की आयु को ही भोग पाता है।

18. धनुलग्न में गुरु+बुध+सूर्य लग्नस्थ हो, शनि मीन का केंद्र में तथा वृश्चिक राशि का चंद्रमा द्वादश स्थान में हो तो एक प्रकार का राजयोग बनता है पर ऐसे जातक की आयु मात्र 66 वर्ष की होती है।

19. शनि लग्न में, मीन का चंद्र चौथे हो, मंगल सातवें एवं दसवें स्थान में सूर्य किसी अन्य शुभ ग्रह के साथ हो तो जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगता हुआ 60 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

20. धनुलग्न में अष्टमेश चंद्रमा सातवें हो तथा लग्नेश पाप ग्रहों के साथ छठे या आठवें स्थान में हो तो व्यक्ति 58 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

21. धनुलग्न में शनि किसी भी अन्य ग्रह के साथ लग्नस्थ हो, चंद्रमा पाप ग्रहों के साथ आठवें या द्वादश भाव में हो तो व्यक्ति सैद्धांतिक चरित्रवान एवं विद्वान होते हुए 52 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

22. धनुलग्न में गुरु लग्नस्थ हो तथा मंगल और राहु आठवें स्थान में हों तो जातक 52 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

23. धनुलग्न में लग्नेश गुरु पाप ग्रहों के साथ आठवें हो तथा अष्टमेश चंद्रमा पाप ग्रहों के साथ छठे, अन्य किसी शुभ ग्रह से दृष्ट न हो तो जातक मात्र 45 वर्ष तक ही जी पाता है।

24. धनुलग्न में शनि+मंगल हो पाप ग्रहों के साथ चंद्रमा आठवें, गुरु छठे हो तो ऐसा जातक मात्र 32 वर्ष की अल्पायु को प्राप्त करता है।

25. धनुलग्न में द्वितीय और द्वादश भाव में पाप ग्रह हो लग्नेश गुरु निर्बल हो तथा लग्न द्वितीय या द्वादश भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो जातक मात्र 32 वर्ष की अल्पायु को प्राप्त करता है।

26. धनुलग्न मे गुरु वृश्चिक राशि में एवं मंगल धनु राशि में परस्पर परिवर्तन करके बैठे तो **'बालारिष्ट योग'** बनता है। ऐसे बालक की मृत्यु 12 वर्ष के भीतर हो जाती है।

27. धनुलग्न में मंगल+सूर्य+शनि अष्टम स्थान में, शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो **'बालारिष्ट योग'** बनता है। उपाय न करने पर ऐसे बालक की मृत्यु एक वर्ष में हो जाती हैं।

28. धनुलग्न के सप्तम भाव में शनि+राहु+मंगल+चंद्रमा की युति, शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो ऐसा जातक जन्म लेते ही शीघ्र मृत्यु को प्राप्त होता है।

29. धनुलग्न के दूसरे भाव में मकर का शनि हो तथा चतुर्थ, दशम भाव में भी क्रूर ग्रह हो तो ऐसा जातक बहुत कष्ट से जीता है।

30. धनुलग्न के द्वितीय, तृतीय या द्वादश भाव में सूर्य+मंगल+राहु+गुरु की युति हो तो ऐसा जातक बहुत कष्ट से जीता है। जातक को कोई-न-कोई शारीरिक बीमारी लगी रहती है।

31. धनुलग्न के अष्टम भाव में मंगल के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा बालक **'मातृघातक'** होता है।

32. धनुलग्न में पंचमस्थ शनि के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा जातक **'मातृघातक'** होता है।

33. धनुलग्न में लग्नेश गुरु एवं लग्न दोनों पाप ग्रहों के साथ हो, सप्तम में शनि हो तो जातक देवता के शाप या शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता है।

34. धनुलग्न में षष्टेश शुक्र सप्तम या दशम स्थान में हो, लग्न पर मंगल की दृष्टि हो तो व्यक्ति शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता है।

35. धनुलग्न में निर्बल चंद्रमा अष्टम स्थान में शनि के साथ हो तो जातक प्रेत बाधा एवं शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता हुआ 'अकाल मृत्यु' को प्राप्त करता है।

❑❑❑

धनुलग्न और धन योग

धनुलग्न में जन्म लेने वाले व्यक्तियों के लिए धन प्रदाता ग्रह मंगल है। धनेश मंगल की शुभाशुभ स्थिति से, धन स्थान से संबंध स्थापित करने वाले ग्रहों की स्थिति से, योगायोग, मंगल तथा धन भाव पर पड़ने वाले ग्रहों की दृष्टि से व्यक्ति की आर्थिक स्थिति, आय के स्रोतों तथा चल-अचल सम्पत्ति का पता चलता है। इसके अतिरिक्त लग्नेश गुरु भाग्येश सूर्य एवं लाभेश शुक्र की अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थितियां धनुलग्न के जातकों के धन, ऐश्वर्य एवं वैभव को घटाने-बढ़ाने में सहायक होती हैं।

वैसे धनुलग्न के लिए शुक्र षष्टेश होने से अशुभ है। बुध व सूर्य शुभ होते हैं। शनि मारकेश होते हुए भी मारक, नहीं होता। इस लग्न के लिए शुक्र मारकेश का काम करेगा। शनि, चंद्र भी पापी है। सप्तमेश होने से बुध सहायक मारकेश है। पंचमेश होने से मंगल शुभ फलदायक बन गया है। लग्नेश गुरु चतुर्थ स्थान का स्वामी होने के कारण अति शुभ कारकत्व वाला ग्रह बन गया है।

राजयोग कारक– 1. बुध+शुक्र एवं गुरु

सफल योग– 1. मंगल+ गुरु 2. सूर्य+गुरु 3. सूर्य+बुध

निष्फल योग– 1. मंगल+बुध

अशुभ योग– 1. गुरु+शुक्र 2. गुरु+शनि 3. गुरु+बुध 4. गुरु+चंद्र।

लक्ष्मी योग–गुरु केन्द्र-त्रिकोण में, शनि तृतीय में, बुध केन्द्र में।

विशेष योगायोग

1. धनुलग्न में सूर्य सिंह या मेष राशि में हो तो जातक अल्प प्रयत्न से बहुत धन कमाता है।

2. धनुलग्न में शनि, मकर, कुंभ या तुला राशि में हो तो जातक धनपति होता है, लक्ष्मी उसका पीछा नहीं छोड़ती।

3. धनुलग्न में शनि सूर्य के घर में तथा सूर्य शनि के घर में परस्पर राशि परिवर्तन करके बैठा हो अर्थात् शनि, सिंह राशि में तथा सूर्य, मकर या कुंभ राशि में हो तो जातक महाभाग्यशाली होता है। लक्ष्मी ऐसे जातक की अनुचरी होती है।

4. धनुलग्न में शनि, मिथुन या कन्या राशि में तथा बुध मकर या कुंभ राशि में परस्पर परिवर्तन योग करके बैठा हो तो व्यक्ति भाग्यशाली होता है ऐसा व्यक्ति जीवन में बहुत धन कमाता है।

5. धनुलग्न में गुरु हो, बुध एवं शनि अपनी-अपनी स्वराशि में हो तो ऐसा व्यक्ति धनवानों में अग्रगण्य होता है तथा पग-पग पर लक्ष्मी उसके साथ चलती है।

6. धनुलग्न में गुरु लग्न में बुध एवं मंगल से युत हो अथवा लग्नस्थ गुरु, बुध मंगल से दृष्ट हो तो जातक महाधनशाली होता है।

7. धनुलग्न के पंचम भाव में स्वगृही मंगल हो, तथा स्वगृही शुक्र लाभ स्थान हो तो जातक महालक्ष्मीशाली होता है।

8. धनुलग्न में बुध यदि केन्द्र-त्रिकोण में हो तथा शनि स्वगृही (मकर, कुंभ राशि में) हो, तो जातक कीचड़ में कमल की तरह खिलता है। अर्थात् सामान्य परिवार में जन्म लेकर भी जातक धीरे-धीरे अपने पुरुषार्थ व पराक्रम से लक्षाधिपति, कोट्याधिपति हो जाता है।

9. धनुलग्न में गुरु+चंद्र+मंगल की युति हो तो 'महालक्ष्मी योग' बनता है। ऐसा जातक प्रबल पराक्रमी, अति धनवान, ऐश्वर्यवान एवं महाप्रतापी होता है।

10. धनुलग्न में गुरु+बुध एवं मंगल से युत हो तो 'महालक्ष्मी योग' बनता है। ऐसा जातक अपने बुद्धिबल से शत्रुओं को परास्त करता हुआ महाधनी एवं अतिप्रतापी होता है।

11. धनुलग्न में गुरु तुला राशि में हो तथा लाभेश शुक्र लग्न स्थान में हो तो जातक आयु के 33वें वर्ष में पांच लाख रुपये कमा लेता है तथा शत्रुओं का नाश करते हुये स्वअर्जित धन लक्ष्मी को भोगता है। ऐसे व्यक्ति को जीवन में अचानक रुपया मिलता है।

12. धनुलग्न हो, लग्नेश गुरु, धनेश शनि, भाग्येश सूर्य तथा लाभेश शुक्र अपनी-अपनी उच्च राशि या स्वराशि में हों तो जातक करोड़पति होता है।

13. धनुलग्न हो तथा दशम भाव में राहु, शुक्र, शनि और मंगल की युति हो तो जातक अरबपति होता है।

14. धनुलग्न में धनेश शनि यदि छठे, आठवे, बारहवें स्थान में हो तो **'धनहीन योग'** की सृष्टि होती है। जिस प्रकार छिद्र वाले घड़े में कभी पानी नहीं रहता, ठीक उसी प्रकार से ऐसे जातक के पास रुपया टिकता नहीं। धन की कमी सदैव बनी रहती है। इस दुर्भाग्य से बचने के लिए जातक को अभिमंत्रित शनि यंत्र धारण करना चाहिये। पाठक चाहे तो यह यंत्र हमारे कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं।

15. धनुलग्न में धनेश शनि यदि आठवें स्थान में हो तथा सूर्य लग्न को देखता हो तो जातक को पृथ्वी में गढ़े हुए धन की प्राप्ति होती है अथवा लॉटरी से रुपया मिलता है पर रुपया पास में टिकता नहीं।

16. धनुलग्न में मंगल यदि मेष राशि में पंचमस्थ हो तो **'रुचक योग'** बनता है। ऐसा जातक राजा के समान ऐश्वर्य को भोगता हुआ अथाह भूमि, सम्पत्ति व धन का स्वामी होता है।

17. धनुलग्न में सुखेश गुरु, लाभेश शुक्र यदि नवम भाव में मंगल से दृष्ट हो तो जातक को अचानक धन की प्राप्ति होगी।

18. धनुलग्न में चंद्र+गुरु की युति यदि मकर, मीन, मेष या सिंह राशि में हो तो इस प्रकार के **'गजकेसरी योग'** के कारण जातक को अचानक उत्तम धन की प्राप्ति होती है। ऐसे व्यक्ति को लॉटरी, शेयर मार्केट या अन्य व्यापारिक स्रोत के कारण अकल्पनीय धन की प्राप्ति होती है।

19. धनुलग्न में धनेश शनि अष्टम में एवं अष्टमेश चंद्र धन स्थान में परस्पर परिवर्तन करके बैठे हों तो ऐसा जातक गलत तरीके से धन कमाता है। ऐसा व्यक्ति ताश, जुआ, मटका, घुडरेस, स्मगलिंग एवं अनैतिक कार्यों से धन अर्जित करता है।

20. धनुलग्न में तृतीयेश शनि लाभ स्थान में एवं लाभेश शुक्र तृतीय स्थान में परस्पर परिवर्तन करके बैठा हो तो ऐसे व्यक्ति का भाई, भागीदार एवं मित्रों द्वारा धन की प्राप्ति होती है।

21. धनुलग्न में बलवान शनि के साथ यदि चतुर्थेश गुरु हो तो व्यक्ति को माता एवं ननिहाल पक्ष के द्वारा धन की प्राप्ति होती है।

22. लग्नेश व धनेश प्रथम भवन अर्थात् लग्न में हो तो जातक स्वयं श्रम करके अर्थोपार्जन करता है।

23. केन्द्र में चार पाप ग्रह सूर्य, मंगल, शनि, राहु हों, धन भवन में पाप ग्रह हो, सूर्य, शुक्र, शनि साथ हो अथवा धन भवन में शनि-सूर्य और शनि-मंगल साथ हों तो जातक दरिद्र ही होता है।

24. चंद्रमा 9वें भाव में हो तथा 10वें व 9वें भाव में कोई ग्रह न हो तो जातक दरिद्र ही होता है।

25. सूर्य एकादश स्थान में हो तथा द्वादश व दशम भाव में कोई ग्रह न हो तो जातक दरिद्र ही होता है।

26. बुध, सूर्य 5वें भवन में पड़ा हो तो जातक धनवान होता है।

27. लग्नेश पंचम भाव में हो या 11वें हो तो जातक देह से पुष्ट व दीर्घायु होता है। शुक्र 11वें भाव में हो और द्वादश या सप्तम भाव में गुरु हो, राहु छठे हो तो जातक अतुल संपत्ति प्राप्त करता है।

28. सूर्य से द्वितीय स्थान में गुरु हो, लग्न अपने नवांश में हो और 1, 4, 9, 10 स्थानों में बुध, शुक्र, चंद्रादि हों तो जातक के घर सदैव लक्ष्मी निवास करती है।

29. चंद्रमा 8वें भाव में हो, कर्क राशि में सूर्य, शुक्र, शनि स्थित हों तो विख्यात, शिल्पादि कलाओं का जानकार, पतला पर दृढ़ शरीर से युक्त अनेक संतानों से युक्त व निरंतर संपत्तिवान रहता है।

30. नवमेश सूर्य तथा शुक्र एकादशेश साथ-साथ बैठे हों तो पैतृक धन की प्राप्ति होती है।

31. धनुलग्न की कुण्डली में सूर्य, चंद्र कहीं साथ-साथ बैठे हों तो दरिद्र योग होता है।

32. दशमेश नवमेश के नवमांश में हो तथा दशमेश व नवमेश द्वितीय स्थान में हों तो जातक विष्णु भक्त एवं लक्ष्मीवान होता है।

33. पंचमेश भाग्य भवन में हो तथा एकादशेश चंद्र युक्त लग्न से द्वितीय हो तो भाग्य योग व प्रबल धन योग बनता है।

34. राहु कन्या राशि में स्थित हो तथा कन्यापति बुध अपने में उच्च का विराजमान हो तथा शनि चतुर्थ भावस्थ होकर बुध को पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो जातक बड़ा व्यापारी एवं धनी होता है।

35. धनुलग्न में गुरु बारहवें हों, लग्न शुभ ग्रह से दृष्ट न हो तो अकस्मात् धन की हानि होती है।

36. धनुलग्न में यदि बलवान शनि की पंचमेश मंगल से युति हो, द्वितीय भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो ऐसे व्यक्ति को पुत्र द्वारा धन की प्राप्ति होती है। किंवा पुत्र जन्म के बाद ही जातक का भाग्योदय होता है।

37. धनुलग्न में बलवान शनि की यदि षष्ठेश शुक्र से युति हो तथा धन भाव मंगल से दृष्ट हो तो ऐसे जातक को शत्रुओं के द्वारा धन की प्राप्ति होती है। ऐसा जातक कोर्ट-कचहरी में शत्रुओं को हराता है तथा शत्रुओं के कारण ही उसे धन व यश की प्राप्ति होती है।

38. धनुलग्न में बलवान शनि की सप्तमेश बुध से युति हो तो जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होता है तथा उसे पत्नी, ससुराल पक्ष से धन की प्राप्ति होती है।

39. धनुलग्न में बलवान शनि की नवमेश सूर्य से युति हो तो ऐसे जातक को राजा से, राज्य सरकार, सरकारी अधिकारियों, सरकारी अनुबंधों एवं ठेकों से काफी धन मिलता है।

40. धनुलग्न में बलवान शनि की दशमेश बुध से युति हो तो जातक को पैतृक सम्पत्ति, पिता द्वारा रक्षित धन की प्राप्ति होती है अथवा पिता का व्यवसाय जातक के भाग्योदय में सहायक होता है।

41. धनुलग्न में दशम स्थान का स्वामी बुध यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तो जातक परिश्रम का पूरा लाभ नहीं मिलता। जन्म स्थान में जातक नहीं कमा पाता तथा उसे सदैव धन की कमी बनी रहती है।

42. धनुलग्न में लग्नेश गुरु यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो एवं सूर्य आठवें भाव (कर्क राशि) में हो तो व्यक्ति कर्जदार होता है तथा धन के मामले में कमजोर होता है।

43. धनु स्थान में पाप ग्रह हो तथा लाभेश शुक्र यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तो जातक दरिद्र होता है।

44. धनुलग्न के केन्द्र स्थानों को छोड़कर चंद्रमा गुरु से यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तो शकट योग बनता है। जिसके कारण व्यक्ति को सदैव धन का अभाव बना रहता है।

45. धनुलग्न में धनेश शनि अस्त हो, नीच राशि (मेष) में हो तथा धन स्थान एवं अष्टम स्थान में कोई पाप ग्रह हो तो व्यक्ति सदैव ऋणग्रस्त रहता है, कर्ज उसके सिर से उतरता नहीं।

46. धनुलग्न में लाभेश शनि यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तथा लाभेश अस्तगत व पाप पीड़ित हो तो जातक महादरिद्र होता है।

47. धनुलग्न में अष्टमेश चंद्रमा निर्बल होकर कहीं बैठा हो तथा अष्टम स्थान में कोई ग्रह वक्री होकर बैठा हो तो अकस्मात् धन हानि का योग बनता है। अर्थात् ऐसे व्यक्ति को धन के मामले में परिस्थितिवश अचानक भारी नुकसान हो सकता है। फलतः सावधान रहें।

48. धनुलग्न में अष्टमेश चंद्रमा शत्रुक्षेत्री, नीच राशिगत हो तथा शनि निर्बल हो तो अचानक धन की हानि होती है।

❑❑❑

धनुलग्न और विवाह योग

1. चंद्रमा से 1/8/7/4/12 इन स्थानों में राहु तथा मंगल व शनि हो तो उस पुरुष की स्त्री का नाश होता है।
2. सप्तम भाव में मिथुन का मंगल हो तो व्यक्ति शौकीन, परस्त्रीगामी व कामान्ध होता है।
3. मिथुन राशि के सप्तम स्थान में मंगल-शुक्र हों तो उस जातक की स्त्री की मृत्यु जलने से या घावों के सड़ने से होती है।
4. लग्न में चंद्रमा और शुक्र यदि शनि या मंगल से युक्त हो तथा पंचम भाव पर पाप ग्रह की दृष्टि हो तो वह स्त्री वंध्या होती।
5. धनुलग्न में शनि लग्नस्थ चंद्रमा के साथ हो तथा सप्तम भाव में सूर्य हो तो ऐसे जातक के विवाह में भयंकर बाधा आती है। विलम्ब विवाह तो निश्चित है। अविवाह की स्थिति भी बन सकती है।
6. धनुलग्न में शनि द्वादशस्थ हो, द्वितीय भाव में सूर्य हो और लग्नेश गुरु निर्बल हो तो जातक का विवाह नहीं होता।
7. धनुलग्न में शनि छठे हो, सूर्य अष्टम स्थान में हो एवं सप्तमेश बुध बलहीन हो तो जातक का विवाह नहीं होता।
8. धनुलग्न में सूर्य, शनि एवं शुक्र साथ में कहीं भी बैठे हों, सप्तमेश बुध कमजोर हो तो जातक का विवाह नहीं होता।
9. धनुलग्न में शुक्र कर्क या सिंह राशि का हो तथा सूर्य या चंद्रमा शुक्र से द्वितीय या द्वादश में हो तो जातक का विवाह नहीं होता।
10. धनुलग्न में राहु या केतु हो, शुक्र, मिथुन, सिंह, कन्या, धनु (वंध्या) राशिगत हो तो जातक को विवाह विलम्ब से होता है तथा जातक को अपने जीवनसाथी से तृप्ति नहीं मिलती।

11. राहु या केतु सप्तम भाव या नवम भाव में क्रूर ग्रहों से युक्त होकर बैठे हों तो निश्चित ही जातक का विवाह विलम्ब से होता है। ऐसा जातक प्रायः अन्तर्जातीय विवाह करता है।

12. धनुलग्न में द्वितीयेश शनि वक्री हो अथवा द्वितीय स्थान में कोई भी ग्रह वक्री होकर बैठा हो तो जातक के विवाह में अत्यधिक अवरोध उत्पन्न होता है।

13. धनुलग्न में सप्तमेश बुध अस्त हो, सप्तम भाव में कोई वक्री ग्रह हो, अथवा किसी वक्री ग्रह की सप्तम भाव पर दृष्टि हो तो जातक के विवाह में अवरोध आता है और विवाह समय पर सम्पन्न नहीं होता।

14. धनुलग्न में द्वितीयेश शनि मंगल से परस्पर दृष्ट हो तो जातक का विवाह विलम्ब से होता है तथा ससुराल से खटपट रहती है।

15. धनुलग्न में राहु यदि मंगल की राशि में बारहवें स्थान में हो तो ऐसी स्त्री को वैधव्य दुःख भोगना पड़ता है।

16. धनुलग्न में सप्तमेश बुध आठवें स्थान में पाप ग्रहों से युत हो या पाप मध्य हो तो ऐसा जातक अपने जीवनसाथी की हत्या करता है।

17. धनुलग्न में सूर्य आठवें शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो ऐसी स्त्री नित नूतन वस्त्र-अलंकार पहन कर परपुरुषों का संग करती है और कुल की मर्यादा को नष्ट कर देती है।

18. धनुलग्न में मंगल आठवें हो तो ऐसी स्त्री मृगनयनी एवं कुटिल स्वभाव की होती है। प्रायः प्रेम विवाह करती हुई, स्वच्छन्द यौनाचार में विश्वास रखती है।

19. धनुलग्न में सप्तम भाव में चंद्रमा शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो, सप्तमेश बुध पाप ग्रहों से युत या दृष्ट हो तो ऐसा जातक अंतर्जातीय विवाह करता है।

20. धनुलग्न में सप्तमेश बुध के साथ शुक्र छठे स्थान में हो तो ऐसा व्यक्ति सहवास के अयोग्य होता है अर्थात् व्यक्ति नपुंसक होता है।

21. धनुलग्न में शुक्र सप्तम भाव में हो तथा आठवें स्थान में मंगल या शनि हो तो ऐसी स्त्री कुल को कलंक लगाने वाली, कई घरों में निवास करती हुई अंत में वंध्या का जीवन व्यतीत करती है।

22. धनुलग्न में चंद्रमा यदि (1/3/5/7/9/11) राशि में हो तो ऐसी स्त्री पुरुष के समान कठोर स्वभाव वाली एवं साहसिक प्रकृति की महिला होती है।

23. धनुलग्न में यदि सूर्य, मंगल, गुरु, चंद्र, बुध व शुक्र बलवान हो तो ऐसी स्त्री गलत सोहबत या परिस्थिति वश परपुरुष की अंकशायिनी बन सकती है।

24. धनुलग्न में चंद्रमा अष्टम स्थान में कर्क राशि का स्वगृही हो तो ऐसी कन्या बांझ होती है।

25. धनुलग्न में चंद्रमा अष्टम स्थान में कर्क राशि के बुध के साथ हो तो ऐसी स्त्री काकवंध्या होती है अर्थात् एक बार प्रसूता होती है।

26. धनुलग्न में लग्नस्थ गुरु के साथ यदि चंद्रमा हो तो ''द्विभार्या योग'' बनता है। ऐसा जातक दो नारियों के साथ रमण करता है।

27. धनुलग्न में बुध सप्तम भाव में शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो ऐसा जातक एक साथ में दो स्त्रियों से प्रेम रखता है। अर्थात् विवाहित पत्नी के अतिरिक्त उसकी उपपत्नी भी होती है।

28. धनुलग्न में सप्तमेश बुध यदि द्वितीय या द्वादश भाव में हो तो पूर्ण 'व्याभिचारी योग' बनता है। ऐसा पुरुष जीवन में अनेक स्त्रियों के साथ सम्भोग करता है।

❑❑❑

धनुलग्न एवं संतान योग

1. धनुलग्न में पंचमेश मंगल कर्क, वृश्चिक या मीन राशि में हो तो जातक की पहल संतति कन्या होती है।
2. धनुलग्न में पंचमेश मंगल आठवें हो तो जातक को अल्प संतति की प्राप्ति होती है।
3. धनुलग्न में पंचमेश मंगल अस्त हो, पाप पीड़ित या पाप ग्रस्त होकर छठे आठवें या बारहवें स्थान में हो तो व्यक्ति के पुत्र नहीं होता।
4. धनुलग्न में पंचमेश मंगल लग्न (धनु राशि) में हो तथा गुरु से युत या दृष्ट हो तो व्यक्ति के प्रथम पुत्र ही होता है।
5. धनुलग्न में पंचमस्थ मंगल मेष राशि का हो तो जातक के तीन पुत्र होते हैं।
6. धनुलग्न में पंचमेश मंगल लग्न में हो तो एवं लग्नेश गुरु पंचम में परस्पर परिवर्तन करके बैठे हो तो जातक दूसरों की संतान गोद लेकर उसे अपने पुत्र की तरह पालता है।
7. धनुलग्न के पंचम भाव में मेष राशि होने से, अन्य कोई दुर्योग न हो तो जातक के विवाहोपरान्त शीघ्र संतति होती है।
8. धनुलग्न के पंचम भाव में राहु हो तथा राहु मंगल के द्वारा दृष्ट हो तो ऐसे जातक को पुत्र संतान का सुख नहीं मिलता। इसके पुत्र तो होता है पर कुल कालान्तर के बाद मृत्यु को प्राप्त हो जाता है।
9. धनुलग्न में पंचमेश मंगल पंचम, षष्ठ या द्वादश भाव में हो तथा पंचम भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो 'अनपत्य योग' बनता है। ऐसे जातक को निर्बीज पृथ्वी की तरह पुत्र संतान की प्राप्ति नहीं होती पर उपाय करने से दोष शांत हो जाता है।
10. धनुलग्न में गुरु कमजोर हो साथ में पंचमेश मंगल और सप्तमेश बुध भी बलहीन हो तो 'अनपत्य योग' बनता है। ऐसे जातक को निर्बीज पृथ्वी की तरह पुत्र संतान की प्राप्ति नहीं होती पर उपाय करने से दोष शांत हो जाता है।

11. राहु, सूर्य एवं मंगल पंचम भाव में हो तो ऐसे जातक को शल्यचिकित्सा द्वारा कष्ट से पुत्र संतान की प्राप्ति होती है। आज की भाषा में ऐसे बालक को **'सिजेरियन चाइल्ड'** कहते हैं।

12. धनुलग्न में पंचमेश मंगल कमजोर हो तथा राहु ग्यारहवें हो तो जातक के वृद्धावस्था में संतान होती है।

13. पंचम स्थान में राहु, केतु या शनि इत्यादि पाप ग्रह हो तो गर्भपात अवश्य होता है।

14. धनुलग्न में लग्नेश गुरु द्वितीय स्थान में हो तथा पंचमेश मंगल पापग्रस्त या पाप पीड़ित हो तो ऐसे व्यक्ति की पुत्र संतान उत्पन्न होकर नष्ट हो जाती है।

15. धनुलग्न में पंचमेश मंगल बारहवें शुभ ग्रहों से युत या दृष्ट हो तो ऐसे व्यक्ति के पुत्र की वृद्धावस्था में अकाल मृत्यु हो जाती है। जिससे जातक संसार से विरक्त होकर वैराग्य की ओर उन्मुख होता है।

16. पंचमेश यदि वृष, कर्क, कन्या या तुला राशि में हो तो जातक को प्रथम संतति के रूप में कन्या रत्न की प्राप्ति होती है।

17. धनुलग्न में पंचमेश गुरु की सप्तमेश बुध के साथ युति हो तो जातक को प्रथम संतान के रूप में कन्या रत्न की प्राप्ति होती है।

18. सप्तम में राहु से युक्त सूर्य अथवा अष्टम भाव में राहु से युक्त गुरु और शुक्र हो, पंचम भाव पापयुक्त हो तो वह स्त्री निश्चय ही मृत्वत्सा होती है।

19. समराशि (2, 4, 6, 8, 10, 12) में गया हुआ बुध कन्या संतति की बाहुल्यता देता है। यदि चंद्रमा और शुक्र का भी पंचम भाव पर प्रभाव हो तो यह योग अधिक पुष्ट हो जाता है।

20. पंचमेश व लग्नेश गुरु निर्बल हो, पंचम भाव में राहु हो तो जातक के यहां सर्पदोष के कारण पुत्र संतान नहीं होती।

21. पंचम भाव में राहु हो और एकादश स्थान में स्थित केतु के मध्य सारे ग्रह हों तो पद्मनामक **'कालसर्प योग'** के कारण जातक के यहां पुत्र संतान नहीं होती। ऐसे जातक को वंश वृद्धि की चिंता एवं मानसिक तनाव रहता है।

22. सूर्य अष्टम हो, पंचम भाव में शनि हो, पंचमेश राहु से युत हो तो जातक को पितृदोष रहता है तथा पितृशाप के कारण पुत्र संतान नहीं होती।

23. लग्न में मंगल, अष्टम में शनि, पंचम में सूर्य और बारहवें स्थान में राहु या केतु हो तो 'वंशविच्छेद योग' बनता है। ऐसे जातक का स्वयं का वंश समाप्त हो जाता है आगे पीढ़ियां नहीं चलती।

24. धनुलग्न के चतुर्थ भाव में पाप ग्रह हो तथा चंद्रमा जहां बैठा हो उससे आठवें स्थान में पाप ग्रह हो तो **'वंशविच्छेद योग'** बनता है। ऐसे जातक के स्वयं का वंश समाप्त हो जाता, उसके आगे पीढ़ियां नहीं चलतीं।

25. तीन केन्द्रों में पाप ग्रह हो तो व्यक्ति को **'इलाख्य नामक'** सर्पयोग बनता है। इस दोष के कारण जातक को पुत्र संतान का सुख नहीं मिलता। दोष निवृत्ति पर शांति हो जाती।

26. धनुलग्न में पंचमेश पंचम, षष्ठ या द्वादश भाव में हो तथा पंचम भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो 'अनपत्य योग' बनता है ऐसे जातक को निर्बीज पृथ्वी की तरह संतान उत्पन्न नहीं होती पर उपाय से दोष शांत हो जाता है।

27. पंचम भाव में मंगल बुध की युति हो तो जातक के जुड़वा संतान होती है। पुत्र या पुत्री की कोई शर्त नहीं।

28. जिस स्त्री की जन्म कुण्डली में सूर्य लग्न में और शनि यदि सातवें हो, अथवा सूर्य+शनि की युति सातवें हो, तथा दशम भाव पर गुरु की दृष्टि हो तो 'अनगर्भा योग' बनता है ऐसी स्त्री गर्भधारण के योग्य नहीं होती।

29. जिस स्त्री की जन्म कुण्डली में शनि+मंगल छठे या चौथे स्थान में हो तो 'अनगर्भायोग' बनता है। ऐसी स्त्री गर्भधारण करने के योग्य नहीं होती।

30. शुभ ग्रहों के साथ सूर्य+चंद्रमा यदि पंचम स्थान में हो तो **''कुलवर्द्धन योग''** बनता है। ऐसी स्त्री दीर्घजीवी, धनी एवं ऐश्वर्यशाली संतानों को उत्पन्न करती है।

31. पंचमेश मिथुन या कन्या राशि में हो, बुध से युत हो, पंचमेश और पंचम भाव पर पुरुष ग्रहों की दृष्टि न हो तो जातक को ''केवल कन्या योग'' होता है। पुत्र संतान नहीं होती।

❑❑❑

धनुलग्न और राजयोग

1. यदि धनुलग्न अपने पूर्णांश पर हो जिसमें स्वगृही गुरु अपने उच्चांश पर विराजमान हो, उच्च या मीन का शुक्र चतुर्थ स्थान में हो और उच्च या कन्या का बुध दशम स्थान में हो तो जातक रजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
2. उच्च का या मकर का मंगल दूसरे या धन स्थान में हो, कुंभ का शनि पराक्रम या तीसरे स्थान मे हो, मीन का स्वगृही गुरु चतुर्थ में हो, उच्च का सूर्य पंचम स्थान में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
3. धन का गुरु स्वगृही लग्न में हो, उच्च का मंगल स्वगृही शनि के साथ मकर के धन भाव में हो, स्वगृही सूर्य सिंह का भाग्य या नवम स्थान में हो और कन्या का बुध दशम में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
4. उच्च का शुक्र, स्वगृही मीन के गुरु के साथ चतुर्थ स्थान में हो, उच्च का सूर्य मेष के स्वगृही मंगल के साथ पंचम स्थान में हो, सप्तम में मिथुन का स्वगृही बुध हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
5. सिंह का स्वगृही सूर्य भाग्य स्थान में हो, उच्च का बुध कर्म या राज्य स्थान में हो और तुला में उच्च का शनि स्वगृही शुक्र के साथ लाभ स्थान में लग्न में स्वगृही गुरु हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
6. उच्च का मंगल धन स्थान में, उच्च का शुक्र चतुर्थ स्थान में, उच्च का सूर्य पंचम स्थान में, उच्च का बुध राज्य स्थान में और उच्च का शनि एकादश स्थान में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
7. इसमें से कोई भी चार ग्रह अपने उच्च के उच्चांश पर होने से राजयोग करते हैं, तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।

8. स्वगृही शनि पराक्रम स्थान में, स्वगृही गुरु चतुर्थ स्थान में, स्वगृही मंगल पंचम स्थान में, स्वगृही बुध सप्तम स्थान में, स्वगृही सूर्य नवम स्थान में, स्वगृही बुध दशम स्थान और स्वगृही शुक्र एकादश में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।

9. इसमें से कोई चार या पांच या छह ग्रह स्वगृही पूर्णांश में होने से पूर्ण राजयोग करते हैं।

10. चंद्रमा 8वें भाव में हो, कर्क राशि में सूर्य, शुक्र, शनि स्थित हो तो जातक विख्यात, शिल्पादि कलाओं का जानकार पतला पर दृढ़ शरीर से युक्त अनेक संतानों से युक्त व निरन्तर संपत्तिवान रहता है।

11. चंद्रमा सूर्य को देखता हो तथा चंद्रमा बुध द्वारा देखा जाता हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।

12. धनुलग्न में 10वें स्थान में शनि हो तो जातक धनवान, विद्वान, शूरवीर, उच्च पदासीन नेता व प्रधान पद प्राप्त करता है।

13. दशम भाव में शुभ राशि कन्या हो, दशमेश त्रिकोण में हो अर्थात्, बुध की स्थिति 5, 9वें भाव में हो अथवा वह उच्च का हो, सूर्य 10वें भाव में हो तो उत्तम राजयोग होता है।

14. पूर्ण चंद्रमा हो उस पर समस्त ग्रहों की दृष्टि हो तो जातक उच्च शासनाधिकारी होता है।

15. पूर्ण चंद्रमा अपनी उच्च राशि वृष पर हो तथा उस पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो जातक उच्च पद प्राप्त करता है।

16. गुरु कर्क राशि में तथा चंद्रमा वृष राशि में हो अर्थात् गुरु, चंद्र दोनों उच्च के हों तो जातक नेता होता है।

17. लग्न में शनि हो, गुरु 7वें भाव में हो और उस पर शुक्र की दृष्टि हो तो व्यक्ति राज्य में उच्च पद प्राप्त करता है।

18. दशम भाव में बुध हो तथा सुख स्थान में राहु या शनि अथवा राहु-मंगल हों तो जातक राज्य सेवा में उच्च पद पाकर पतनोन्मुख होता है।

19. राहु व केतु केन्द्र में हो और त्रिकोणपति से संबंध करे या राहु, केतु त्रिकोण में हो और केन्द्रेश से संबंध करें तो उत्तमोत्तम राजयोग होता है।

20. धनुलग्न में जन्म काल में तुला, धनु, मीन व लग्न में शनि बैठा हो तो जातक राजकुल में जन्म होता है और वह राजा होता है।

21. धनुलग्न में मीन का शुक्र यदि केन्द्र (1/4/7/10) में बैठा हो तो विद्या, कला, बहुगुणों से शोभित कामधेनु के बराबर भोग से पूर्ण, सुंदरी स्त्रियों के साथ विलास करने वाला, देश, नगर देखने में व्यस्त राजा होता है।

22. धनुलग्न में दसवें स्थान में बुध-सूर्य हो और मंगल राहु छठे स्थान में हो तो इस राजयोग में उत्पन्न जातक मनुष्यों में श्रेष्ठ होता है।

23. धनुलग्न में अपने घर का होकर सूर्य यदि नवम स्थान में हो तो उसका भाई नहीं जीता है। यदि कोई भाई जी भी गया तो राजा होता है।

24. धनुलग्न में दशम स्थान में गुरु, बुध, शुक्र, चंद्रमा हो तो जातक का सब कार्य सिद्ध होता है और वह राजमान्य होता है।

25. धनुलग्न में अपने उच्च के समीप रहकर सूर्य यदि त्रिकोण में हो तो नीच कुलोत्पन्न भी राजा होता है।

26. धनुलग्न में उच्चाभिलाषी मीन राशि का होता हुआ सूर्य यदि जन्म लग्न से त्रिकोण में हो तथा चंद्रमा लग्न में और गुरु केन्द्रगत हो तो वह बहु रत्न पूर्ण पृथ्वी का पालन करता है।

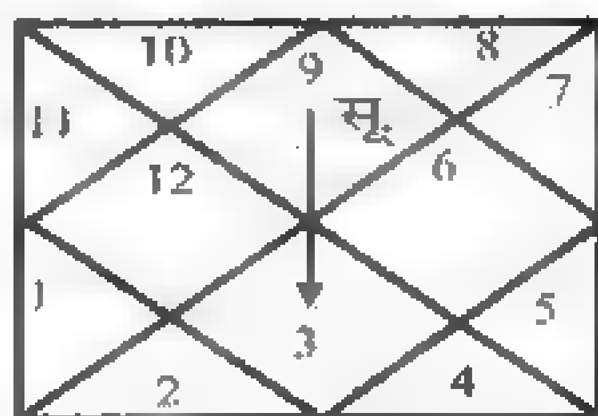
27. धनुलग्न में लग्न से चतुर्थ स्थान में शुक्र और दशम में मंगल सूर्य शनैश्चर के साथ हो तो वह निश्चित ही राजा होता है।

28. धनुलग्न में धन का गुरु, तुला राशि में शनि चंद्रमा से युक्त और मेष का सूर्य लग्न में हो, तो कीर्तिमान राजयोग होता है।

❑❑❑

धनुलग्न में सूर्य की स्थिति

धनुलग्न में सूर्य की स्थिति प्रथम स्थान में



धनुलग्न में सूर्य भाग्येश है। लग्नेश गुरु का मित्र होने से यह पूर्ण राजयोग कारक एवं शुभ फलदायक है। सूर्य यहां प्रथम स्थान में धनुराशि का होगा। ऐसा जातक आत्मविश्वासी, परिश्रमी, पराक्रमी, उद्यमी-उत्साही एवं प्रबल महत्त्वाकांक्षी होता है। जातक ऊंचे लम्बे कद, हृष्ट-पुष्ट शरीर का स्वामी होता है। जातक के शरीर को वात पित्तादि विकार पीड़ित करते रहेंगे।

दृष्टि–लग्नस्थ सूर्य की दृष्टि सप्तम भाव (मिथुन राशि) पर होगी। फलतः भार्या, पुत्र, बन्धु-बान्धव के विषय में मन में विकलता रहेगी।

निशानी–जातक का जन्म सूर्योदय के समय होगा तथा उसके शरीर के दायें भाग में सिर से लेकर भुजा तक लाल रंग का निशान होगा।

दशा–सूर्य की दशा-अंतर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चंद्र**–'भोज़संहिता' के अनुसार धनुलग्न में चंद्र+सूर्य की युति लग्न स्थान में होने के कारण जातक का जन्म पौष कृष्ण अमावस्या को प्रातः सूर्योदय के समय (6 से 8 के मध्य) होता है। भाग्येश व अष्टमेश की युति लग्न स्थान में है। जहां सूर्य मित्र राशि एवं चंद्रमा सम राशि में होगा। ऐसा जातक अस्थिर मनोवृत्ति वाला और उद्विग्न (विकल) अंगों वाला होगा।
2. **सूर्य+मंगल**–जातक महान भाग्यशाली, राजा के समान पराक्रमी व यशस्वी होगा।

3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में सूर्य भाग्येश होगा। प्रथम स्थान पर धनु राशिगत यह युति वस्तुतः भाग्येश सूर्य की सप्तमेश+दशमेश बुध के साथ युति होगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह सप्तम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः ऐसा जातक बुद्धिमान, धनवान बड़ा व्यापारी होगा। बुध के कारण **'कुलदीपक योग'** बना। बुध सप्तम भाव में स्थित अपनी राशि को देखेगा। ऐसे जातक का भाग्योदय विवाह के तत्काल बाद होगा। जातक समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा एवं अपने कुटुम्ब-परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा।

4. **सूर्य+गुरु**–गुरु के कारण यहां 'हंस योग' बनता है। भाग्येश और लग्नेश की युति से व्यक्ति राजगुरु के पद को प्राप्त करता हुआ, धन, वैभव व समृद्धि को प्राप्त करता है।

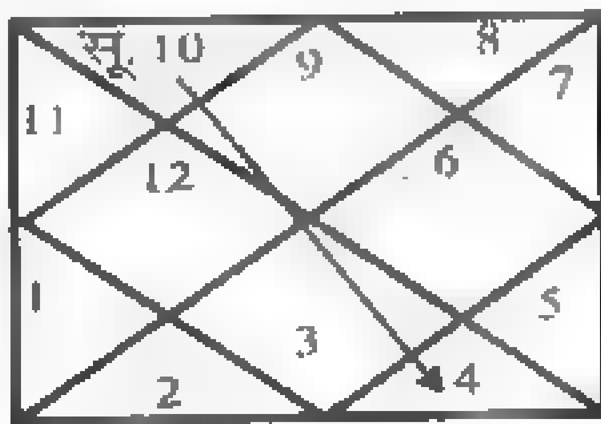
5. **सूर्य+शुक्र**–जातक के भाग्योदय में रुकावट आयेगी। संघर्ष की स्थिति बनी रहेगी।

6. **सूर्य+शनि**–धनुलग्न के प्रथम स्थान में सूर्य+शनि की युति वस्तुतः धनेश, पराक्रमेश शनि एवं भाग्येश सूर्य की युति होगी। सूर्य यहां मित्र स्थान में एवं शनि सम राशि में है। जातक स्वयं के पराक्रम व पुरुषार्थ से धन अर्जित करेगा। परन्तु पिता की मृत्यु के बाद ही जातक की पुरुषार्थ रंग लायेगा।

7. **सूर्य+राहु**–भाग्योदय में बाधा रुकावटें आयेंगी।

8. **सूर्य+केतु**–जातक यशस्वी होगा, तेजस्वी होगा।

धनुलग्न में सूर्य की स्थिति द्वितीय स्थान में



धनुलग्न में सूर्य भाग्येश है। लग्नेश गुरु का मित्र होने से यह पूर्ण राजयोग कारक तथा शुभ फलदायक है। सूर्य यहां द्वितीय स्थान में मकर (शत्रु) राशि का होगा। जातक धनी होगा। उसे कुटुम्ब व भाग्य का सुख मिलता रहेगा। ऐसा जातक अपने बुद्धिबल से राज-दरबार में उत्तम पद को प्राप्त करता है।

दृष्टि–द्वितीयस्थ सूर्य की दृष्टि अष्टम भाव (कर्क राशि) पर होगी। ऐसा जातक अपने शत्रुओं का नाश करने में समर्थ होता है।

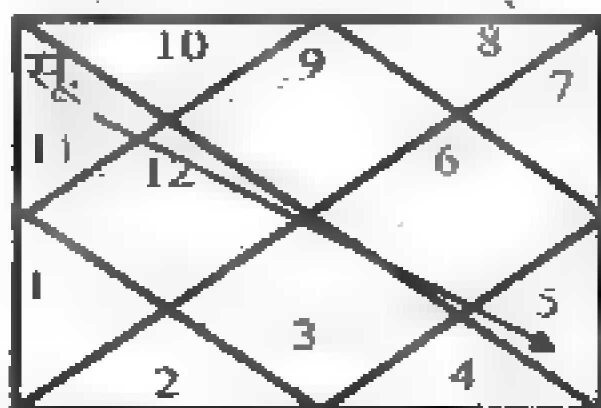
निशानी–जातक को मुख रोग संभव है। जातक राजा (कोर्ट) से दण्डित हो सकता है।

दशा–सूर्य की दशा मिश्रित फल देगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चंद्रमा**–'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में चंद्र+सूर्य की युति दूसरे स्थान में होने के कारण जातक का जन्म माघ कृष्ण अमावस्या को प्रातः सूर्योदय से पूर्व (4 से 6 के मध्य) होता है। भाग्येश+अष्टमेश की युति मकर राशि में है। जहां सूर्य शत्रु क्षेत्री होगा। चंद्रमा सम राशि में होगा। जातक धनवान होगा। तथा उसकी वाणी ओजस्वी होगी।
2. **सूर्य+मंगल**–जातक महाधनी होगा। जातक का भाग्योदय प्रथम पुत्र के जन्म के बाद होगा।
3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में सूर्य भाग्येश होगा। द्वितीय स्थान में मकर राशिगत यह युति वस्तुतः भाग्येश सूर्य की सप्तमेश+दशमेश बुध के साथ युति होगी। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह अष्टम भाव को देखेंगे। फलतः ऐसा जातक बुद्धिमान, धनवान एवं व्यापारी होगा। जातक दीर्घायु को प्राप्त करेगा। ऐसा जातक समाज का लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा। जातक की आमदनी के जरिए दो तीन प्रकार के रहेंगे।
4. **सूर्य+गुरु**–यहां गुरु नीच का होगा पर सूर्य के साथ होने से व्यक्ति पुरोहिताई एवं तंत्र-मंत्र से धन कमायेगा।
5. **सूर्य+शुक्र**–धन प्राप्ति के संसाधनों में लगातार संघर्ष की स्थिति बनी रहेगी।
6. **सूर्य+शनि**–धनुलग्न में सूर्य+शनि की युति वस्तुतः भाग्येश+धनेश, पराक्रमेश शनि के साथ युति होगी। शनि यहां स्वगृही है व सूर्य शत्रु क्षेत्री है। फलतः जातक धनवान एवं भाग्यशाली होगा। पिता की मृत्यु के बाद ही जातक धनवान होगा।
7. **सूर्य+राहु**–धन के घड़े में भारी छेद, धन आयेगा व खर्च होता चला जायेगा।
8. **सूर्य+केतु**–संघर्ष की स्थिति रहेगी।

धनुलग्न में सूर्य की स्थिति तृतीय स्थान में



धनुलग्न में सूर्य भाग्येश है। लग्नेश गुरु का मित्र होने से यह पूर्ण राजयोग कारक एवं शुभ फलदायक है। सूर्य यहां तृतीय स्थान में कुंभ (शत्रु) राशि में होगा। ऐसा जातक परम पराक्रमी, प्रतापी व तेजस्वी होता है। ऐसे जातक कष्ट–दुःख

व संघर्ष से नहीं घबराते। सहोदर भ्राता के व्यवहार से जातक व्याकुल रहता है।

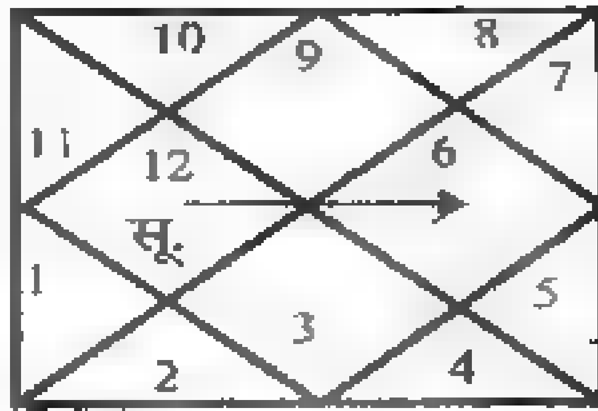
दृष्टि—लग्नस्थ सूर्य की दृष्टि भाग्यस्थान अपने ही घर (सिंह) राशि पर होगी। ऐसे जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी। परन्तु उसमें विवाद रहेगा।

दशा—सूर्य की दशा में जातक का भाग्योदय होगा एवं पराक्रम बढ़ेगा।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चंद्रमा**—'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में चंद्र+सूर्य युति तीसरे स्थान में होने के कारण जातक का जन्म फाल्गुण कृष्ण अमावस्या को रात्रि 2 से 4 के मध्य होता है। भाग्येश+अष्टमेश की युति कुंभ राशि में होने से जातक महान पराक्रमी होगा तथा समाज के द्वारा अथवा राजा (शासन) के द्वारा सम्मानित होगा।
2. **सूर्य+मंगल**—जातक महान पराक्रमी होगा। उसके अनेक भाई व शुभचिंतक मित्र होंगे। परन्तु जातक के छोटे भाई की अकाल मृत्यु होगी।
3. **सूर्य+बुध**—'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न मे सूर्य भाग्येश होगा। तृतीय स्थान में कुंभ राशिगत यह युति वस्तुतः भाग्येश सूर्य की सप्तमेश+दशमेश बुध के साथ युति होगी। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह भाग्य स्थान को देखेंगे जो कि सूर्य का स्वयं का घर है। फलतः ऐसे जातक का भाग्योदय शीघ्र होगा। 26 वर्ष की आयु में जातक की किस्मत जरूर चमकेगी। जातक बुद्धिमान तथा समाज का लब्ध-प्रतिष्ठत व्यक्ति होगा।
4. **सूर्य+गुरु**—यहां गुरु होने से व्यक्ति कर्मकाण्ड व पण्डिताई में निपुण होता है। जातक राजा का मंत्री होता है।
5. **सूर्य+शुक्र**—भाइयों-कुटम्बीजनों के मध्य मनमुटाव रहेगा।
6. **सूर्य+शनि**—धनुलग्न के तृतीय स्थान में सूर्य+शनि युति वस्तुतः भाग्येश सूर्य की तृतीयेश, धनेश शनि के साथ युति होगी। शनि यहां अपनी मूल त्रिकोण राशि में होगा। फलतः जातक पराक्रमी होगा। उसे बड़े भाई का सुख प्राप्त नहीं होगा। बड़े भाई की मृत्यु के बाद ज़ातक की किस्मत चमकेगी।
7. **सूर्य+राहु**—भाइयों में वैमनस्य रहेगा।
8. **सूर्य+केतु**—जातक यशस्वी होगा। मित्रों का साथ रहेगा।

धनुलग्न में सूर्य की स्थिति चतुर्थ स्थान में



धनुलग्न में सूर्य भाग्येश है। लग्नेश गुरु का मित्र होने से यह पूर्ण राजयोगकारक शुभ फलदायक है। सूर्य यहां चतुर्थ स्थान में मीन (मित्र) राशि का होगा। जातक को जमीन-जायदाद, माता-घर, आध्यात्म व भाग्योदय का सुख मिलेगा। जातक अपनी खुद का भव्य भवन अपनी स्वयं की कमाई से बनायेगा।

दृष्टि—चतुर्थ भावगत सूर्य की दृष्टि दशम स्थान (कन्या राशि) पर होने से जातक को पिता, राज्य, शासन से धन, यश व पद की प्राप्ति होगी।

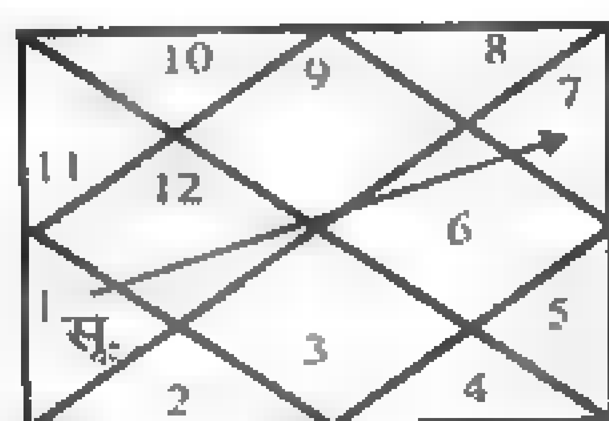
दशा—सूर्य की दशा-अंतर्दशा में जातक की नौकरी लगेगी व उसका भाग्योदय होगा।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चंद्रमा**—'भोज संहिता' के अनुसार धनुलग्न में चंद्र+सूर्य युति चौथे स्थान में होने के कारण जातक का जन्म चैत्र कृष्ण अमावस्या की मध्य रात्रि को 12 से 2 के बजे मध्य होता है। भाग्येश सूर्य व अष्टमेश चंद्र की युति यहां केन्द्र में है। ऐसे जातक के चेहरे पर सदा हंसी व प्रसन्नता रहती है। जातक के पास उत्तम वाहन होगा।
2. **सूर्य+मंगल**—जातक के पास भौतिक सुविधाएं पूर्ण रूप से बनी रहेंगी।
3. **सूर्य+बुध**—'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में सूर्य भाग्येश होगा। चतुर्थ स्थान में मीन राशिगत यह युति वस्तुतः भाग्येश सूर्य की सप्तमेश+दशमेश बुध के साथ युति होगी। बुध यहां नीच राशि का होगा। दोनों ग्रह यहां बैठकर दशम स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे जो कि बुध की उच्च राशि होगी। फलतः ऐसा जातक बुद्धिमान होगा। 'कुलदीपक योग' के कारण जातक अपने कुटुम्ब-परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा। जातक की किस्मत का सितारा 26 वर्ष की आयु में चमकेगा। जातक समाज का लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
4. **सूर्य+गुरु**—यहां गुरु के कारण 'हंस योग' बनेगा। ऐसा जातक राजगुरु के पद को प्राप्त करता हुआ, धन-वैभव को प्राप्त करता है।
5. **सूर्य+शुक्र**—भौतिक संसाधनों की प्राप्ति हेतु जातक को काफी संघर्ष करना पड़ेगा।

6. **सूर्य+शनि**–धनुलग्न के चतुर्थ स्थान में सूर्य+शनि की युति वस्तुतः भाग्येश सूर्य की तृतीयेश, धनेश शनि के साथ युति होगी। शनि यहां मीन शत्रु राशि में एवं सूर्य मित्र राशि में होगा। जातक के माता-पिता बीमार रहेंगे। जातक धनवान होगा एवं सभी प्रकार की सुख-सुविधाओं से युक्त जीवन जीयेगा।
7. **सूर्य+राहु**–जातक को माता-पिता का सुख कम मिलेगा।
8. **सूर्य+केतु**–जातक की भौतिक सुखों-संसाधनों की प्राप्ति अचानक होगी।

धनुलग्न में सूर्य की स्थिति पंचम स्थान में



धनुलग्न में सूर्य भाग्येश है। लग्नेश गुरु का मित्र होने से यह पूर्ण राजयोग कारक तथा शुभ फलदायक है। सूर्य यहां पंचम भाव में मेष (उच्च) राशि में होगा। मेष राशि के 10 अंशों तक सूर्य परमोच्च का होगा। यहां सूर्य शुभ व उन्नतिकारक है। जातक राजा व राजा के समान उच्च वैभव से युक्त, उच्च शिक्षा से युक्त होगा।

दृष्टि–पंचमस्थ सूर्य की दृष्टि एकादश स्थान (तुला राशि) पर होगी। जातक को व्यापार-व्यवसाय में उत्तम लाभ होगा।

निशानी–जातक प्रथम पुत्र के विषय में संतप्त रहेगा।

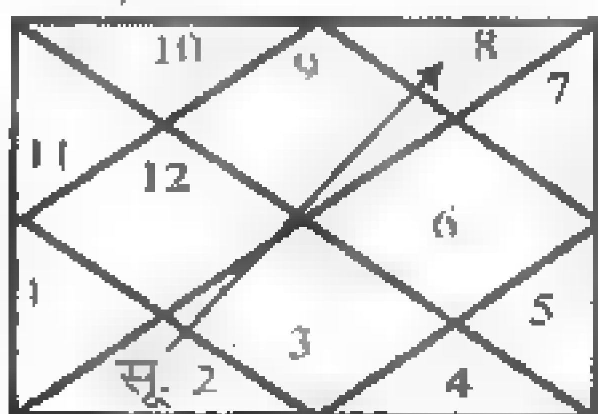
दशा–सूर्य की दशा-अंतर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा। उसे उत्तम संतति व सर्वत्र सफलता मिलेगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चंद्रमा**–'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में चंद्र+सूर्य युति पांचवें स्थान में होने के कारण जातक का जन्म वैशाख कृष्ण अमावस्या को रात्रि 10 से 12 बजे के मध्य होता है। अष्टमेश चंद्र व भाग्येश सूर्य पंचम भाव में होने पर सूर्य उच्च का होगा। ऐसा जातक परम महत्त्वाकांक्षी होगा। जातक उच्च शिक्षित व राज्याधिकारी होगा। जातक की संतति भी शिक्षित व तेजस्वी होगी।
2. **सूर्य+मंगल**–'किम्बहुना योग' के कारण जातक का पराक्रम राजा से बढ़कर होगा। उसकी संतति भी तेजस्वी होगी। जातक शिक्षित होगा। जातक को आध्यात्मिक ऊर्जा की प्राप्ति होती रहेगी।

3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में सूर्य भाग्येश होगा। पंचम स्थान में 'मेष राशिगत' यह युति वस्तुतः भाग्येश सूर्य की सप्तमेश+दशमेश बुध के साथ युति होगी। सूर्य यहां उच्च का होगा। यहां पर यह युति खिलेगी। दोनों ग्रह लाभ स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। ऐसा जातक बुद्धिमान, शिक्षित, प्रज्ञावान होगा। ईश्वर कृपा से एक तेजस्वी पुत्र अवश्य होगा। कन्या संतति भी होगी। जातक भाग्यशाली होगा। सरकारी क्षेत्र का राजनीति में जातक का दबदबा रहेगा। जातक समाज का लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
4. **सूर्य+गुरु**–सूर्य के साथ लग्नेश गुरु जातक को प्राचीन शास्त्रों का जानकार बनाता है एवं राजगुरु की पदवी दिलाता है।
5. **सूर्य+शुक्र**–जातक को विद्या अध्ययन में रुकावटें आयेंगी।
6. **सूर्य+शनि**–धनुलग्न के पंचम स्थान में सूर्य+शनि की युति वस्तुतः भाग्येश सूर्य की तृतीयेश, धनेश शनि के साथ युति होगी। शनि यहां नीच के सूर्य के साथ होने से 'नीचभंग राजयोग' की सृष्टि होगी। ऐसा जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली होगा। जातक की भाइयों से कम बनेगी। पिता की मृत्यु के बाद जातक की उन्नति होगी।
7. **सूर्य+राहु**–भृगुसूत्र के अनुसार–'राहु केतु युते सर्पशापात सुतक्षयः' जातक को अपुत्र का योग बनता है पर पूजा-पाठ करने पर संतान होगी।
8. **सूर्य+केतु**–संतति में बाधा संभव है।

धनुलग्न में सूर्य की स्थिति षष्टम स्थान में



धनुलग्न में सूर्य भाग्येश है। लग्नेश गुरु का मित्र होने से यह पूर्ण राजयोग कारक तथा शुभ फलदायक है। सूर्य यहां छठे स्थान में वृष (शत्रु) राशि में होगा। सूर्य की यह स्थिति 'भाग्यभंग योग' बनाती है। ऐसे जातक को भाग्योदय हेतु काफी संघर्ष करना पड़ेगा। भृगुसूत्र के अनुसार 'जातिशत्रु बाहुल्यम्' जातक के अपनी जाति में ही उसके शत्रु बहुत होंगे।

दृष्टि–छठे स्थान में स्थित सूर्य की दृष्टि द्वादश भाव (वृश्चिक राशि) पर होगी। जातक खर्चीले स्वभाव का होगा तथा यात्राएं बहुत करेगा।

निशानी–जातक के जन्म समय पर पिता घर से बाहर होगा।

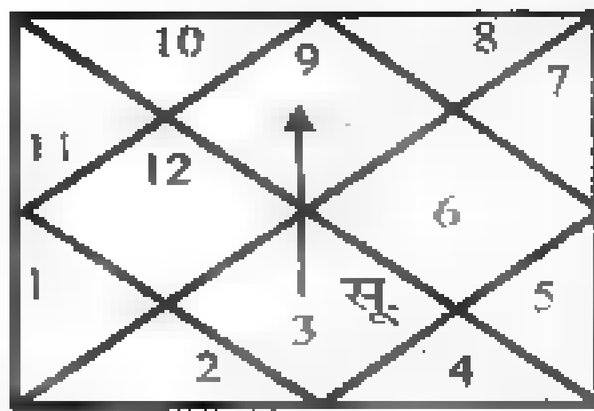
दशा–सूर्य की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चंद्रमा**–'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में चंद्र+सूर्य की युति सातवें स्थान में होने के कारण जातक का जन्म ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या को रात्रि 8 से 10 बजे के मध्य होता है। अष्टमेश चंद्रमा उच्च का, सूर्य के साथ होने से 'सरल नामक विपरीत राजयोग' बना। जातक धनी-मानी अभिमानी होगा। परन्तु दुर्घटना का भय या शत्रु द्वारा नुकसान पहुंचने का योग है।
2. **सूर्य+मंगल**–मंगल के कारण 'संततिहीन योग' अथवा 'विद्याबाधा योग' बनेगा। प्रारम्भिक विद्या में बाधाएं आयेंगी।
3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में सूर्य भाग्येश होगा। छठे स्थान में वृष राशिगत यह युति वस्तुतः भाग्येश सूर्य की सप्तमेश+दशमेश बुध के साथ युति होगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह व्यय भाव को देखेंगे। सूर्य के छठे जाने से 'भाग्यभंग योग' तथा बुध के छठे जाने से 'विवाहभंग योग' तथा 'राजभंग योग' भी बनेगा। फलतः यहां पर यह युति ज्यादा सार्थक नहीं है। जातक बुद्धिमान होगा। भाग्योदय हेतु जातक को काफी संघर्ष करना पड़ेगा। फिर भी जातक समाज का लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
4. **सूर्य+गुरु**–गुरु के छठे जाने से 'लग्नभंग योग' एवं 'सुखहीन योग' भी बनेगा। ऐसा जातक प्राचीन मंत्र-तंत्र विद्या का जानकार होता है पर अपनी प्रतिष्ठा बराबर नहीं जमा पाता।
5. **सूर्य+शुक्र**–शुक्र के कारण 'हर्ष नामक' विपरीत राजयोग के कारण जातक धनी होगा, पर शत्रुओं का प्रकोप रहेगा।
6. **सूर्य+शनि**–धनुलग्न के छठे स्थान में सूर्य+शनि की युति वस्तुतः भाग्येश सूर्य की मारकेश, तृतीयेश शनि के साथ युति होगी। इस युति के कारण 'भाग्यभंग योग', 'धनहीन योग' एवं 'पराक्रमभंग योग' बनेगा। जातक को धन कमाने हेतु प्रतिष्ठा प्राप्त करने हेतु एवं भाग्योदय हेतु बहुत परेशानी उठानी पड़ेगी। पिता के जीवित रहते जातक का भाग्योदय नहीं होगा।
7. **सूर्य+राहु**–राहु यहां नेत्र रोग एवं भाग्योदय में कष्ट देगा।
8. **सूर्य+केतु**–केतु नेत्रों का ऑपरेशन करायेगा।

धनुलग्न में सूर्य की स्थिति सप्तम स्थान में

धनुलग्न में सूर्य भाग्येश है। लग्नेश गुरु का मित्र होने से यह पूर्ण राजयोग कारक है। शुभ फलदायक है। सूर्य यहां सप्तम स्थान में मिथुन (सम) राशि में होगा।



सप्तमस्थ सूर्य को प्राय: पत्नी के लिए अच्छा नहीं माना गया परन्तु यहां सूर्य अपनी राशि से एकादश स्थान में होने से स्त्री-नौकरी व्यवसाय का सुख देता है। जातक राजनीति, शासन-प्रबंधन के क्षेत्र में आगे बढ़ता है।

दृष्टि–सूर्य की दृष्टि लग्न स्थान (धनु राशि) पर होने से जातक को परिश्रमपूर्वक किये गये प्रत्येक कार्य में सफलता निश्चित रूप से मिलेगी।

निशानी–जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक की पत्नी अभिमानी घमण्डी होगी।

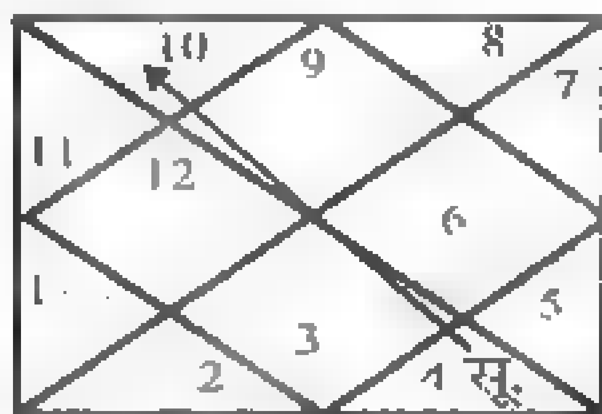
दशा–सूर्य की दशा-अंतर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा एवं इच्छित उन्नति मिलेगी। सूर्य की दशा में बुध व शनि के अंतर्दशा में जातक की तबियत खराब होगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चंद्रमा**–'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में चंद्र+सूर्य की युति सातवें स्थान में होने के कारण जातक का जन्म आषढ़ कृष्ण अमावस्या को सूर्यास्त के समय सायं 6 बजे के लगभग होता है। अष्टमेश चंद्रमा व भाग्येश सूर्य यहां केंद्र में है। जातक की पत्नी से कम निभेगी। वाहन दुर्घटना से अंग-भंग होने का भय रहेगा।
2. **सूर्य+मंगल**–जातक का गृहस्थ सुख उत्तम परन्तु उसकी पत्नी उग्र स्वभाव की झगड़ालू होगी।
3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में सूर्य भाग्येश होगा। सातवें स्थान पर मिथुन राशिगत यह युति वस्तुत: भाग्येश सूर्य की सप्तमेश+दशमेश बुध के साथ युति होगी। बुध यहां स्वगृही होगा फलत: 'भद्र योग' एवं 'कुल दीपक योग' की सृष्टि होगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह लग्न को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलत: जातक परम बुद्धिमान, धनवान होगा। विवाह के तत्काल बाद भाग्योदय होगा। जातक का ससुराल पक्ष धनवान होगा। जातक की पत्नी तेज स्वभाव की होगी। जातक राजा के समान महान पराक्रमी एवं वैभवशाली होगा।
4. **सूर्य+गुरु**–यहां गुरु होने से 'केसरी योग' एवं 'कुलदीपक योग' बनता है। ऐसा जातक राजगुरु के पद को प्राप्त करता है तथा राजनेताओं को मार्गदर्शन देता है।

5. **सूर्य+शुक्र**–जातक के पेट में तकलीफ, आंतों में सूजन एवं कब्ज की बीमारी, गर्मी की शिकायत रहेगी।
6. **सूर्य+शनि**–धनुलग्न के सातवें स्थान में मिथुन राशिगत सूर्य+शनि की युति वस्तुतः भाग्येश सूर्य की मारकेश तृतीयेश शनि के साथ युति होगी। सूर्य एवं शनि दोनों की दृष्टि लग्न स्थान पर होने से जातक उन्नति पथ की ओर आगे बढ़ेगा। जातक पराक्रमी होगा। जातक का ससुराल धनाढ्य होगा, फिर भी पत्नी से विचार कम मिलेंगे।
7. **सूर्य+राहु**–पत्नी से वैमनस्य विस्फोटक होगा, तलाक संभव है।
8. **सूर्य+केतु**–उदर या गुदा के लिए शल्य चिकित्सा संभ[redacted] है।

धनुलग्न में सूर्य की स्थिति अष्टम स्थान में



धनुलग्न में सूर्य भाग्येश है। लग्नेश गुरु का मित्र होने से यह पूर्ण राजयोग कारक तथा शुभ फलदायक है। सूर्य यहां अष्टम स्थान में कर्क (मित्र) राशि में होगा। सूर्य की इस स्थिति में 'भाग्यभंग योग' बनेगा। सूर्य अपनी राशि से बारहवें होने के कारण जातक को भाग्योदय हेतु बहुत संघर्ष करना पड़ेगा। यदि यहां गुरु बलवान न हो तो जातक का पिता छोटी उम्र में ही गुजर जायेगा। कुटुम्बी मददगार नहीं होंगे।

दृष्टि–अष्टमस्थ सूर्य की दृष्टि धन स्थान (मकर राशि) पर होने से जातक को पिता की सम्पत्ति नहीं मिलेगी। जातक अपने बाहुबल से रुपया कमायेगा।

निशानी–जातक का दाईं आंख नकली होगी एवं वाणी कड़वी होगी।

दशा–सूर्य की दशा-अंतर्दशा कष्टदायक रहेगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चंद्रमा**–'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में चंद्र+सूर्य की युति आठवें स्थान में होने के कारण जातक का जन्म श्रावण कृष्ण अमावस्या को सायंकाल 4 से 6 बजे के मध्य होता है। अष्टमेश चंद्रमा अष्टम भाव में स्वगृही होने से 'सरल नामक' विपरीत राजयोग बना। जातक धनी-मानी, अभिमानी होगा पर शत्रु द्वारा चोट या वाहन दुर्घटना से भय होने का योग बनता है।
2. **सूर्य+मंगल**–मंगल नीच का होकर सूर्य के साथ होने से वैवाहिक समस्या या राजकीय अधिकारियों द्वारा परेशानियां आयेंगी।

3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में सूर्य भाग्येश होगा। अष्टम स्थान में कर्क राशिगत यह युति वस्तुतः भाग्येश सूर्य की सप्तमेश+दशमेश बुध के साथ युति होगी। बुध शत्रुक्षेत्री है। यहां बैठकर दोनों ग्रह धन भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। सूर्य आठवें जाने से 'भाग्यभंग योग' तथा बुध आठवें जाने से 'विवाहभंग योग' एवं 'राजभंग योग' बना। यहां पर यह युति ज्यादा सार्थक नहीं है। जातक बुद्धिमान तथा भाग्यशाली होगा परन्तु इसे भाग्योदय हेतु बहुत संघर्ष करना पड़ेगा। जातक समाज का लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

4. **सूर्य+गुरु**–यहां सूर्य के साथ गुरु उच्च का होगा तथा 'लग्नभंग योग' एवं 'सुखभंग योग' की सृष्टि करेगा। जातक राजगुरु का पद प्राप्त करेगा पर संघर्ष बहुत रहेगा।

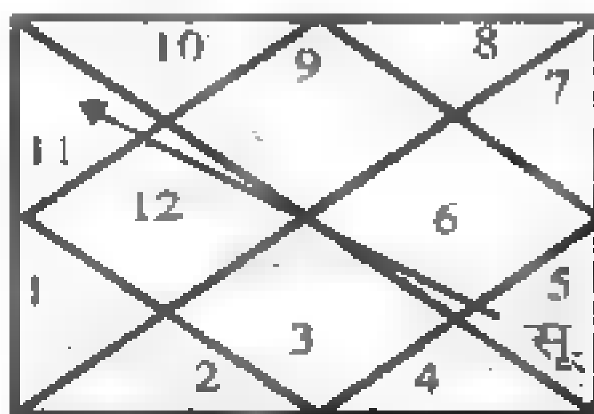
5. **सूर्य+शुक्र**–शुक्र सूर्य के साथ होने से 'हर्ष नामक' विपरीत राजयोग बनेगा। जातक के साथ दुर्घटना हो सकती है। टांग में चोट लग सकती है।

6. **सूर्य+शनि**–धनुलग्न के आठवें स्थान में सूर्य+शनि की युति वस्तुतः भाग्येश सूर्य की मारकेश शनि के साथ युति होगी। इस युति के कारण 'भाग्यभंग योग', 'धनहीन योग' एवं 'पराक्रमभंग योग' की क्रमशः सृष्टि होगी। ऐसे जातक को धन कमाने हेतु, प्रतिष्ठा की प्राप्ति हेतु एवं भाग्योदय हेतु बड़ी दिक्कतें उठानी पड़ेंगी। जातक के शत्रु बहुत होंगे। पिता-पुत्र की नहीं बनेगी।

7. **सूर्य+राहु**–यहां पर राहु शत्रुओं द्वारा हानि पहुंचायेगा।

8. **सूर्य+केतु**–यहां केतु अनहोनी दुर्घटना करा सकता है, पर बचाव होगा।

धनुलग्न में सूर्य की स्थिति नवम स्थान में



धनुलग्न में सूर्य भाग्येश है। लग्नेश गुरु का मित्र होने से यह पूर्ण राजयोग कारक तथा शुभ फलदायक है। सूर्य यहां नवम स्थान में सिंह राशि का होकर स्वगृही होगा। सिंह राशि के 20 अंशों तक सूर्य मूलत्रिकोण का कहलायेगा। ऐसे जातक का भाग्य बहुत बलवान होगा। जातक का पिता प्रतिष्ठित, धनवान एवं दीर्घायु वाला होगा। जातक अपने भाग्यबल से खूब धन कमायेगा।

दृष्टि–नवमस्थ सूर्य की दृष्टि तृतीय स्थान (कुंभ राशि) पर होगी। ऐसे जातक की छोटे भाइयों के साथ पटेगी। जातक कुटम्बीजनों का सहायक एवं अच्छा मित्र साबित होगा।

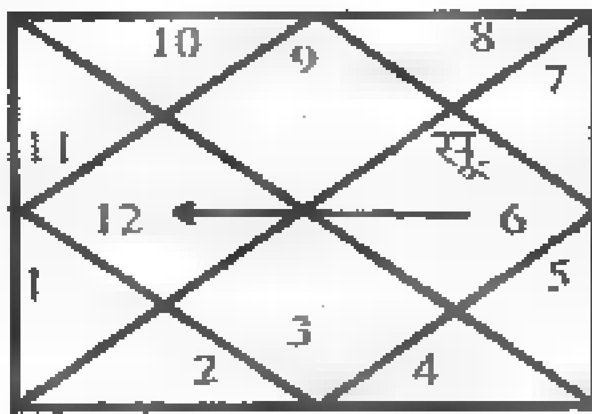
निशानी–जातक यात्रा का शौकीन होगा।

दशा–सूर्य की दशा-अंतर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा। किस्मत खुलेगी एवं धन की प्राप्ति होगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चंद्रमा**–'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में चंद्र+सूर्य की युति नवम स्थान में होने के कारण जातक का जन्म भाद्रकृष्ण अमावस्या को दोपहर 2 से 4 बजे के मध्य होता है। यहां भाग्येश सूर्य स्वगृही होकर अष्टमेश चंद्रमा के साथ भाग्य में वृद्धि करायेगा। जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक धर्मात्मा व परोपकारी होगा।
2. **सूर्य+मंगल**–मंगल की युति से राजयोग बनेगा। जातक के पास बड़ी जमीन-जायदाद होगी।
3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में सूर्य भाग्येश होगा। नवम स्थान में सिंह राशिगत यह युति वस्तुतः भाग्येश सूर्य की सप्तमेश+दशमेश बुध के साथ युति होगी। सूर्य यहां स्वगृही होगा। फलतः व्यक्ति बुद्धिशाली होगा। बलवान भाग्येश की दशमेश के साथ युति होने के कारण जातक के भाग्य का सितारा 26 वर्ष की आयु में चमकेगा। यहां पर यह युति खिलेगी। जातक पराक्रमी होगा तथा उसे मित्र, परिजनों की मदद मिलती रहेगी। जातक समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
4. **सूर्य+गुरु**–सूर्य के साथ गुरु होने से जातक राजगुरु की उच्च पदवी या राजा के तुल्य उच्च पद को प्राप्त करेगा। जातक धार्मिक होगा।
5. **सूर्य+शुक्र**–परस्पर शत्रु ग्रहों की युति से भाग्योदय हेतु संघर्ष रहेगा।
6. **सूर्य+शनि**–धनुलग्न में नवम स्थान में स्वगृही सूर्य के साथ की युति वस्तुतः भाग्येश सूर्य की मारकेश, तृतीयेश शनि के साथ होगी। ऐसे जातक का पिता सम्पन्न होगा, परन्तु जातक की पिता के साथ कम पटेगी। भाइयों से भी कम निभेगी। जातक का सही भाग्योदय पिता की मृत्यु के बाद होगा।
7. **सूर्य+राहु**–ऐसे जातक अति उत्साही होते हैं। जिसके कारण कई बार काम बिगड़ जाता है।
8. **सूर्य+केतु**–जातक यशस्वी जीवन जीयेगा। उसे आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलती रहेगी।

धनुलग्न में सूर्य की स्थिति दशम स्थान में



धनुलग्न में सूर्य भाग्येश है। लग्नेश गुरु का मित्र होने से यह पूर्ण राजयोग कारक तथा शुभ फलदायक है। सूर्य यहां दशम स्थान में कन्या (सम) राशि में होगा। सूर्य यहां 'दिग्बली' होगा। ऐसा जातक सरकारी, अर्ध सरकारी नौकरी में उच्च पद प्राप्त करेगा। यदि जातक खुद का व्यापार करेगा तो भी उन्नति पथ की ओर आगे बढ़ेगा। जातक को मकान, वाहन, भवन का पूर्ण सुख मिलेगा।

दृष्टि–दशमस्थ सूर्य की दृष्टि चतुर्थ भाव (मीन राशि) पर होगी। फलतः जातक की माता थोड़ी बीमार रहेगी।

निशानी–जातक को पिता व राजनैतिक सहयोग मिलता रहेगा।

दशा–सूर्य की दशा-अंतर्दशा में जातक की उन्नति व भाग्योदय होगा।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चंद्रमा**–'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में चंद्र+सूर्य की युति दशम स्थान में होने के कारण जातक का जन्म आश्विन कृष्ण अमावस्या को दोपहर 12 बजे के आस-पास होता है। अष्टमेश चंद्र एवं भाग्येश सूर्य के केन्द्र में होने से जातक के पास एक से अधिक वाहन होंगे। जातक को वाहन दुर्घटना से अंग-भंग होने का भय बना रहेगा।
2. **सूर्य+मंगल**–मंगल के यहां 'दिग्बली' होकर सूर्य के साथ होने से जातक बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वमी होगा। जातक उच्च शिक्षा प्राप्त करके विदेश जायेगा।
3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में सूर्य भाग्येश होगा। दशम स्थान में कन्या राशिगत यह युति वस्तुतः भाग्येश सूर्य की सप्तमेश+दशमेश बुध के साथ युति होगी। बुध यहां उच्च का होगा। जिसके कारण क्रमशः 'भद्र योग' एवं 'कुलदीपक योग' बनेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी व ऐश्वर्यशाली होगा। उसके एक से अधिक वाहन होंगे। जातक बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी होगा। राज्य (सरकार) में उसका दबदबा रहेगा।
4. **सूर्य+गुरु**–यहां सूर्य के साथ गुरु 'केसरीयोग' एवं कुलदीपक योग की सृष्टि करेगा। जातक राजगुरु के उच्च पद को प्राप्त करेगा। जातक को तंत्र-मंत्र की पूरी जानकारी होगी।

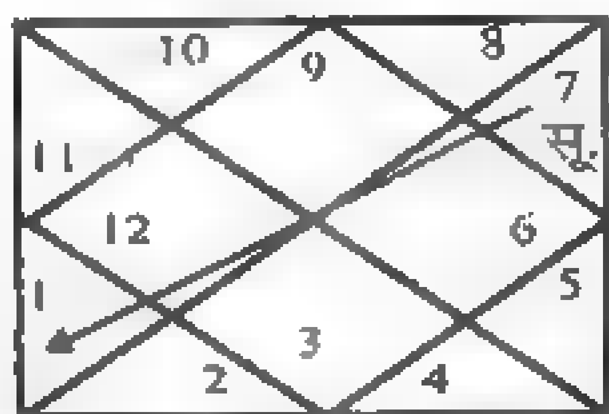
5. **सूर्य+शुक्र**–जातक को सरकारी नौकरी प्राप्ति हेतु संघर्ष करना पड़ेगा। जातक के पास एकाधिक वाहन होंगे।

6. **सूर्य+शनि**–धनुलग्न के दशम स्थान में सूर्य+शनि की युति वस्तुतः भाग्येश सूर्य की मारकेश, तृतीयेश शनि के साथ युति होगी। जातक के पास एक से अधिक मकान होंगे। सरकारी नौकरी या काम काज में विवाद रहेगा। जातक की उन्नति धीमी गति से होगी। जातक को ज्यादा फायदा व्यापार में रहेगा।

7. **सूर्य+राहु**–राहु दशम स्थान में राज्य सुख में बाधक है।

8. **सूर्य+केतु**–केतु दशम स्थान में सूर्य के साथ होने से जातक सरकारी केस में उलझेगा।

धनुलग्न में सूर्य की स्थिति एकादश स्थान में



धनुलग्न में सूर्य भाग्येश है। लग्नेश गुरु का मित्र होने से यह पूर्ण राजयोग कारक तथा शुभ फलदायक है। सूर्य यहां एकादश स्थान में तुला राशि में नीच का होगा। तुला राशि के दस अंशों तक सूर्य परम नीच का होता है। ऐसे जातक को पिता की सम्पत्ति मिलती है। जातक पिता से भी खूब आगे बढ़ता है। जातक खूब अच्छी विद्या प्राप्त करेगा। जातक व्यापार से भी खूब धन कमायेगा। जातक को भाग्योदय में सफलता थोड़े संघर्ष व परिश्रम के बाद मिलती है।

दृष्टि–एकादश भावगत सूर्य की दृष्टि पंचम स्थान (मेष राशि) पर होगी। जातक के पुत्र संतति एकाध होगी पर उससे चिंता रहेगी।

निशानी–जातक का बड़े भाई के साथ प्रेम रहेगा। मित्र अच्छे होंगे। एक हजार राजयोग नष्ट होंगे।

दशा–सूर्य की दशा-अंतर्दशा उत्तम फल देगी। भाग्योदय करायेगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चंद्रमा**–'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में चंद्र+सूर्य की युति एकादश स्थान में होने के कारण जातक का जन्म कार्तिक कृष्ण अमावस्या को सुबह 10 से 12 के मध्य होगी। यहां भाग्येश सूर्य नीच का होकर अष्टमेश से युति करेगा। फलतः जातक का राजयोग नष्ट होगा। जातक को कोर्ट-कचहरी से परेशानी होगी।

2. **सूर्य+मंगल**–यहां मंगल साथ होने पर जातक अनैतिक कार्यों से धन कमायेगा।

3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में सूर्य भाग्येश होगा। एकादश स्थान में तुला राशिगत यह युति वस्तुतः भाग्येश सूर्य की सप्तमेश+दशमेश बुध के साथ युति होगी। सूर्य यहां नीच राशिगत होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह पंचम भाव को देखेंगे। फलतः जातक बुद्धिमान एवं शिक्षित होगा। जातक की संतान भी शिक्षित होगी। जातक व्यापार के द्वारा धन कमायेगा। जातक समाज का लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

4. **सूर्य+गुरु**–सूर्य के साथ गुरु होने से जातक 'राजगुरु' के पद को प्राप्त करेगा तथा तंत्र-मंत्र व गूढ़ विद्याओं का ज्ञाता होगा।

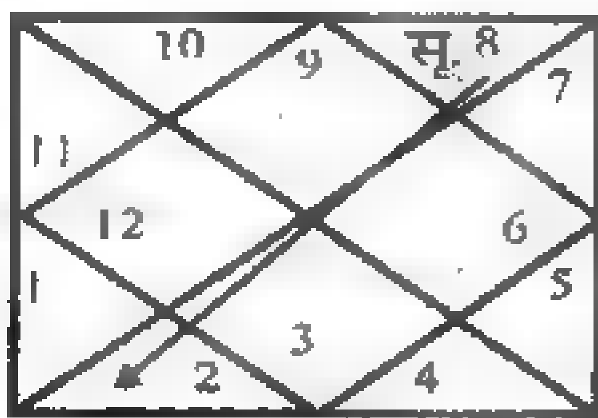
5. **सूर्य+शुक्र**–शुक्र की युति के कारण 'नीचभंग राजयोग' बनेगा। जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली होगा।

6. **सूर्य+शनि**–धनुलग्न के एकादश स्थान में सूर्य+शनि की युति 'नीचभंग राजयोग' बनायेगी। जातक राजा के समान पराक्रमी वैभवशाली होगा। स्त्री-संतान सुख उत्तम होगा, पर पिता से विचार नहीं मिलेंगे। पिता जब तक जीवित रहेगा, जातक स्वतंत्र धनार्जन नहीं कर पायेगा।

7. **सूर्य+राहु**–जातक की चलती फैक्टरी बंद होगी। सरकारी कष्ट आयेगा।

8. **सूर्य+केतु**–जातक की सरकारी नौकरी नहीं लग पायेगी।

धनुलग्न में सूर्य की स्थिति द्वादश स्थान में



धनुलग्न में सूर्य भाग्येश है। लग्नेश गुरु का मित्र होने से यह पूर्ण राजयोग कारक तथा शुभ फलदायक है। सूर्य यहां व्यय भाव में वृश्चिक (मित्र) राशि का होगा। सूर्य की यह स्थिति 'भाग्यभंग योग' बताती है। जातक को भाग्योदय हेतु काफी संघर्ष करना पड़ेगा। जातक फालतू कार्यों में धन व शक्ति का अपव्यय करेगा। रोग व शत्रु जातक को पीड़ा पहुंचाते रहेंगे। जातक का भाग्य ज्यादा निर्बल नहीं होगा।

दृष्टि–द्वादश भावगत सूर्य की दृष्टि छठे स्थान (वृष राशि) पर होगी। जिससे शत्रु पराजित होंगे। रोगों का शमन होगा।

निशानी–जातक के पिता की मृत्यु छोटी उम्र में हो जायेगी।

दशा–सूर्य की दशा-अंतर्दशा थोड़ी कष्टदादायक होगी।

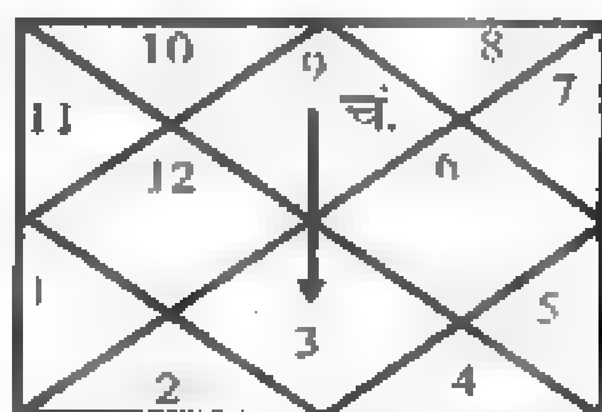
सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चंद्रमा**–'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में चंद्र+सूर्य युति द्वादश स्थान में होने के कारण जातक का जन्म मार्गशीर्ष अमावस्या की प्रात: 8 से 10 बजे के मध्य होगा। अष्टमेश चंद्रमा, भाग्येश सूर्य के साथ व्यय भाव में जाने से 'सरल नामक' विपरीत राजयोग बना। जातक धनी-मानी अभिमानी होगा। यात्रा में दुर्घटना या विष-भोजन का भय बना रहेगा।
2. **सूर्य+मंगल**–मंगल के कारण यहां 'विमल नामक विपरीत राजयोग' बनेगा।
3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में सूर्य भाग्येश होगा। द्वादश स्थान में वृश्चिक राशिगत यह युति वस्तुतः भाग्येश सूर्य की सप्तमेश+दशमेश बुध के साथ युति कहलायेगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह छठे भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलत: जातक बुद्धिशाली एवं भाग्यशाली होगा। सूर्य बारहवें होने से 'भाग्यभंग योग' तथा बुध बारहवें होने से 'विवाहभंग योग' एवं 'राजभंग योग' की सृष्टि होगी। फलत: ऐसे जातक को भाग्योदय हेतु बहुत संघर्ष करना पड़ेगा। जातक समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
4. **सूर्य+गुरु**–गुरु के कारण 'लग्नभंग योग' एवं 'सुखभंग योग' बनेगा। ऐसा जातक तंत्र-मंत्र का जानकार होता हुआ भी अपने आप को स्थापित नहीं कर पायेगा।
5. **सूर्य+शुक्र**–शुक्र के कारण यहां 'हर्ष नामक विपरीत राजयोग' बनेगा। जातक धनवान होगा। वाहन दुर्घटना का भय रहेगा।
6. **सूर्य+शनि**–धनुलग्न के बारहवें स्थान में सूर्य+शनि की युति वस्तुत: भाग्येश सूर्य की मारकेश तृतीयेश शनि के साथ युति होगी। इस युति के कारण 'भाग्यभंग योग', 'धनहीन योग' एवं 'पराक्रमभंग योग' बनेगा। ऐसे जातक को धन कमाने, प्रतिष्ठा की प्राप्ति हेतु एवं भाग्योदय हेतु बहुत संघर्ष करना पड़ेगा। जातक को यात्रा में नुकसान होगा। दुर्घटना भी हो सकती है।
7. **सूर्य+राहु**–जातक को यात्रा में नुकसान होगा। नेत्र पीड़ा संभव है।
8. **सूर्य+केतु**–जातक को पूर्वाभास होगा। जातक के सपने सच होंगे।

❑❑❑

धनुलग्न में चंद्रमा की स्थिति

धनुलग्न में चंद्रमा की स्थिति प्रथम स्थान में



धनुलग्न में अष्टमेश है। फलतः पापी है व अशुभ फल देने वाला है। चंद्रमा यहां प्रथम स्थान में धनु (सम) राशि में होगा। ऐसे जातक का शरीर स्वस्थ व सुन्दर होगा। जातक का मन:-मस्तिष्क अस्थिर स्वभाव का रहेगा। जातक थोड़ा अधैर्यशाली व क्रोधी होगा। ऐसे जातक बौद्धिक परिश्रम से, कल्पना के माध्यम से आगे बढ़ेंगे। जातक यदि व्यापारी होगा तो उसके व्यापार में उतार-चढ़ाव आता रहेगा।

दृष्टि–चंद्रमा की दृष्टि सप्तम स्थान पर होने से पत्नी सुन्दर, सभ्य व सुशील मिलेगी।

निशानी–ऐसे जातक न्यायप्रिय तो होते हैं पर किसी के सच्चे मित्र साबित नहीं हो सकते।

दशा–चंद्रमा की दशा अंतर्दशा नेष्ट फल देगी।

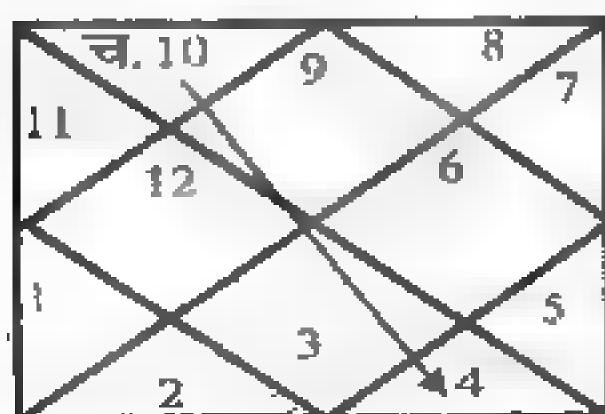
चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में चंद्र+सूर्य की युति लग्न स्थान में होने के कारण जातक का जन्म पौष कृष्ण अमावस्या को प्रातः सूर्योदय के समय (6 से 8 बजे के मध्य) होता है। भाग्येश व अष्टमेश की युति लग्न स्थान में है। जहां सूर्य मित्र राशि एवं चंद्रमा सम राशि में होगा। ऐसा जातक अस्थिर मनोवृत्ति वाला और उद्विग्न (विकल) अंगों वाला होगा।
2. **चंद्र+मंगल**–'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में मंगल पंचमेश एवं व्ययेश होने से शुभ है। चंद्रमा यहां अष्टमेश होने से पापी है। चंद्र+मंगल की यह युति

वस्तुतः अष्टमेश की पंचमेश+व्ययेश के साथ युति कहलायेगी। जो मिश्रित फलकारी हैं। यहां प्रथम स्थान में दोनों ग्रह धनु राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि चतुर्थ भाव (मीन राशि), सप्तम भाव (मिथुन राशि) एवं अष्टम भाव (कर्क राशि) पर होगी। इस 'लक्ष्मी योग' के कारण जातक धनी तथा दीर्घजीवी होगा। जातक को भौतिक सुख-सुविधाओं की प्राप्ति होगी पर जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा।

3. **चंद्र+बुध**–जातक का वैवाहिक जीवन मासिक तनाव देने वाला साबित होगा।
4. **चंद्र+गुरु**–आपका जन्म धनुलग्न में है। भोजसंहिता के अनुसार धनुलग्न के प्रथम स्थान में गुरु+चंद्र की युति धनु राशि में होगी। यह युति वस्तुतः अष्टमेश चंद्रमा की लग्नेश+सुखेश गुरु के साथ युति होगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह पंचम स्थान, सप्तम स्थान एवं भाग्य स्थान को पूर्ण दृष्टि से देख रहे हैं। गुरु यहां स्वगृही होने से बलवान है। यहां 'हंस योग', 'कुलदीपक योग', 'यामिनीनाथ योग' की सृष्टि हो रही है। फलतः जातक को उत्तम संतान सुख एवं विद्या क्षेत्र में उपलब्धि मिलेगी। विवाह के तत्काल बाद जातक का भाग्योदय होगा। जातक की गिनती समाज के विशिष्ट भाग्यशाली एवं प्रतिष्ठित लोगों में होगी। जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा।
5. **चंद्र+शुक्र**–जातक के अंग-भंग होने का योग बनता है।
6. **चंद्र+शनि**–जातक धनी होगा पर धन प्राप्ति हेतु उसे बहुत परिश्रम करना पड़ेगा।
7. **चंद्र+राहु**–शारीरिक दुर्घटना का भय रहेगा।
8. **चंद्र+केतु**–जातक के जीवन में शल्य चिकित्सा जरूर होगी।

धनुलग्न में चंद्रमा की स्थिति द्वितीय स्थान में



धनुलग्न में अष्टमेश है। फलतः पापी है व अशुभ फल देने वाला है। चंद्रमा यहां द्वितीय स्थान में मकर (सम) राशि का होगा। जातक वाक्पटु होगा एवं उसकी वाणी विनम्र होगी। जातक वकील, प्रोफेसर, अभिनेता, गायक के रूप में ज्यादा प्रसिद्धि प्राप्त करेगा। जातक को कुटुम्ब सुख कमजोर मिलेगा।

दृष्टि–द्वितीयस्थ चंद्रमा की दृष्टि अपने घर आठवें भाव (कर्क राशि) पर होगी। ऐसा जातक लम्बी उम्र का स्वामी होगा।

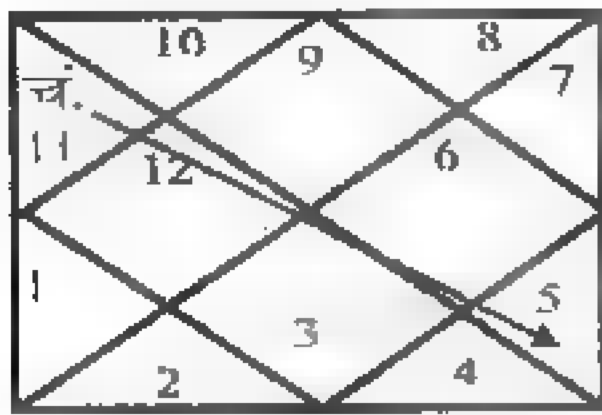
निशानी—मातृकारक चंद्रमा माता के घर से एकादश स्थान पर होने से माता द्वारा जातक को लाभ मिलेगा। माता जातक से अत्यधिक लगाव रखेगी।

दशा—चंद्रमा मारक स्थान में होने से अशुभ फल देगा। चंद्रमा में शनि या बुध का अंतर खराब जायेगा। जीवन के कटु अनुभव इस समय मिलेंगे।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **चंद्र+सूर्य**—'**भोजसंहिता**' के अनुसार धनुलग्न में चंद्र+सूर्य की युति दूसरे स्थान में होने के कारण जातक का जन्म माघ कृष्ण अमावस्या को प्रात: सूर्योदय से पूर्व (4 से 6 के मध्य) होता है। भाग्येश+अष्टमेश की युति मकर राशि में है। जहां सूर्य शत्रु क्षेत्री होगा। चंद्रमा सम राशि में होगा। जातक धनवान होगा तथा उसकी वाणी ओजस्वी होगी।
2. **चंद्र+मंगल**—यहां द्वितीय स्थान में दोनों ग्रह मकर राशि में होंगे। मंगल यहां उच्च का होगा। धन स्थान में योग कारक ग्रह के उच्च का होने से 'महालक्ष्मी योग' बना। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि पंचम भाव (मेष राशि) अष्टम भाव (कर्क राशि) एवं भाग्य भवन (सिंह राशि) पर होगी। फलत: जातक महाधनी तथा पुत्रवान होगा। लम्बी उम्र का स्वामी होगा। जातक भाग्यशाली होगा परन्तु आर्थिक भाग्योदय प्रथम संतति के बाद होगा।
3. **चंद्र+बुध**—गुप्त शत्रु बहुत होंगे जो परेशान करते रहेंगे।
4. **चंद्र+गुरु**—आपका जन्म धनुलग्न में है। 'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न के द्वितीय स्थान में गुरु+चंद्र की युति 'मकर राशि' में होगी। यहां वस्तुत: अष्टमेश चंद्रमा की लग्नेश+सुखेश गुरु के साथ युति होगी। जहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि छठे स्थान, आठवें स्थाने एवं दशम भाव पर होगी। गुरु नीच राशि पर भी होगा। फलत: जातक की लंबी आयु होगी। दुर्घटनाओं से बचाव होगा। शत्रुओं का नाश भी होगा तथा राजपक्ष में शुभ घटना भी घटित हो सकती है।
5. **चंद्र+शुक्र**—जातक की वाणी दूषित होगी। ऐसा जातक जो बोलना चाहता है नहीं बोल पायेगा।
6. **चंद्र+शनि**—शनि स्वगृही होने से जातक धनी होगा पर बीमारी में पैसा खर्च होता चला जायेगा।
7. **चंद्र+राहु**—यह युति धन के घड़े में भारी छेद के समान है, धन की बरकत नहीं होगी।
8. **चंद्र+केतु**—धन एकत्रित करने के सभी प्रयास विफल होंगे।

धनुलग्न में चंद्रमा की स्थिति तृतीय स्थान में



धनुलग्न में अष्टमेश है। फलतः पापी है व अशुभ फल देने वाला है। चंद्रमा यहां तृतीय स्थान में कुंभ (सम) राशि में होगा। ऐसा जातक पराक्रमी होगा। उसे भाई-बहनों का सुख होगा। जातक संगीत, शिल्प, कला-साहित्य और आध्यात्म विद्या में रुचि रखता हुआ, यश प्राप्त करेगा। जातक राजा (सरकार) द्वारा सम्मानित होगा।

दृष्टि—तृतीयस्थ चंद्रमा की दृष्टि नवम भाव (सिंह राशि) पर होगी। ऐसा जातक धार्मिक परोपकारी एवं दानी होगा।

निशानी—चंद्रमा मातृभाव में बारहवें होने पर जातक की माता या नानी बीमार रहेगी या जातक माता से दूर रहेगा।

दशा—चंद्रमा यदि शुभ ग्रहों से दृष्ट या युत हो, तो शुभ फल, अशुभ ग्रह से युत या दृष्ट हो तो अशुभ फल मिलेगा।

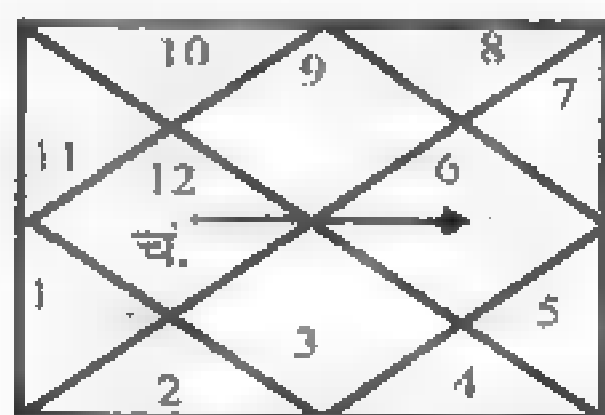
चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **चंद्र+सूर्य**—'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में चंद्र+सूर्य युति तीसरे स्थान में होने के कारण जातक का जन्म फाल्गुण कृष्ण अमावस्या को रात्रि 2 से 4 के मध्य होता है। भाग्येश+अष्टमेश की युति कुंभ राशि में होने से जातक महान पराक्रमी होगा तथा समाज के द्वारा अथवा राजा (शासन) के द्वारा सम्मानित होगा।
2. **चंद्र+मंगल**—यहां तृतीय स्थान में दोनों ग्रह कुंभ राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह छठे स्थान (वृष राशि), भाग्य स्थान (सिंह राशि) एवं दशम भाव (कन्या राशि) को देखेंगे। इस 'लक्ष्मी योग' के कारण जातक धनवान होगा। जातक अपने शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा। जातक भाग्यशाली होगा तथा सरकारी कार्यों, कोर्ट-कचहरी में विजय प्राप्त करेगा।
3. **चंद्र+बुध**—जातक की बहनें अधिक होंगी। बहनें मददगार होंगी। भाइयों का भी योग है।
4. **चंद्र+गुरु**—आपका जन्म धनुलग्न में है। 'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में गुरु+चंद्र की युति तृतीय स्थान गत कुंभ राशि में होगी। वस्तुतः यह युति अष्टमेश चंद्रमा की लग्नेश+सुखेश गुरु के साथ युति है। यहां बैठकर दोनों

शुभ ग्रह सप्तम भाव, भाग्य स्थान एवं लाभ स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलत: जातक को विवाह सुख, भाग्य सुख एवं व्यापार-सुख मिलेगा। जातक को ये तीनों सुख पूर्ण गुणवत्ता के साथ मिलेंगे। जातक सुखी व्यक्ति होगा।

5. **चंद्र+शुक्र**–भाई-बहनों में मुकदमेबाजी हो सकती है, अथवा किसी का अंग-भंग हो सकता है। जातक का स्वयं का दायां हाथ दोषपूर्ण होगा।
6. **चंद्र+शनि**–जातक पराक्रमी होगा। भाई-बहन, मित्रों का सहयोग जातक के आगे बढ़ने में सहायक होगा।
7. **चंद्र+राहु**–भाइयों में मुकदमे बाजी, कलह होगी।
8. **चंद्र+केतु**–भाई-बहनों में वैमनस्यता रहेगी।

धनुलग्न में चंद्रमा की स्थिति चतुर्थ स्थान में



धनुलग्न में अष्टमेश है। फलत: पापी है व अशुभ फल देने वाला है। चंद्रमा यहां चतुर्थ स्थान में मीन (मित्र) राशि में होगा। चंद्रमा जल तत्त्व में होने से यहां प्रसन्न है। जातक को मकान, वाहन, भवन, पद-प्रतिष्ठा का उत्तम सुख मिलेगा। जातक क्षमाशील व दयालु होगा। जातक को माता की सम्पत्ति, सहानुभूति एवं प्रेम मिलेगा। जातक को कृषि एवं जल संबंधी वस्तुओं से लाभ होगा।

दृष्टि–चतुर्थस्थ चंद्रमा की दृष्टि दशम भाव (कन्या राशि) पर होने से जातक को रोजी-रोजगार संबंधी परेशानी नहीं रहेगी।

निशानी–जातक अपने जन्म स्थान से दूर नौकरी-व्यवसाय में सफलता प्राप्त करेगा।

दशा–चंद्रमा की दशा अंतर्दशा शुभ फल देगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–'भोज संहिता' के अनुसार धनुलग्न में चंद्र+सूर्य युति चौथे स्थान में होने के कारण जातक का जन्म चैत्र कृष्ण अमावस्या की मध्य रात्रि को 12 से 2 बजे के मध्य होता है। भाग्येश सूर्य व अष्टमेश चंद्र की युति यहां केन्द्र में है। ऐसे जातक के चेहरे पर सदा हंसी व प्रसन्नता रहती है। जातक के पास उत्तम वाहन होगा।

2. **चंद्र+मंगल**–यहां चतुर्थ स्थान में दोनों ग्रह मीन राशि में होंगे। चंद्रमा के कारण 'यामिनीनाथ योग' बना एवं मंगल यहां दिक्बली को प्राप्त है। ये दोनों ग्रह सप्तम भाव (मिथुन राशि), दशम भाव (कन्या राशि), एकादश भाव (तुला राशि) को देखेंगे। फलतः 'लक्ष्मी योग' बना जातक धनवान होगा। जातक व्यापार से लाभ कमायेगा। राजनीति से भी लाभ प्राप्त करेगा। जातक का आर्थिक विकास विवाह के बाद होगा।

3. **चंद्र+बुध**–जातक की माता से कम बनेगी अथवा जातक की दो माताएं होंगी।

4. **चंद्र+गुरु**–आपका जन्म धनुलग्न में है। 'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में गुरु+चंद की युति चतुर्थ भावगत मीन राशि में होगी। यहां यह युति वस्तुतः अष्टमेश चंद्रमा की लग्नेश+सुखेश के साथ युति होगी। गुरु यहां स्वगृही होंगे। केन्द्र में बैठकर दोनों शुभ ग्रह 'हंस योग', 'यामिनीनाथ योग' एवं 'कुलदीपक योग' की सृष्टि करेंगे। इनकी दृष्टि अष्टम स्थान, दशम स्थान एवं व्यय स्थान पर होगी। फलतः जातक की आयु दीर्घ होगी। वह रोग एवं दुर्घटनाओं का मुकाबला करने में सक्षम होगा। जातक राज्य (सरकार) में उत्तम पद को प्राप्त करेगा। यात्राओं एवं शुभ कार्यों (परोपकार के कार्यों) में रुपया खर्च करेगा।

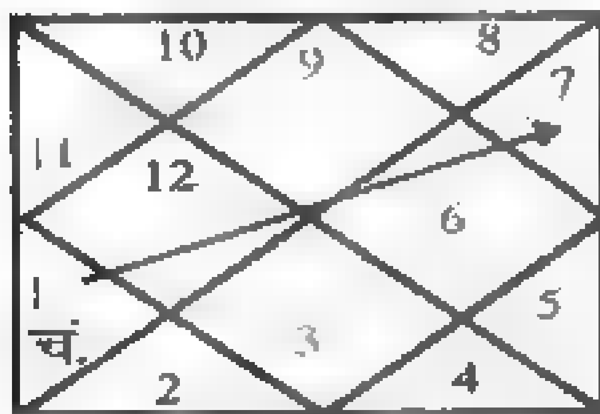
5. **चंद्र+शुक्र**–जातक के पास अनेक वाहन एवं खूबसूरत बंगला होगा। 'मालव्य योग' के कारण जातक का वैभव भी राजा से कम नहीं होगा।

6. **चंद्र+शनि**–जातक धनी होगा। जातक की माता के पास निजी सम्पत्ति होगी।

7. **चंद्र+राहु**–जातक की माता की मृत्यु छोटी उम्र में संभव है।

8. **चंद्र+केतु**–जातक का वाहन चोरी हो जायेगा। वाहन दुर्घटना का योग है।

धनुलग्न में चंद्रमा की स्थिति पंचम स्थान में



धनुलग्न में अष्टमेश है। फलतः पापी है व अशुभ फल देने वाला है। चंद्रमा यहां पंचम स्थान में मेष (सम) राशि में होगा। ऐसा जातक उत्तम विद्या प्राप्त करेगा। जातक को उच्च शैक्षणिक उपाधि मिलेगी। जातक को माता का सुख मिलेगा। जातक के मित्र अच्छे होंगे। जातक स्वाभिमानी, कुछ हठी एवं महत्त्वाकांक्षी होगा। चंद्रमा यदि निर्बल हो तो संतान सुख में बाधा पहुंचायेगा।

दृष्टि–पंचमस्थ चंद्रमा की दृष्टि एकादश भाव (तुला राशि) पर होगी। फलतः जातक को शेयर, सट्टा बाजार व उद्योग से लाभ होगा।

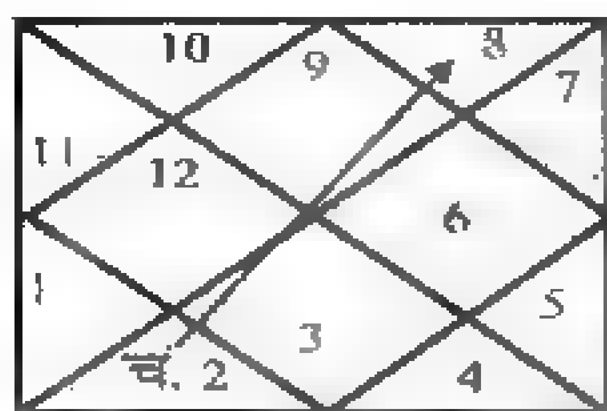
निशानी–जातक को कन्या संतति की बाहुल्यता रहेगी। जातक की पहली संतति शल्य चिकित्सा से होगी।

दशा–चंद्रमा की दशा अंतर्दशा शुभ फल देगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में चंद्र+सूर्य युति पांचवें स्थान में होने के कारण जातक का जन्म वैशाख कृष्ण अमावस्या को रात्रि 10 से 12 के मध्य होता है। अष्टमेश चंद्र व भाग्येश सूर्य पंचम भाव में होने पर सूर्य उच्च का होगा। ऐसा जातक परम महत्त्वाकांक्षी होगा। जातक उच्च शिक्षित व राज्याधिकारी होगा। जातक की संतति भी शिक्षित व तेजस्वी होगी।
2. **चंद्र+मंगल**–यहां पंचम स्थान में दोनों ग्रह मेष राशि में होंगे। मंगल यहां स्वगृही होने से 'महालक्ष्मी योग' बना। यहां बैठकर दोनों ग्रह अष्टम भाव (कर्क राशि) लाभ स्थान (तुला राशि) एवं व्यय भाव (वृश्चिक राशि) को देखेंगे। फलतः ऐसा जातक महाधनी होगा। लक्ष्मी उम्र का स्वामी होगा। जातक व्यापार-व्यवसाय में धन अर्जित करेगा। परन्तु जातक व्ययशील खर्चीले स्वभाव का होगा। जातक को पुत्र जरूर होगा। पुत्र जन्म के बाद जातक का आर्थिक विकास होगा।
3. **चंद्र+बुध**–कन्या संतति की बाहुल्यता होगी। परिवार नियोजन के हिसाब से दो कन्या एक पुत्र का योग बनता है।
4. **चंद्र+गुरु**–आपका जन्म धनुलग्न में है। 'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में गुरु+चंद्र की युति पंचम भावस्थ 'मेष राशि' में होगी। यह युति वस्तुतः अष्टमेश चंद्रमा की लग्नेश+सुखेश गुरु के साथ युति है। यहां बैठकर ये दोनों शुभ ग्रह, भाग्य स्थान, लाभ स्थान एवं लग्न स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक की उन्नति, उसका भाग्योदय 24 वर्ष की आयु में हो जायेगा। जातक धनवान एवं विद्वान् होगा। व्यापार-व्यवसाय में उसे लाभ बराबर मिलता रहेगा। जातक समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
5. **चंद्र+शुक्र**–संतति नाश का पक्का योग है। शल्य चिकित्सा से संतान होगी।
6. **चंद्र+शनि**–जातक विद्यावान होगा। विदेशी भाषा, विदेशी विद्या पढ़ेगा।
7. **चंद्र+राहु**–गर्भपात, गर्भस्राव एवं जवान संतति की मृत्यु का योग है।
8. **चंद्र+केतु**–जातक की एक संतान गुम हो जायेगी अथवा संतान संबंधी चिंता बनी रहेगी।

धनुलग्न में चंद्रमा की स्थिति षष्टम स्थान में



धनुलग्न में अष्टमेश है। फलतः पापी है व अशुभ फल देने वाला है। चंद्रमा यहां छठे स्थान में वृष राशि में उच्च का होगा। वृष राशि के तीन अंशों तक चंद्रमा परमोच्च का होगा। अष्टमेश छठे होने से सरल नामक विपरीत राजयोग बना। जातक धनी, मानी व अभिमानी होगा। माता व ननिहाल का सुख श्रेष्ठ होगा। रोग व शत्रु कभी भी हावी नहीं होंगे।

दृष्टि–चंद्रमा की दृष्टि व्यय भाव (वृश्चिक राशि) पर होने से जातक खर्चीले स्वभाव का होगा। जातक यात्रा का शौकीन होगा।

निशानी–जातक परदेश जायेगा तो बड़ा भारी धन कमायेगा।

दशा–चंद्रमा की दशा अंतर्दशा शुभ फल देगी।

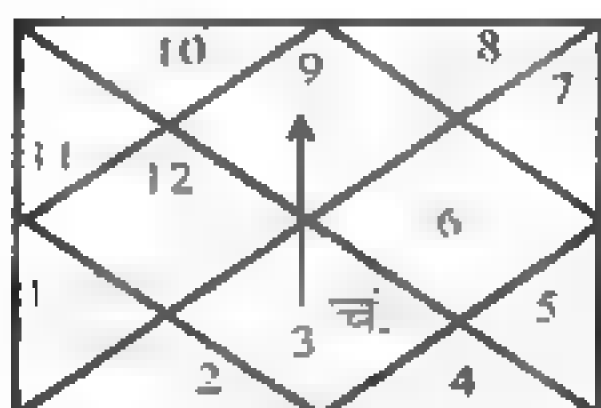
चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में चंद्र+सूर्य की युति सातवें स्थान में होने के कारण जातक का जन्म ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या को रात्रि 8 से 10 बजे के मध्य होता है। अष्टमेश चंद्रमा उच्च का, सूर्य के साथ होने से सरल नामक 'विपरीत राजयोग' बना। जातक धनी-मानी अभिमानी होगा। दुर्घटना का भय या शत्रु द्वारा नुकसान पहुंचने का योग है।
2. **चंद्र+मंगल**–यहां छठे स्थान में दोनों ग्रह वृष राशि में होंगे। चंद्रमा यहां उच्च का होगा। मंगल के कारण संततिहीन योग बनता है। व्ययेश मंगल छठे होने से 'सरलनामक विपरीत राजयोग' बनेगा। अष्टमेश चंद्रमा होने से 'विमलनामक विपरीत राजयोग' बनेगा। इससे जातक धनी एवं लम्बी उम्र का स्वामी होगा। दोनों ग्रहों की दृष्टि भाग्य भवन (सिंह राशि) एवं लग्न स्थान (धनु राशि) पर होने के कारण जातक भाग्यशाली होगा तथ उसे प्रत्येक कार्य में सफलता मिलेगी।
3. **चंद्र+बुध**–जातक धनी होगा पर पत्नी से नहीं बनेगी। 'द्विभार्या योग' बनता है।
4. **चंद्र+गुरु**–आपका जन्म धनुलग्न में है। 'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में गुरु+चंद्र की युति षष्टम भावगत वृष राशि में है। वस्तुतः यह युति अष्टमेश चंद्रमा की लग्नेश+सुखेश गुरु के साथ युति है। चंद्रमा यहां उच्च का होगा अष्टमेश का षष्टम में जाना अच्छा माना गया है। परन्तु गुरु के कारण

'लग्नभंग योग' तथा 'सुखभंग योग' की सृष्टि हुई। फलत: जातक को ऋण-रोग व शत्रु का भय नहीं रहेगा। सुख प्राप्ति के संसाधनों में कमी महसूस करेंगे तथा कई बार ऐसा भी लगेगा कि प्रयत्न (प्रयासों) का पूरा लाभ नहीं मिल रहा है। पर इस शुभ योग के कारण अन्तिम सफलता निश्चित है।

5. **चंद्र+शुक्र**–'किम्बहुनायोग' के कारण जातक राजा के सामन पराक्रमी होगा।
6. **चंद्र+शनि**–चंद्रमा के साथ शनि जातक को दमा, टी.बी., श्वास की बीमारी देगा।
7. **चंद्र+राहु**–चंद्रमा के साथ राहु होने पर मूत्राशय के रोग होंगे। जातक की अल्पायु में मृत्यु हो सकती है।
8. **चंद्र+केतु**–चंद्रमा के साथ केतु जातक को क्षय रोग, चमड़ी का रोग देगा।

धनुलग्न में चंद्रमा की स्थिति सप्तम स्थान में



धनुलग्न में अष्टमेश है। फलत: पापी है व अशुभ फल देने वाला है। चंद्रमा यहां सप्तम भाव में मिथुन (शत्रु) राशि में होगा। जातक की पत्नी सुन्दर, रूप की रानी होगी पर उसे अभिमान रहेगा जिससे गृहस्थ सुख में खटपट रहेगी। जातक को परस्त्रियों के प्रति आकर्षण रहेगा। ऐसे जातक को धन, वाहन, माता-पिता, स्त्री-संतान का सुख रहेगा।

दृष्टि–सप्तमस्थ चंद्रमा की दृष्टि लग्न भाव (धनु राशि) पर होगी। फलत: थोड़े से अवरोध के बाद कार्य में सफलता अवश्य मिलेगी।

निशानी–जातक कामी होगा एवं भौतिक सुखों के पीछे दौड़ेगा।

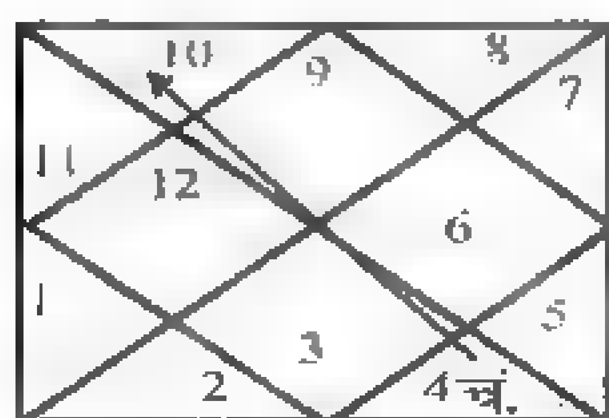
दशा–चंद्रमा की दशा मिश्रित फल देगी। बुध व शनि के अंतर में कष्टानुभूति होगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में चंद्र+सूर्य की युति सातवें स्थान में होने के कारण जातक का जन्म आषाढ़ कृष्ण अमावस्या को सूर्यास्त के समय सांय 6 बजे के लगभग होता है। अष्टमेश चंद्रमा व भाग्येश सूर्य यहां केंद्र में हैं। जातक की पत्नी से कम निभेगी। वाहन दुर्घटना से अंग-भंग होने का भय रहेगा।

2. **चंद्र+मंगल**--यहां सप्तम स्थान में दोनों ग्रह मिथुन राशि में होंगे। चंद्रमा यहां शत्रुक्षेत्री है। यहां बैठकर दोनों ग्रह दशम भाव (कन्या राशि), लग्न भाव (धनु राशि) एवं धन भाव (मकर राशि) को देखेंगे। फलत: जातक धनवान होगा। उसे जीवन के प्रत्येक कार्य में सफलता मिलेगी। जातक राजनीति के क्षेत्र में भी प्रभावशाली एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
3. **चंद्र+बुध**--जातक का सुसराल धनी होगा पर सुसराल वालों से कम बनेगी।
4. **चंद्र+गुरु**--आपका जन्म धनुलग्न में है। 'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में गुरु+चंद्र की युति सातवें भाव में मिथुन राशि के अंतर्गत होगी। वस्तुत: यह युति अष्टमेश चंद्रमा की लग्नेश+सुखेश गुरु के साथ युति है। यह युति केन्द्रवर्ती है चंद्रमा यहां शत्रुक्षेत्री है। इन दोनों ग्रहों की दृष्टि लाभ स्थान, लग्न स्थान एवं पराक्रम स्थान पर है साथ ही 'कुलदीपक योग' एवं 'यामिनीनाथ योग' की सृष्टि भी हो रही है। फलत: जातक के व्यक्तित्व में निखार आयेगा, वह समाज का अग्रगण्य, प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा। जातक व्यापार-व्यवसाय के द्वारा धन की प्राप्ति करेगा एवं उसका जनसम्पर्क सघन होने से पराक्रम तेज रहेगा।
5. **चंद्र+शुक्र**--पति-पत्नी में खटपट का पक्का योग है। पत्नी सुन्दर होते हुए भी विचारों के मतभेद उग्रता से उभरेंगे।
6. **चंद्र+शनि**--जातक को पत्नी से धन मिलेगा पर असंतोष की स्थिति रहेगी।
7. **चंद्र+राहु**--पेट का आपरेशन संभव है। आंतों की बीमारी होगी।
8. **चंद्र+केतु**--शल्य चिकित्सा से परेशानी आयेगी।

धनुलग्न में चंद्रमा की स्थिति अष्टम स्थान में



धनुलग्न में अष्टमेश है। फलत: पापी है व अशुभ फल देने वाला है। चंद्रमा यहां अष्टम स्थान में स्वगृही कर्क राशि का होगा। फलत: सरल नामक विपरीत राजयोग बनेगा। जातक महाधनी होगा तथा गुप्त व रमणीय स्थानों का भ्रमण करेगा। जातक को माता का सुख अल्प होगा। जातक को घर-परिवार, धन, सम्पत्ति, सोना-चांदी कीमती वस्तुओं का सुख देगा।

दृष्टि--अष्टमस्थ चंद्रमा की दृष्टि धन भाव (मकर राशि) पर होगी। जातक की आयु दीर्घ होगी। जातक की भाषा विनम्र होगी।

निशानी—जातक को जलघात संभव है। कफ प्रवृत्ति एवं जलीय रोग की संभावना रहेगी।

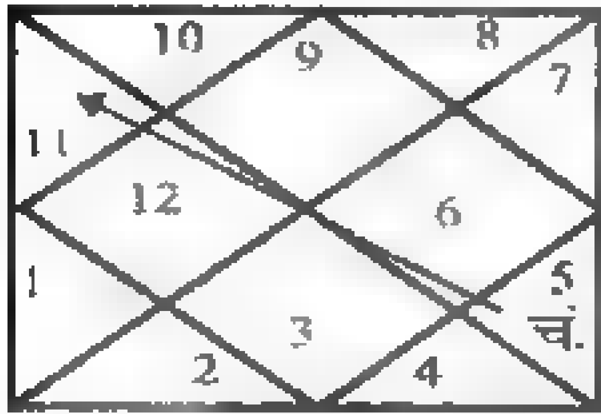
दशा—चंद्रमा जातक को धनी बनायेगा पर शरीर में बीमारी भी देगा।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **चंद्र+सूर्य**—'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में चंद्र+सूर्य की युति आठवें स्थान में होने के कारण जातक का जन्म श्रावण कृष्ण अमावस्या को सायंकाल 4 से 6 बजे के मध्य होता है। अष्टमेश चंद्रमा अष्टम भाव में स्वगृही होने से 'सरल नामक' विपरीत राजयोग बना। जातक धनी-मानी, अभिमानी होगा पर शत्रु द्वारा चोट या वाहन दुर्घटना से भय होने का योग बनता है।
2. **चंद्र+मंगल**—यहां अष्टम स्थान में दोनों ग्रह कर्क राशि में होंगे। चंद्रमा यहां स्वगृही एवं मंगल नीच का होने से 'नीचभंग राजयोग' बनेगा। यहां 'महालक्ष्मी योग' बना। अष्टमेश चंद्रमा अष्टम स्थान में स्वगृही होने से 'विमलनामक विपरीत राजयोग' बना। व्ययेश मंगल अष्टम में होने से 'सरल नामक' विपरीत राजयोग बना। यहां बैठकर दोनों ग्रह लाभ स्थान (तुला राशि), धन भाव (मकर राशि) एवं पराक्रम भाव (कुंभ राशि) को देखेंगे। फलत: जातक महाधनी होगा। जातक उद्योगपति होगा तथा राजा के समान पराक्रमी होगा।
3. **चंद्र+बुध**—'द्विभार्या योग' बनते हैं। एक पत्नी की मृत्यु संभव है।
4. **चंद्र+गुरु**—आपका जन्म धनुलग्न में है। 'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में गुरु+चंद्र की युति आठवें भाव में कर्क राशि में अंतर्गत होगी। वस्तुत: यह युति अष्टमेश चंद्रमा की लग्नेश+सुखेश गुरु के साथ युति है। गुरु अष्टम में जाने से 'लग्नभंग योग' एवं 'सुखभंग योग' की सृष्टि होगी। चंद्रमा वस्तुत: अष्टमेश होकर अष्टम भाव में स्वगृही है अत: जातक की आयु में वृद्धिकर्त्ता ही है। अष्टम स्थान में बैठकर दोनों ग्रह व्यय भाव, धन भाव एवं सुख भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलत: जातक को प्रयत्न करने पर यथेष्ट धन की प्राप्ति तो होगी पर वह धन खर्च होता चला जायेगा। जातक का जीवन में सभी प्रकार के भौतिक सुख, संसाधन एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति होगी।
5. **चंद्र+शुक्र**—लाभेश के आठवें जाने से दरिद्र योग बनता है। बीमारी में रुपया खर्च होगा।
6. **चंद्र+शनि**—धनहीन योग बनता है। जातक का एक बार पराक्रम भंग होगा। बदनामी होगी।
7. **चंद्र+राहु**—चंद्रमा के साथ राहु आयु के आठवें या बीसवें वर्ष में जलघात देगा।

8. **चंद्र+केतु**–चंद्रमा के साथ केतु गुर्दे या मूत्राशय के ऑपरेशन में जातक का अपघात करायेगा।

धनुलग्न में चंद्रमा की स्थिति नवम स्थान में



धनुलग्न में अष्टमेश है। फलतः पापी है व अशुभ फल देने वाला है। चंद्रमा यहां नवम स्थान में सिंह राशि (मित्र राशि) में होगा। जातक के धर्म, भाग्य व आयु में वृद्धि होगी। जातक को स्त्री-संतान, माता-पिता, नौकरी, व्यवसाय के सभी सुख मिलेंगे। जातक को विदेश व्यापार (Export-Import) से लाभ होगा। जातक को पिता का सुख मिलेगा। जातक भाग्यशाली होगा पर उसके भाग्य में उतार-चढ़ाव आता रहेगा।

दृष्टि–नवमस्थ चंद्रमा की दृष्टि तृतीय स्थान (कुंभ राशि) पर होगी। फलतः जातक पराक्रमी होगा।

निशानी–चंद्रमा मातृ स्थान से छठे होने से जातक को माता का सुख नहीं मिलेगा।

दशा–चंद्रमा की दशा ज्यादा अच्छी नहीं जायेगी।

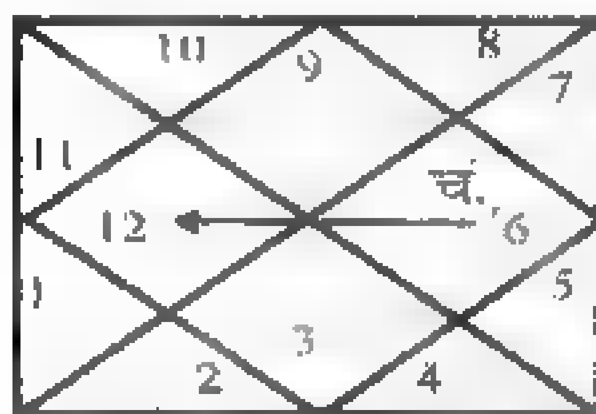
चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में चंद्र+सूर्य की युति नवम स्थान में होने के कारण जातक का जन्म भाद्रकृष्ण अमावस्या को दोपहर 2 से 4 बजे के मध्य होता है। यहां भाग्येश सूर्य स्वगृही होकर अष्टमेश चंद्रमा के साथ भाग्य में वृद्धि करायेगा। जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक धर्मात्मा व परोपकारी होगा।
2. **चंद्र+मंगल**–यहां नवम स्थान में दोनों ग्रह सिंह राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह व्यय भाव (वृश्चिक राशि) पराक्रम स्थान (कुंभ राशि) एवं चतुर्थ भाव (मीन राशि) को देखेंगे। 'लक्ष्मी योग' के कारण जातक धनी होगा। जातक थोड़े खर्चीले स्वभाव का होगा। सभी भौतिक संसाधनों की प्राप्ति उसे सहज में हो जायेगी। ऐसा जातक महान पराक्रमी एवं धनी होगा।
3. **चंद्र+बुध**–विवाह के बाद जातक का भाग्योदय होगा। जातक का जीवनसाथी मददगार रहेगा।
4. **चंद्र+गुरु**–आपका जन्म धनुलग्न में है। 'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में गुरु+चंद्र की युति नवम भाव में 'सिंह राशि' के अंतर्गत हो रही है। वस्तुतः

यह युति अष्टमेश चंद्रमा की लग्नेश+सुखेश के साथ युति है। यहां बैठकर दोनों ग्रह लग्न भाव, पराक्रम स्थान एवं पंचम स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलत जातक के व्यक्तित्व में निखर आयेगा। उसका चहुंमुखी विकास होगा। प्रथम संतति के बाद जातक का भाग्य तेजी से चमकेगा। जातक स्वयं शिक्षित होगा एवं उसकी संतति भी शिक्षित होगी। जातक महान् पराक्रमी एवं यशस्वी होगा।

5. **चंद्र+शुक्र**–जातक के भाग्य में उतार-चढ़ाव आते रहेंगे। जातक की स्त्री-मित्र घातक साबित होगी।
6. **चंद्र+शनि**–जातक के जातक धनी, पराक्रमी एवं बहुत मित्रों वाला होगा।
7. **चंद्र+राहु**–जातक के भाग्य में अकारण बाधाएं-रुकावटें आयेंगी।
8. **चंद्र+केतु**–जातक के भाग्योदय में दिक्कतें आयेंगी।

धनुलग्न में चंद्रमा की स्थिति दशम स्थान में



धनुलग्न में अष्टमेश है। फलत: पापी है व अशुभ फल देने वाला है। चंद्रमा यहां दशम भाव में कन्या (शत्रु) राशि में होगा। जातक को माता, वाहन एवं भवन का उत्तम सुख प्राप्त होगा। ऐसे जातक को रोजी-रोजगार की प्राप्ति हेतु विशेष मेहनत करनी पड़ेगी। जातक को सहोदर भ्राता, पिता, नौकरी-व्यापार से लाभ होता रहेगा। जातक की शिक्षा उत्तम होगी।

दृष्टि–दशमस्थ चंद्रमा की दृष्टि चतुर्थ भाव (मीन राशि) पर होगी। जातक को प्राय: कन्या संतति अधिक होंगी।

निशानी–जातक केमीकल, रत्न या धातु का व्यापार, जलीय वस्तुओं में कमायेगा।

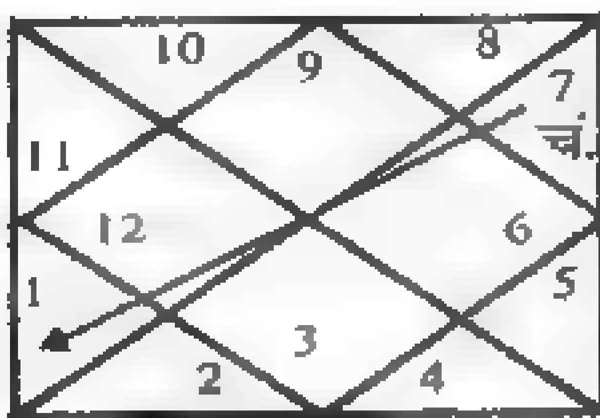
दशा–चंद्रमा की दशा अन्तर्दशा मिश्रित फल देगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में चंद्र+सूर्य की युति दशम स्थान में होने के कारण जातक का जन्म आश्विन कृष्ण अमावस्या को दोपहर 12 बजे के आस-पास होता है। अष्टमेश चंद्र एवं भाग्येश सूर्य केन्द्र में होने से जातक के पास एक से अधिक वाहन होंगे। जातक को वाहन दुर्घटना से अंग-भंग होने का भय बना रहेगा।

2. **चंद्र+मंगल**–यहां दशम स्थान में दोनों ग्रह कन्या राशि में होंगे। चंद्रमा यहां शत्रुक्षेत्री होगा। मंगल यहां दिक्बली होकर 'कुलदीपक योग' बनायेगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह लग्नभाव (धनु राशि), चतुर्थ भाव (मीन राशि) एवं पंचम भाव (मेष राशि) को देखेंगे। फलतः जातक धनवान होगा। जातक को जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता मिलेगी। ऐसे जातक को भौतिक ऐश्वर्य की प्राप्ति होगी। जातक की आर्थिक उन्नति प्रथम संतति के बाद होगी।
3. **चंद्र+बुध**–'भद्र योग' के कारण जातक राजातुल्य पराक्रमी होगा। जातक का ससुराल प्रभावशाली होगा।
4. **चंद्र+गुरु**–आपका जन्म धनुलग्न में है। 'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न के दशम भाव में गुरु+चंद्र की युति कन्या राशि में होगी। वस्तुतः यह युति अष्टमेश चंद्रमा की लग्नेश+सुखेश गुरु के साथ युति है। चंद्रमा यहां शत्रुक्षेत्री है। परन्तु केन्द्रवर्ती होने से 'यामिनीनाथ योग' बना। गुरु केन्द्रवर्ती होने से 'कुलदीपक योग' बना। इन दोनों ग्रहों की दृष्टियां धन स्थान, सुख स्थान एवं षष्टम स्थान पर हैं। फलतः ऐसा जातक खूब धन कमायेगा व भौतिक ऐश्वर्य प्राप्त करेगा। जातक रोग और शत्रुओं का नाश करने में पूर्ण सक्षम होगा। जातक का नाम समाज के सौभाग्यशाली एवं सफल व्यक्तियों में से एक होगा।
5. **चंद्र+शुक्र**–राज्य (सरकार) से दण्डित होने का योग अथवा किसी सेक्स स्केन्डल में फंसने का योग है।
6. **चंद्र+शनि**–जातक धनवान, पराक्रमी एवं व्यापार प्रिय होगा।
7. **चंद्र+राहु**–सरकारी क्षेत्र में यकायक आफत आयेगी।
8. **चंद्र+केतु**–राजनीति में नुकसान का योग पक्का है।

धनुलग्न में चंद्रमा की स्थिति एकावश स्थान में



धनुलग्न में अष्टमेश है। फलतः पापी है व अशुभ फल देने वाला है। चंद्रमा यहां एकादश स्थान में तुला (सम राशि) में होगा। जातक सौम्य, शिष्ट व उदार स्वभाव का होगा। जातक की बहनें अधिक होंगी। पुत्रियां भी अधिक होंगी। जातक को धन-यश, प्रतिष्ठा, स्त्री-संतान का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। जातक को विदेश यात्रा या विदेशी कारोबार में लाभ होगा।

दृष्टि–एकादश भावस्थ चंद्रमा की दृष्टि पंचम स्थान (मेष राशि) पर होगी।

निशानी–चंद्रमा मातृ स्थान से आठवें होने से माता की मृत्यु छोटी उम्र में होगी या जातक माता से दूर रहेगा।

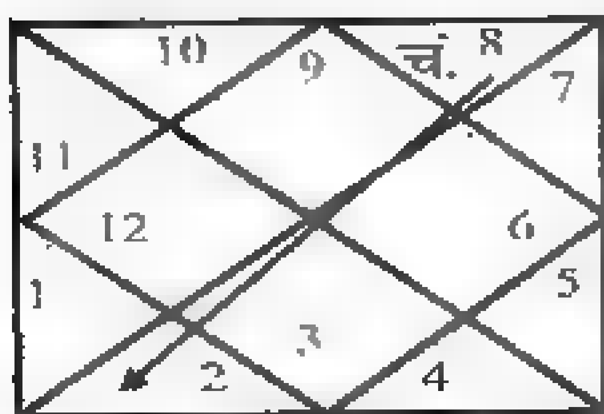
दशा–चंद्रमा की दशा अंतर्दशा ज्यादा शुभ फल नहीं देगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में चंद्र+सूर्य की युति एकादश स्थान में होने के कारण जातक का जन्म कार्तिक कृष्ण अमावस्या की सुबह 10 से 12 बजे के मध्य होगा। यहां भाग्येश सूर्य नीच का होकर अष्टमेश से युति करेगा। फलत: जातक का राजयोग नष्ट होगा। जातक को कोर्ट-कचहरी से परेशानी होगी।
2. **चंद्र+मंगल**–यहां एकादश स्थान में दोनों ग्रह तुला राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि धन भाव (मकर राशि), पंचम भाव (मेष राशि) एवं षष्टम् भाव (वृष राशि) पर होगी। ऐसा जातक धनवान होगा। ऐसा जातक ऋण-रोग व शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा। जातक की आर्थिक उन्नति प्रथम संतति के बाद होगी।
3. **चंद्र+बुध**–इस युति से पत्नी व संतान पक्ष से कष्ट संभव है।
4. **चंद्र+गुरु**–आपका जन्म धनुलग्न में है। 'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में एकादश भाव में गुरु+चंद्र की युति तुला राशि में होगी। यह युति अष्टमेश चंद्रमा की लग्नेश+सुखेश गुरु के साथ युति है। यहां बैठकर दोनों ग्रह पराक्रम स्थान, पंचम भाव एवं सप्तम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलत: जातक का विवाह के तत्काल बाद भाग्योदय होगा। दूसरा भाग्योदय प्रथम संतति के बाद होगा। जातक का जनसम्पर्क सघन होगा। जातक महान पराक्रमी एवं यशस्वी होगा।
5. **चंद्र+शुक्र**–जातक को व्यापार में निश्चित घाटा होगा।
6. **चंद्र+शनि**–जातक उद्योगपति होगा पर उद्योग में घाटा लगेगा।
7. **चंद्र+राहु**–जातक का चलता व्यापार बंद होगा।
8. **चंद्र+केतु**–व्यापार में शत्रु पक्ष हावी रहेगा।

धनुलग्न में चंद्रमा की स्थिति द्वादश स्थान में

धनुलग्न में अष्टमेश है। फलत: पापी है व अशुभ फल देने वाला है। चंद्रमा यहां द्वादश स्थान में वृश्चिक राशि में नीच का होगा। वृश्चिक राशि में तीन अंशों



तक चंद्रमा परम नीच का होगा। चंद्रमा की यह स्थिति सरल नामक विपरीत राजयोग की सृष्टि करती है। फलतः जातक धन-प्रतिष्ठा, यश, ऐश्वर्य, वैभव व सम्पन्नता को प्राप्त करेगा। जातक की माता की छोटी उम्र में मृत्यु होगी। जातक को मानसिक अस्थिरता व अशान्ति रहेगी।

दृष्टि—व्यय भावस्थ चंद्रमा की दृष्टि छठे स्थान (वृष राशि) पर होगी। फलतः जातक को रोग व शत्रु का भय नहीं रहेगा।

निशानी—जातक का खर्च शुभ मार्ग में खर्च होगा। जातक परदेश जाकर कमायेगा।

दशा—चंद्रमा की दशा अंतर्दशा में आवक के साथ खर्च की भारी बढ़ोत्तरी होगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **चंद्र+सूर्य**—'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में चंद्र+सूर्य युति द्वादश स्थान में होने के कारण जातक का जन्म मार्गशीर्ष अमावस्या की प्रातः 8 से 10 बजे के मध्य होगा। अष्टमेश चंद्रमा, भाग्येश सूर्य के साथ व्यय भाव में जाने से 'सरल नामक' विपरीत राजयोग बना। जातक धनी मानी अभिमानी होगा। यात्रा में दुर्घटना या विष-भोजन का भय बना रहेगा।
2. **चंद्र+मंगल**—यहां बैठकर दोनों ग्रह वृश्चिक राशि में होंगे। वृश्चिक राशि में मंगल स्वगृही एवं चंद्रमा नीच का होने से 'नीचभंग राजयोग' बनेगा। व्ययेश के व्यय भाव में स्वगृही होने से सरल नामक विपरीत राजयोग बना। फलतः जातक धनवान होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह पराक्रम भाव (कुंभ राशि), षष्टम् भाव (वृष राशि) एवं सप्तम भाव (मिथुन राशि) को देखेंगे। ऐसा जातक खर्चीले स्वभाव का होगा। जातक धनी एवं महान पराक्रमी होगा।
3. **चंद्र+बुध**—जातक के दो विवाह संभव है। पत्नी से अनबन रहेगी।
4. **चंद्र+गुरु**—आपका जन्म धनुलग्न में है। 'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न के द्वादश भाव में गुरु+चंद्र की युति 'वृश्चिक राशि' में होगी। वस्तुत यह युति अष्टमेश चंद्रमा की लग्नेश+सुखेश गुरु के साथ युति है। चंद्रमा वृश्चिक राशि में नीच का होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह चतुर्थ भाव, षष्टम् भाव एवं अष्टम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक को ऋण रोग व शत्रु का भय नहीं रहेगा। जातक रोग व शत्रु का मुकाबला करने में पूर्ण समर्थ होकर दीर्घायु

को प्राप्त करेगा। जातक को उत्तम वाहन, भवन एवं वैभव की प्राप्ति होगी। जातक तीर्थयात्राएं करेगा एवं परोपकार के कार्य में रुपया खर्च करेगा।

5. **चंद्र+शुक्र**–जातक व्यसनी होगा। विलासी होगा, एवं 'दरिद्र योग' के कारण परेशान रहेगा।

6. **चंद्र+शनि**–'पराक्रमभंग योग' एवं 'धनहीन योग' एक साथ बनते हैं, सावधान रहें। मित्र दगा देंगे।

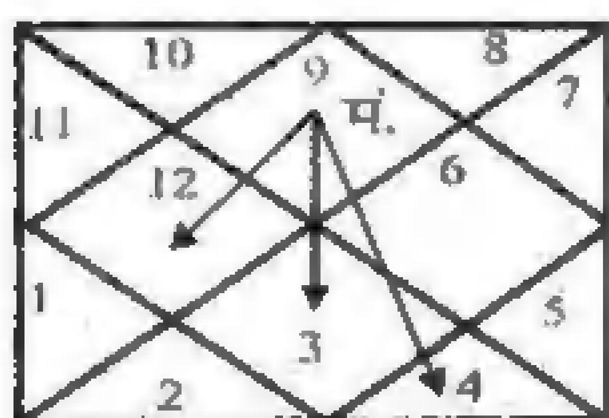
7. **चंद्र+राहु**–नेत्रपीड़ा, ऑपरेशन होगा। चोरी का भय है। दुर्घटना का भी भय है।

8. **चंद्र+केतु**–जातक को यात्रा में कष्टानुभूति होगी।

❑❑❑

धनुलग्न में मंगल की स्थिति

धनुलग्न में मंगल की स्थिति प्रथम स्थान में



धनुलग्न में मंगल पंचमेश व खर्चेश है। मंगल खर्चेश होते हुए भी शुभ योगप्रदाता है, क्योंकि यह गुरु का मित्र है। मंगल यहां प्रथम स्थान के धनु (मित्र) राशि में है। पंचमेश लग्न में होने से जातक का पूर्व पुण्य उत्तम, ऐसे जातक को उत्तम संतति, उत्तम विद्या की प्राप्ति होगी। मंगल की यह स्थिति कुण्डली को 'मांगलिक' बनाती है। ऐसे जातक का जीवनसाथी रोगी व कृशकाय होता है। जातक का विवाह विलम्ब से होता है। ऐसा जातक पूर्ण पराक्रमी एवं महत्त्वाकांक्षी होता है। अंतिम सफलता सदैव जातक के साथ रहेगी।

दृष्टि–लग्नस्थ मंगल की दृष्टि चतुर्थ भाव (मीन राशि), सप्तम भाव (मिथुन राशि) एवं अष्टम भाव (कर्क राशि) पर होगी। फलतः माता बीमार रहेगी या माता से कम निभेगी। पत्नी से विवाद एवं शत्रु परेशान करेंगे।

निशानी–ऐसा जातक उग्र स्वभाव का एवं अधैर्यशाली होगी। जातक फालतू कार्यों में खूब पैसा खर्च करेगा।

दशा–मंगल की दशा अंतर्दशा शुभ फल देगी।

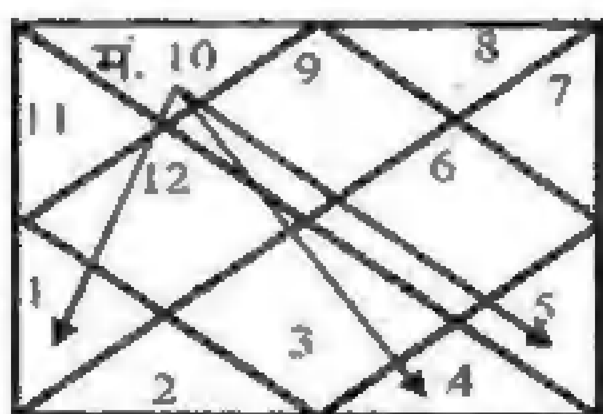
मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य**–जातक महान भाग्यशाली होगा। जातक राजा के समान पराक्रमी व यशस्वी होगा।
2. **मंगल+चंद्र**–'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में मंगल पंचमेश एवं व्ययेश होने से शुभ है। चंद्रमा यह अष्टमेश होने से पापी है। चंद्र+मंगल की यह युति वस्तुतः अष्टमेश की पंचमेश+व्ययेश के साथ युति कहलायेगी। जो मिश्रित

फलकारी है। यहां प्रथम स्थान में दोनों ग्रह धनु राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि चतुर्थ भाव (मीन राशि), सप्तम भाव (मिथुन राशि) एवं अष्टम भाव (कर्क राशि) पर होगी। इस 'लक्ष्मी योग' के कारण जातक धनी एवं दीर्घजीवी होगा। जातक को भौतिक सुख-सुविधाओं की प्राप्ति होगी पर जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा।

3. **मंगल+बुध**–जातक पत्नी एवं संतान पक्ष से सुखी व्यक्ति होगा।
4. **मंगल+गुरु**–जातक की आयु की रक्षा होगी। दुर्घटनाओं से बचाव होता रहेगा।
5. **मंगल+शुक्र**–उन्नति में बाधाएं आयेंगी पर अंतिम सफलता निश्चित है।
6. **मंगल+शनि**–जातक को परिश्रम का फल मिलेगा।
7. **मंगल+राहु**–मंगल के साथ राहु होने से अकस्मात् मृत्यु होती है।
8. **मंगल+केतु**–अचानक दुर्घटना संभव है।

धनुलग्न में मंगल की स्थिति द्वितीय स्थान में



धनुलग्न में मंगल पंचमेश व खर्चेश है। मंगल खर्चेश होते हुए भी शुभयोग प्रदाता है, क्योंकि यह गुरु का मित्र है। मंगल यहां द्वितीय स्थान में उच्च का होगा मकर राशि के 28 अंशों में मंगल परमोच्च का कहलाता है। जातक महाधनी होगा। धन-यश, कुटुम्ब, स्त्री-संतान सुख श्रेष्ठ होंगे। जातक की बाईं आंख निर्बल हो। व्ययेश धन भाव में होने से धन आयेगा व खर्च होता चला जायेगा।

दृष्टि–द्वितीयस्थ मंगल की दृष्टि पंचमभाव (मेष राशि), अष्टम भाव (कर्क राशि) एवं भाग्य भाव (सिंह राशि) पर होगी। जातक को पुत्र सुख मिलेगा। जातक के शत्रु दबेंगे। जातक दीर्घजीवी एवं भाग्यशाली होगा।

निशानी–जातक की वाणी कड़क होगी। इससे कुटम्बीजन नाराज रहेंगे। पंचमेश धनभाव में उच्च का होकर पंचम भाव को देखने से संतान उत्तम होगी। संतान के जन्म के बाद जातक का भाग्योदय होगा।

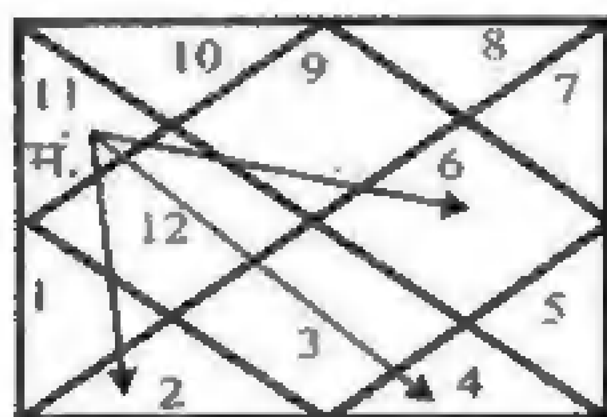
दशा–मंगल की दशा अंतर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा। शत्रुनाश होगा

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य**–जातक पूर्ण धनी एवं भाग्यशाली होगा। विद्या योग उत्तम।

2. **मंगल+चंद्र**–यहां द्वितीय स्थान में दोनों ग्रह मकर राशि में होंगे। मंगल यहां उच्च का होगा। धन स्थान में योगकारक ग्रह का उच्च होने से 'महालक्ष्मी योग' बना। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि पंचम भाव (मेष राशि), अष्टम भाव (कर्क राशि) एवं भाग्य भवन (सिंह राशि) पर होगी। फलतः जातक महाधनी तथा पुत्रवान होगा। जातक लम्बी उम्र का स्वामी एवं भाग्यशाली होगा परन्तु आर्थिक भाग्योदय प्रथम संतति के बाद होगा।
3. **मंगल+बुध**–जातक का सुसराल धनी होगा। जातक के शत्रु जातक द्वारा परास्त होंगे।
4. **मंगल+गुरु**–गुरु के कारण 'नीचभंग राजयोग' बनेगा। जातक के पास धन की कमी नहीं होगी। राजसी ठाट-बाट होगा।
5. **मंगल+शुक्र**–जातक की वाणी में हकलाहट रहेगी। जातक बोलना कुछ चाहेगा, पर बोलेगा कुछ।
6. **मंगल+शनि**–'किम्बहुना योग' बनेगा। जातक का पराक्रम व धन दौलत किसी राजा से कम नहीं होगी।
7. **मंगल+राहु**–राहु की मंगल से युति से जातक गुप्त शक्तियों का स्वामी होगी।
8. **मंगल+केतु**–जातक रहस्यमय व्यक्ति होगा।

धनुलग्न में मंगल की स्थिति तृतीय स्थान में



धनुलग्न में मंगल पंचमेश व खर्चेश है। मंगल खर्चेश होते हुए भी शुभ योगप्रदाता है, क्योंकि यह गुरु का मित्र है। मंगल यहां तृतीय स्थान में कुंभ (सम) राशि में होगा। ऐसा जातक महान पराक्रमी व साहसी होगा। ऐसा जातक यात्राओं का शौकीन होगा। पंचमेश मंगल पंचम भाव के एकादश स्थान में स्थित होने से जातक को संतान सुख उत्तम, संतान से लाभ मिलेगा। विद्या उत्तम। विद्या से लाभ प्राप्ति का योग है। भूमि-भवन व ठेकेदारी के कामों से लाभ प्राप्ति का योग है।

दृष्टि–तृतीयस्थ मंगल की दृष्टि छठे स्थान (वृष राशि), भाग्य स्थान (सिंह राशि) एवं दशम भाव (कन्या राशि) पर होगी। फलतः जातक अपने शुत्रओं का नाश करने में समर्थ होगा।

निशानी–जातक को छोटे भाई-बहनों का सुख प्राप्त नहीं होगा। जातक की पहली संतति का नाश होगा। पिता के साथ जातक के विचार नहीं मिलेंगे। मामा का सुख कमजोर।